5663
CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

# उर्दू भाषा के विकास में अवध के हिन्दुओं का योगदान

डा० नरेन्द्र बहादुर श्रीवास्तव

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

# उर्दू भाषा के विकास में अवध के हिन्दुओं का योगदान

## (प्रथम भाग)

लेखक :—
डा० नरेन्द्र बहादुर श्रीवास्तव

प्रकाशक
उन्नयन प्रकाशन
ए० ९० इन्दिरा नगर,
लखनऊ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रकाशक-
उन्नयन प्रकाशन
ए० ९० इन्दिरा नगर
लखनऊ

नवम्बर १९८४

मूल्य ३५ रुपये

Acc. No.
5663
STATE MUSEUM, LUCKNOW

मुद्रक-
दुर्गा कला मन्दिर
डालीगंज लखनऊ-७

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

# विषय सूची


| क्रमाङ्क | | पृष्ट संख्या |
|---|---|---|
| 1 | अश्की–राजा कुन्दन लाल | 19 |
| 2 | अत्र–पंडित विष्णु नरायण दर | 21 |
| 3 | आज़र–पं ज्वाला प्रसाद | 21 |
| 4 | वफ़ा–राजा नवल राय | 21 |
| 5 | रिन्द प० गंगा प्रसाद | 24 |
| 6 | खुश्तर–जगन्नाथ सहाय | 26 |
| 7 | नसीम–दया शङ्कर कौल | 32 |
| 8 | उफ़क–मुन्शी द्वारिका प्रसाद | 38 |
| 9 | शायाँ तोता राम | 41 |
| 10 | चकबस्त–बृज नरायण | 44 |
| 11 | जौहर–राजा जवाहर सिंह | 51 |
| 12 | बर्क़–मुन्शी ज्वाला प्रसाद | 54 |
| 13 | दिलगीर–मुन्शी छुन्नू लाल | 56 |
| 14 | रवाँ–चौधरी जगत मोहन लाल | 56 |
| 15 | मौजी–मौजी राम | 64 |
| 16 | मुल्तजी–मुन्शी गुर सहाय काकोरवी | 66 |
| 17 | फरहत–मुन्शी शङ्कर दयाल | 71 |
| 18 | नज़र–नौबत राय | 74 |
| 19 | मुन्शी राम प्रसाद सक्सेना लखनवी | 77 |
| 20 | ठाकुर–रामेश्वर बख्श सिंह | 78 |
| 21 | समर–अवध बिहारी लाल | 79 |
| 22 | अहकर–प्रो० राधेश्याम रस्तोगी | 80 |
| 23 | तमन्ना–मुन्शी राम सहाय | 82 |
| 24 | पं०–किशन प्रसाद कौल | 87 |
| 25 | बर्क़–मुन्शी हर कृष्ण सहाय श्रीवास्तव | 88 |
| 26 | हैरत–अयोध्या प्रसाद कश्मीरी | 90 |
| 27 | समीर–पंडित श्याम मनोहर कौल | 90 |
| 28 | ज़ार–लाला धनपत राय | 91 |

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



| | नाम | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| 29 | राहत-लाला भगवत राय | 91 |
| 30 | असर-जय नरायन बर्मा | 93 |
| 31 | जवां-मुन्नी लाल सन्दीलवी | 94 |
| 32 | ज़ार-मेंडू लाल | 97 |
| 33 | मख़्फ़ी-बृज मोहन लाल | 99 |
| 34 | साबिर-प० विशम्भर नाथ सप्रू | 100 |
| 35 | शाकिर-पं० शिव नाथ कौल | 101 |
| 36 | परवाना-राजा जसवन्त सिंह | 102 |
| 37 | मुनव्वर-विशेश्वर प्रसाद | 104 |
| 38 | खुशवक्त-मुन्शी ख़ुशब़क्त राय | 109 |
| 39 | दाना-मुन्शी रोशन लाल | 110 |
| 40 | शौक़-पं-जगमोहन लाल रैना | 110 |
| 41 | तमन्ना-मुन्शी छेदी लाल काकोरवी | 111 |
| 42 | अमन-गोपी नाथ | 112 |
| 43 | दीवाना-राय सरब सिंह | 115 |
| 44 | रामलाल | 117 |
| 45 | नाज़-चरन सरन | 179 |
| 46 | हाज़िल-उमा शङ्कर चित्रवंशी लखनवी | 120 |
| 47 | माहिर बिलग्रामी-कमला पति सहाय | 122 |
| 48 | फ़हम-मुन्शी मोहन लाल | 123 |
| 49 | फ़हीम-मास्टर प्रभू दयाल | 124 |
| 50 | मखमूर-चौधरी मुन्नू लाल | 126 |
| 51 | मदारी लाल | 127 |
| 52 | सबूर-कुवंर गोपाल सहाय | 128 |
| 53 | साहब-मुन्शी साहब राय | 128 |
| 54 | सुब्ह-मुन्शी शङ्कर प्रसाद | 128 |
| 55 | ज़ब्त-जोधरी राम स्वरूप | 129 |
| 56 | ज़िया-बाबू हरीश चन्द्र | 130 |

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh




| | नाम | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| 57 | शैदा-चौधरी बाबू राम | 131 |
| 58 | शोख-मुन्शी बनवारी लाल | 133 |
| 59 | शौक़- शिव चरन लाल | 134 |
| 60 | शगुफ़्ता-मुन्शी ख़ैराती लाल | 134 |
| 61 | शफ़क़- मुन्शी लालता प्रसाद | 135 |
| 62 | शरारा-बाबू देवी दयाल | 137 |
| 63 | शोला-प० अमर नाथ बख्शी | 137 |
| 64 | शायक- ला० फतेह चन्द | 138 |
| 65 | शायक-बाबू अवध बिहारी लाल | 139 |
| 66 | शाद-मुन्शी काली प्रसाद | 140 |
| 67 | ला० जगन्नाथ प्रसाद | 140 |
| 68 | 'सुखन' मुन्शी दयाल | 141 |
| 69 | सरशार प० रतन नाथ | 142 |
| 70 | सफ़ा-मुन्शी मुन्नू लाल | 143 |
| 71 | ज़ब्त मुन्शी मन मोहन लाल | 144 |
| 72 | ज़ख़मी-राजा रतन सिंह | 145 |
| 73 | रेहां-दीवान दया कृष्ण | 146 |
| 74 | तब्बसुम-मुन्शी सूरजबली | 148 |
| 75 | तजल्ली-लल्ले जी | 148 |
| 76 | रौनक़-लाला राम सहाय | 149 |
| 77 | रौनक-मास्टर लक्ष्मी नरायण | 149 |
| 78 | राय-राय शिव सहाय | 150 |
| 79 | रहमत-प० गंगा प्रसाद | 151 |
| 80 | रिन्द-लाला खेम नरायन | 151 |
| 81 | दरिया-रतन नाथ बख्शी | 152 |
| 82 | राजा-दिग्विजय सिंह | 152 |
| 83 | ख्याली-मुन्शी ख्याली राम | 153 |
| 84 | चमन-मुन्शी शादी लाल | 154 |

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh




| | नाम | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| 85 | चमन-मुन्शी रंग लाल | 155 |
| 86 | तमन्ना-मुन्शी मुन्नू लाल | 155 |
| 87 | तक़दीर-बाबू बिन्देश्वरी प्रसाद | 165 |
| 88 | पैंकर-मास्टर राम स्वरूप | 157 |
| 89 | तायव-खुन्नू लाल | 158 |
| 90 | बहार-मुन्शी बांके बिहारी लाल | 159 |
| 91 | बेताब बाबू सुखदेव प्रसाद | 160 |
| 92 | बख़्शीं-बख़्शी राम | 160 |
| 93 | बज़्म-प० अम्बिका प्रसाद | 161 |
| 94 | बिस्मिल-प० सुन्दर लाल | 162 |
| 95 | अनवर-पं० विशम्भर नाथ | 163 |
| 96 | अन्जुम-पं० महाबीर प्रसाद | 163 |
| 97 | इन्तज़ार मुन्शी पूरन चन्द्र | 165 |
| 98 | असद-मुन्शी गिरधारी लाल | 165 |
| 99 | अदीब-बाबू गुरसरन लाल | 165 |
| 100 | अख़गर-मुन्शी शिव राज बहादुर | 166 |
| 101 | अहसन-श्याम सुन्दर कायस्थ | 167 |
| 102 | असर-मुन्शी मूलचन्द | 168 |
| 103 | अब्र-मुन्शी शिव शंकर लाल | 168 |
| 104 | आसिम-मास्टर छोटे लाल | 169 |
| 105 | आराम-मुन्शी मक्खन लाल | 169 |
| 106 | बख़्शी-लाला सूरज बख़्श | 160 |
| 107 | साक़िब-शिव प्रधान जय गोपाल | 171 |
| 108 | अख़लास-सुखराम दास ब्रह्मचारी | 172 |
| 109 | बर्क़-श्याम सुन्दर लाल | 172 |
| 110 | ज़रीफ़-लाला बेनी प्रसाद | 173 |
| 111 | ज़हूर-मुन्शीं युगल किशोर | 173 |
| 112 | आशिक़-पं० कन्हैया लाल | 174 |

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh




| | नाम | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| 113 | आशिक-मास्टर शंकर दयाल | 175 |
| 114 | अर्श-पं० रतन नारायन दर | 175 |
| 115 | फरीग-मुन्शी नन्द किशोर | 176 |
| 116 | फ़िगार-मुन्शी बैजनाथ | 177 |
| 117 | इशरत-बाबू नानक चन्द | 178 |
| 118 | फ़लक-लाला लाल चन्द | 180 |
| 119 | क़मर-मुन्शी बाल कृष्ण | 182 |
| 120 | फ़हमी-मुन्शी गगा प्रसाद | 184 |
| 121 | श्रीमती किश्न प्यारी | 185 |
| 122 | गुहर-बाबू द्वारिका प्रसाद | 186 |
| 123 | माधव-मुन्शी माधव राम जोगी | 186 |
| 124 | मुह्बि-मुन्शी बृज भूषण | 187 |
| 125 | क़ैसर-राय श्री कृष्ण चन्द | 188 |
| 126 | गुलज़ार-लाला जगन्नाथ | 189 |
| 127 | गुल्शन-राजा जिया लाल | 189 |
| 128 | किशोर-मुन्शी नन्द किशोर | 190 |
| 129 | कैफ़ी-महाबीर प्रसाद | 191 |
| 130 | मदहोश-मुन्शी कुंवर जी | 192 |
| 131 | मर्सरत-लाला गौरी शंकर | 192 |
| 132 | फिदा-पं० बृज किश्न गंजूर | 193 |
| 133 | तालिब-मुन्शी ठाकुर प्रसाद | 194 |
| 134 | अम्बर मुन्शी अम्बर प्रसाद | 194 |
| 135 | ग़रीब-मुन्शी ताज बहादुर | 196 |
| 136 | आमिल-मुन्शी राम प्रसाद | 196 |
| 137 | उबूर कुंवर अम्बे सहाय | 197 |
| 138 | इनायत-कुंवर इनायत सिंह | 198 |
| 139 | आसी-मुन्शी तोता राम | 199 |
| 140 | आसी-मुन्शी महादेव प्रसाद | 199 |

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh




| | नाम | पृष्ठ सख्या |
|---|---|---|
| 141 | तालिव-मुन्शी बिनायक प्रसाद | 200 |
| 142 | तालिब-इक़बाल बहादुर | 201 |
| 143 | साहव मुन्शी साहव राय | 202 |
| 144 | तालिब-प्यारे लाल उन्नाकी | 203 |
| 145 | त्रिभवन-त्रिभुवन बावड़ी | |
| 146 | नूर-कृष्ण बिहारी | 206 |
| 147 | बेनवा-गेंदन लाल | 207 |
| 148 | खयाल-प्रेमानारायण | 212 |
| 149 | मुल्ला-पं० आन्नद नारायण | 213 |
| 150 | मुन्कसिर-राम बली चौधरी | 215 |

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

# अपनी बात

हिन्दुओं ने उर्दू गद्य और पद्य दोनों के विकास में अपना योगदान किया है। हिन्दू राजाओं और रईसों ने उर्दू के शायरों को अपना संरक्षण प्रदान किया है। उर्दू के सुप्रसिद्ध कवि मीर तक़ी 'मीर' राजा युगुल किशोर के यहाँ बहुत लम्बे समय तक रहे। इसी तरह अलवर राजा के दरबार में 'मोमिन' आश्रय पाते रहे।

हिन्दुओं में कायस्थ, खत्री, वैश्य, ब्राह्मण आदि सभी वर्गों ने फारसी और उर्दू भाषाओं में इतनी दक्षता प्राप्त कर ली थी कि हिन्दुओं की लिखी हुई पुस्तकें स्कूलों, कालेजों एवं विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों में निर्धारित थीं।

उर्दू साहित्य उस समय तक एकांगी रहा, जब तक उसे हिन्दुओं का सहयोग नहीं मिला। उस समय उर्दू पर इस्लामी विचारधारा का एक मात्र प्रभाव था, परन्तु हिन्दुओं ने रामायण और गीता का उर्दू गद्य और पद्य में अनुवाद किया जो बहुत ही लोकप्रिय हुए। मुन्शी जगन्नाथ प्रसाद खुश्तर की रामायण, मुल्तजी की कृष्ण-सुदामा आदि ऐसी ही पुस्तकें हैं जिन्होंने उर्दू साहित्य में हिन्दू दर्शन और विचार-धारा की सरिता प्रवाहित की है। पं० दया शंकर 'नसीम' की मसनवी गुलज़ारे नसीम भी प्रेमाख्यान के क्षेत्र में एक अद्वितीय पुस्तक है।

हिन्दुओं की उर्दू सेवा का वर्णन स्वर्गीय मौलवी अब्दुल हक़ ने इन शब्दों में स्वीकार है :—"प्रारम्भिक काल में उर्दू अपनी उन्नति और प्रचार के लिये अधिकतर हिन्दुओं के वृहद धार्मिक गद्य और पद्य पुस्तकों की मुखापेक्षी रहीं जीं हिन्दुओं की उच्चकोटि की कृतियाँ थीं। ये अनुवाद धार्मिक विश्वास और श्रद्धा पर आधारित थे, इसलिये वे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



लोकप्रिय हुईं और ऐसा प्रतीत होता है कि यही उर्दू की लोकप्रियता का कारण भी बना।

हिन्दू शायरों में अनेक ऐसे उदाहरण मिलेंगे जो अपने समय के उस्ताद थे और उनके मुस्लिम शिष्यों का एक व्यापक दायरा था तथा उन हिन्दू उस्तादों के मुस्लिम शागिर्दों ने शायरी के क्षेत्र में प्रसिद्धि प्राप्त की। हिन्दू उस्तादों में मुन्शी सरबसुख 'दीवाना', मुन्शी मेंडूलाल 'ज़ार' आदि प्रसिद्ध हैं।

अवध में उर्दू और फारसी का खूब प्रचलन था। हिन्दू मुन्शी आमतौर पर उर्दू-फारसी के अध्यापक के रूप में इस बहुतायत के साथ उपलब्ध थे कि गांवों, कस्बों और शहरों में मारे-मारे फिरते थे। इसका वर्णन उर्दू के प्रसिद्ध उपन्यासकार स्वर्गीय मौलाना अब्दुल हलीम 'शरर' ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'गुज़श्ता लखनऊ' में भी किया है।

'उर्दू भाषा के विकास में अवध के हिन्दुओं का योगदान' नामक पुस्तक लिखने की प्रेरणा मुझे उस समय प्राप्त हुई जब मैं 'नवाब कालीन अवध के हिन्दुओं का फारसी साहित्य में योगदान' विषय पर पी-एच०डी० के लिये अपना शोध प्रबन्ध तैयार कर रहा था। उस समय शोध से सम्बन्धित बहुत से अनुभव हुए और जैसे-जैसे इसमें पैठ गहरी होती गई वैसे ही वैसे इसमें अधिक रस आने लगा। उस समय साहित्य में कार्य करने की अनेक जिज्ञासायें उत्पन्न हुईं।

मेरे शोध कार्य का प्रथम आलम्बन एक पाश्चात्य विद्वान मिस्टर स्प्रेंगर का कैटलाग था। यह कैटलाग अर्थात् पुस्तकों का सूची रजिस्टर उन्होंने अवध के नवाबों के शाही पुस्तकालय से सम्बन्धित पुस्तकों का तैयार किया था जिसमें पुस्तक के नाम के साथ लेखक का नाम, विषय और सन् इत्यादि दिये गये थे। इस कैटलाग ने मुझे बड़ा सहारा दिया। मेरा कार्य आगे बढ़ा। मैं सोचने लगा कि काश यह कैटलाग न लिखा गया होता तो मुझे यह सब जानकारियाँ कैसे प्राप्त हुई होती ? मेरे हृदय

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


में मिस्टर स्प्रेंगर के प्रति बड़ी श्रद्धा उत्पन्न हुई। जब भी उनकी याद आती है, मेरा मस्तक श्रद्धा से झुक जाता है।

उस समय मैंने यह महसूस किया कि यदि कोई तुलसीदास, जय शंकर प्रसाद, शेक्सपियर या ग़ालिब नहीं बन सकता है तो भी बहुत से ऐसे छोटे मोटे कार्य हैं जो हम कर सकते हैं। ये कार्य भी हमारी सांस्कृतिक धरोहर को आगे बढ़ाने में सहायक सिद्ध होंगे। प्रस्तुत पुस्तक इसी संकल्प का प्रतिफलन है।

मुझे यह पुस्तक हिन्दी संसार को सौंपते हुए निस्संदेह अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। किन्तु यह देखकर मुझे दुःख भी होता है कि आज हिन्दी के शोध छात्र अपने को केवल हिन्दी तक ही सीमित रखना चाहते हैं। परिश्रमी शोधार्थी को यूरोप के प्राच्य विद्या विशारदों मैक्समूलर श्रेदरे, वेनफ़ी आदि से प्रेरणा लेनी चाहिये जो अपने साहित्य तथा राष्ट्र में रुचि लेते हुए भी दूसरों की भाषा और संस्कृति का अध्ययन कितनी सूक्ष्मता से करते हैं और अपने उसी ज्ञान के आधार पर अपनी भाषा का समृद्ध बनाते हैं। राष्ट्रभाषा हिन्दी को भी एक अन्तर्राष्ट्रीय भाषा की कोटि में लाने के लिए हमें ऐसा ही प्रयास करना होगा।

काल के प्रवाह से उर्दू भाषा का प्रचलन कम हो गया है, इसलिए उसके लेखकों और शायरों को लोग भूलते जा रहे हैं और आने वाली पीढ़ी उनसे अपरिचित होती जा रही है जो किसी भी भाषा के विकास के लिए श्रेयस्कर नहीं है। विश्व की सभी भाषायें अपने दिवंगत एवं जीवंत साहित्यकारों के विषय में पूरा-पूरा ब्योरा रखती हैं और उनकी रचनाओं की रक्षा करती हैं। उनकी रचनायें हमारे राष्ट्र की निधियाँ हैं जिन पर हमें गर्व है।

सम्पूर्ण भारत में यत्र-तत्र उर्दू और फारसी के हिन्दू साहित्यकारों की रचनायें बिखरी पड़ी हैं। जो तेज़ी के साथ विलुप्त होती जा रही हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



हिन्दी के लेखकों का कर्तव्य है कि वे अपने पूर्वजों की रचनाओं को सुरक्षित रखने का प्रयास करें। हमें हर प्रकार के ज्ञान-विज्ञान से हिन्दी भाषा को सम्पन्न बनाना है जैसा कि अंग्रेजी में है। इसलिए मैंने अपने इस कार्य को अवध तक ही सीमित रखा है जिससे कार्य व्यापक ढंग से और सुचारु रूप से हो सके। यदि यह प्रयत्न सफल हुआ तो दूसरे सांस्कृतिक केन्द्रों के सम्बन्ध में भी इस प्रकार के कार्य करने का प्रयत्न करूँगा।

मुझे इस पुस्तक के लिखने में अनेक लेखकों की पुस्तकों, तज़किरों, पाँडुलिपियों एवं सन्दर्भ ग्रन्थों तथा मासिक पत्रों से सहायता मिली है। मैं हृदय से उनका कृतज्ञ हूँ।

इस पुस्तक में बहुत सी कमियों का मैं स्वयं अनुमान कर रहा हूँ, परन्तु इस डर से कि कहीं यह अवसर भी हाथ से न निकल जाय, जितना भी हो सका है, पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत कर रहा हूँ और उनसे नम्र निवेदन करता हूँ कि अपना-अपना सुझाव तथा पुस्तक विषयक अन्य जानकारियाँ भी हमें दें, हम उनका सहर्ष स्वागत करेंगे।

ए—९०, इन्दिरा नगर
लखनऊ

**नरेन्द्र बहादुर श्रीवास्तव**

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

# अवध सल्तनत की ऐतिहासिक एवं साँस्कृतिक पृष्ठभूमि

अवध शब्द की उत्पत्ति अयोध्या शब्द से हुई है, जिसका अर्थ था न जीता जा सकने वाला। डा० विल्सन का कथन है कि यह युद्ध धातु से बना है जिसका अर्थ है लड़ाई। यह नगर शूरवीर क्षत्रियों के रहने का स्थान था। इसलिए इस इसे नाम से सम्बोधित किया जाता है। अयोध्या हिन्दुओं का एक अत्यन्त पवित्र तीर्थ-स्थल है क्योंकि यह मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी का जन्म स्थान है। संस्कृत रामायण के रचयिता वाल्मीकि ने लिखा है कि महाराज मनु ने सबसे पहले यह शहर बसाया था। महाकवि बाल्मीकि के अनुसार इसकी चौड़ाई १२ योजन बताई गयी है जबकि एक योजन क़रीब चार कोस का होता है। उनका कथन है कि इस नगर में राजपथ बने हुए हैं और उन पर नित्य पानी छिड़का जाता है।

अबुल फ़ज़ल ने भी 'आइने अकबरी' में इसका एक अत्यन्त वृहद एवं वैभवपूर्ण नगर के रूप में उल्लेख किया है। बहरहाल इतिहासकार इस बिन्दु पर एकमत हैं कि बाल्मीकि रामायण की रचना के पूर्व यह नगर प्रतापी राजाओं की राजधानी के रूप में चित्रित होता रहा। बाल्मीकि ने ही पहले-पहल 'अयोध्या' को महामण्डित तीर्थ के रूप में प्रस्तुत किया। काल-प्रवाह में यह नगर नष्ट हो गया। पुराविदों का कहना है कि वर्तमान अयोध्या वहां नहीं है जहां अतीत की अयोध्या नगरी थी। महाराजा विक्रमादित्य ने इसे पुनः बसाया और मन्दिरों की स्थापना की।

यहाँ अवध से हमारा तात्पर्य केवल राम की अयोध्या नहीं

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



बल्कि सूबे के तौर पर है। लखनऊ के इर्द-गिर्द उन बारह जिलों से है जिनके नाम हैं :— लखनऊ, फंजाबाद, गोंडा, बाराबंकी, सीतापुर, लखीमपुर, हरदोई, उन्नाव, प्रतापगढ़, बहराइच, सुल्तानपुर और रायबरेली। मेजर बर्ड ने इसकी सीमा के बारे में लिखा है कि सन् १८५५ में अवध का क्षेत्रफल २४ हजार वर्ग मील था और इसकी आबादी ५ लाख थी। अवध की भूमि इतनी उर्वरा थी कि इसे 'हिन्दुस्तान का चमन' के नाम से सम्बोधित किया जाता था। प्रसिद्ध इसाई पादरी मिस्टर रीजनल हेविर ने अवध की भूमि को संसार की उर्वरोत्तम भूमि के रूप में माना है।

अवध में नवाबी का प्रादुर्भाव उस समय हुआ जब दिल्ली की सल्तनत बिलकुल कमजोर हो चुकी थी और मुगल सम्राट शक्तिहीन और असहाय होकर अपने दुर्दिन गुजार रहे थे। दिल्ली सल्तनत के हाथ से कई सूबे निकल चुके थे। उसी जमाने में मुहम्मद शाह सैयद मुहम्मद अमीन उर्फ सआदत खां को अवध का सूबेदार नियुक्त किया गया। अवध की यह नवाबी सल्तनत एक सौ छत्तीस साल तीन महीने और चौबीस दिन रही। सआदत खां इस सल्तनत का पहला नवाब था और वाजिद अली शाह अन्तिम। प्रारम्भ के छः शासक नवाब कहे जाते थे, परन्तु अन्तिम पांच शासक बादशाह कहलाए। सआदत खां ने आराजी और लगान का नया बन्दोबस्त किया। उसे इस सेवा के बदले 'बुरहानुलमुल्क' की पदवी दी गयी। सआदत खां का व्यक्तित्व बहुत ही आकर्षक था। उसके बारे में लिखा है कि वह इतना प्रसन्नचित्त रहता था कि साठ वर्ष की आयु में भी उसके चेहरे पर झुर्रियां नहीं थीं। उसने हिन्दुओं को ऊंचे पद दिए। आनन्द राम और हरिचरण दास उसके समय के प्रसिद्ध इतिहासकार हैं। नवाब बुरहानुलमुल्क सिपाही आदमी था, शायर न था। फिर भी कभी-कभी फारसी में शेर कहता था। उसने अनेक शायरों को आश्रय प्रदान किया।

नवाब अबुलमन्सूर सफदरजंग के जीवन का अधिकतर भाग

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



युद्ध क्षेत्र में बीता, परन्तु वह विद्या और साहित्य का भी प्रेमी था। शायरों और साहित्यकारों की सहायता करता था। मीर गुलाम नबी 'रसलीन', जिन्होंने हिन्दी में नायिका भेद लिखा है, इन्हीं के दरबार से सम्बन्धित थे।

शुजाउद्दौला अवध के तीसरे नवाब थे। कई भाषाओं पर उनका अधिकार था। साधारण हिन्दी और अंग्रेज़ी भी जानते थे। शुजाउद्दौला एक सफल शासक थे। उनके शासन काल में अमन व खुशहाली रही। उनका समय भी अधिकतर युद्ध क्षेत्र में व्यतीत हुआ फिर भी वे साहित्यकारों की संरक्षकता की ओर से उदासीन नहीं रहे। युगुल किशोर 'सरवत', राय सज्जन मल 'मानी', भूरे सिंह 'मुशरिव', हरचरण दास तथा अन्य अनेक मुस्लिम शायरों की वह सहायता करते रहे।

आसफुद्दौला ने पढ़ाई-लिखाई के प्रति कोई रुचि नहीं दिखाई परन्तु उन्होंने तीन बातें अच्छी तरह सीखी थीं। दान करना, तीरन्दाज़ी और बन्दूक चलाना। अनेक राजनीतिक गुत्थियों में रहने के बावजूद आसफुद्दौला ने अनेक प्रकार के निर्माण कार्य कराये। इन कार्यों के पीछे उनका उद्देश्य निर्धनों की सहायता करना था। उनके समय में अवध का दरबार साहित्यकारों और कलाविदों से भरा रहता था। नवाब खुद भी शायर थे। उर्दू तथा फारसी, दोनों में शेर कहते थे। उनके दरबार से अनेक हिन्दू शायर और विद्वान जुड़े थे। यथा: राय टीकाराम, 'तसल्ली', राय खेमनारायण 'रिन्द', राय कृष्णकृष्ण इत्यादि। आसफुद्दौला ने अपने शासन काल में बहुत से हिन्दू शायरों और कलाकारों को आश्रय दिया। नवाब आसफुद्दौला की उदारता के कारण लखनऊ विद्या, संस्कृति और कला का ऐसा केन्द्र बन गया जिसकी तुलना नहीं की जा सकती। इनकी दानवीरता को देखते हुए आम जनता में इनके बारे में कहावत मशहूर थी कि 'जिसको न दे मौला उसको भी दे आसफुद्दौला।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



अवध के पाँचवें नवाब वज़ीर अली खां हुए। नवाब स्वतन्त्र प्रकृति के व्यक्ति थे। वह अंग्रेज रेजीडेन्ट की बिल्कुल परवाह नहीं करते थे, इसलिए अंग्रेजों ने उन्हें अपदस्थ कर दिया। इनका शासन केवल चार महीने और कुछ दिन रहा। इन्होंने मि० चेरी और कई अंग्रेज अफ़सरों को कत्ल कर दिया जिसकी वजह से कलकत्ता जेल में रहे। वज़ीर अली शायर भी थे और 'वज़ीरी' उनका उपनाम था।

नबाब वजीर अली खां के अपदस्थ होने पर नवाब सआदत अली खां को अवध सल्तनत की गद्दी पर बैठाया गया। इनमें शासन प्रबन्ध की अच्छी क्षमता थी। सत्ता हाथ में लेते ही इन्होंने उत्तरदायित्व पूर्ण पदों पर योग्य अधिकारियों की नियुक्तियाँ की। नवाब ने बालकृष्ण राय व तुलसी राम आदि कई हिन्दुओं को जिम्मेदार पदों पर नियुक्त किया।

नवाब सआदत अली खां ने अपने शासनकाल में अनेक सुधार किए, जिसके कारण अवध में खुशहाली और आबादी बढ़ गई थी। यह साहित्यकारों और कलाकारों का बहुत आदर करते थे और उनकी आर्थिक सहायता करते थे। इनके समय में अनेक प्रसिद्ध हिन्दू जिसमें प्रकाश, गुरुबख्श, 'अदीब', लाला बेनी प्रसाद 'ज़रीफ़' आदि उनके दरबार से सम्बन्धित रहे।

इसके बाद अवध सल्तनत की बागडोर नवाब गाज़ीउद्दीन हैदर के हाथ में आई। वह बादशाह बहुत ही सहृदय, न्यायप्रिय और उदार था। इन सब गुणों के बावजूद भी वह शासन व कर्त्तव्य के मामले में कठोर था। उसने अनेक प्रकार के प्रशासनिक सुधार प्रजा हित में किये।

कुशल प्रबन्धक होते हुए भी बादशाह गाज़ीउद्दीन हैदर नियमित रूप से विद्वानों की तरह अध्ययन किया करते थे। वह सिर्फ किताबी कीड़ा न थे, अपितु एक जागरूक विद्वान भी थे। उनके शासन-काल में बहुत सा साहित्य लिखा और प्रकाशित किया गया। हफ्त कुलजम जैसा प्रसिद्ध शब्दकोश जो सात भागों में है, इन्हीं की देन है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



गाजीउद्दीन हैदर के बाद नसीरउद्दीन हैदर अवध के बादशाह बने। स्वभावतः वह विलास-प्रिय थे, परन्तु प्रशासनिक व्यवस्था में बड़े कुशल और जागरूक थे। वह बहुत शाहखर्च थे। गरीबों और मोहताजों के लिए सदैव उनका हाथ खुला रहता था। उन्हें गरीबों से बड़ा लगाव था। उन्हें नए-नए बाग लगवाने का बड़ा शौक था। उन्हीं के समय लखनऊ बागों का शहर बना। उन्होंने जन कल्याण के लिए दवाखानें, मोहताज-खाने खुलवाए। अंग्रेजी स्कूल कायम किया। लखनऊ में पहला प्रेस उन्हीं के समय में स्थापित हुआ। बहुत सी अंग्रेजी किताबों के अनुवाद भी हुए। वह भी कभी-कभी उर्दू और फारसी में शेर कहते थे। मुन्शी हर ध्यान सिंह से शाहनामा फिरदौसी का संक्षिप्त रूपान्तर गद्य व पद्य में करा कर प्रकाशित कराया।

नसीरुद्दीन हैदर के बाद मुहम्मद अली शाह को केवल पांच वर्ष की अल्प अवधि का अवसर मिला। वह वृद्ध थे परन्तु उन्होंने कुशलता पूर्वक शासन किया। इस अल्प अवधि में भी अवध की जनता खुशहाल रही। साहित्य और कला की भी इनके समय में उन्नति हुई। इन्हीं के समय में साइंस वगैरह की १८ किताबों का उर्दू में अनुवाद हुआ और अवध का इतिहास भी लिखा गया। अपने समय में राजा रतनसिंह 'जखमी' को उन्नति देकर अमीरुलइंशा के पद पर नियुक्त किया।

नवाब अमजद अली शाह अवध के दसवें शासक थे। सत्ता हाथ में आते ही बहुत से ऊटपटांग परिवर्तन किए। नवाब यद्यपि रोज़ा नमाज़ के पावन्द थे, किन्तु ऐय्याश थे, और जातीय पक्षपात भी बहुत था। वह केवल शीओं को ही लाभ पहुचाते थे। इन सब कमियों के बावजूद उन्होंने समाज कल्याण के अनेक कार्य किये मदरसा शाही की बुनियाद डाली, वेधशाला का निर्माण कराया और तीन लाख रुपये खर्च करके गोमती पर एक पुल बनवाया इत्यादि।

अमजद अली शाह ने अपने समय में साहित्यकारों को भी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



प्रोत्साहित किया। राजा कुन्दन लाल 'अश्क' जैसे आलिम फाज़िल व्यक्ति इनके दरबार में एक सम्मानित पद पर थे। अश्की ने लगभग २० किताबें लिखी हैं। अमजद अली शाह के ज़माने मे साहित्य सृजन का काफी कार्य हुआ।

वाजिद अली शाह अवध के अन्तिम बादशाह थे। अंग्रेज़ साम्राज्यवादियों की आँखें अवध को हड़पने के लिए लग चुकी थीं। इसीलिए अंग्रेज़ों ने इस नेक बादशाह को प्रोपेगंडा करके बुरे तरह बदनाम किया है।

बादशाह होते ही इन्होंने बहुत कुशलतापूर्वक शासन का कार्य देखना प्रारम्भ किया, स्वयं फौज को नियमित रूप से ट्रेनिंग देते थे। लोगों की फरियादें सुनते थे सभी धर्मों के त्योहार बहुत उत्साह पूर्वक मनाते थे। बादशाह न तो ऐयाश थे, न शराबी। किसी अन्य स्त्री की ओर उन्होंने कभी आँखें नहीं उठाईं और न कभी शराब की एक बूंद चखा।

वाजिद अली शाह बड़े विद्याप्रेमी थे। शायरों और विद्वानों के संरक्षक थे। उनके समय अनेक विद्याओं व कलाओं की उन्नति हुई। वह अरबी और फारसी के विद्वान थे। स्वयं वाजिद अली शाह लगभग चार दर्जन पुस्तकों की लेखक थे। नाट्यकला में उनकी विशेष रुचि थी। इनके दरबार में उच्च पदों पर हिंदू छाए हुए थे, जिनमें राजा टिकैत राय, राजा मेवाराम, मुंशी ज्वाला प्रसाद, राजा रतन सिंह 'जख्मी', खाली राम 'खयामी', मुन्शी साहब राय 'खामोश' प्रमुख थे।

यह बात स्पष्ट रूप से स्वीकार करने योग्य है कि अवध के लगभग सभी नवाब और बादशाह साहित्य संगीत और कला के प्रेमी थे। साहित्यकारों और कलाकारों को बिना किसी धार्मिक और जातीय भेद-भाव के आश्रय प्रदान करते थे। ऐसे ही वातावरण में हिन्दुओं को भी अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर प्राप्त हुआ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

# १–राजा कुन्दन लाल 'अश्की'

राजा कुन्दन लाल अश्की के पूर्वज उज्जैन के रहने वाले थे। इनके पिता का नाम मुन्नू लाल फलसफी था। अश्की का जन्म १७९७ ई० में हुआ था। यह अत्यन्त कुशाग्र बुद्धि के थे। इनके पिता ने इनकी शिक्षा का बड़ा ही उत्तम प्रबन्ध किया था। विभिन्न विषयों के पारंगत विद्वान इनके शिक्षक थे। अनेक विषयों में निपुणता प्राप्त करने के बाद इन्होंने सांख्य और दर्शन की शिक्षा उस समय के प्रसिद्ध विद्वान ओझाइन्द्र से प्राप्त की। अरबी, फारसी, तुर्की और संस्कृत तो अध्यापकों से पढ़ी और अंग्रेजी, यूनानी, इब्रानी भाषायें स्वयं सीख लीं। अश्की लगभग सत्तर कलाओं से परिचित थे। इसके अतिरिक्त उन्हें भ्रमण से भी प्रेम था।

ऐसी ही शिक्षा और संस्कारों का फल था कि अश्की अत्यन्त सुसंस्कृत व्यक्ति बने। उनके सुन्दर व्यवहार से छोटे-बड़े सभी लोग प्रसन्न रहते थे। यह सदैव दूसरों की भावनाओं का ध्यान रखते थे। निःसन्देह अश्की कट्टर हिन्दू थे, परन्तु दूसरे धर्मों का भी बड़ा आदर करते थे। अश्की उन्नीस वर्ष की आयु तक विद्यार्जन में व्यस्त रहे। बीसवें वर्ष में शाहजहाँपुर के कलेक्टर मि० राबर्ट लूथर ने परगना मेहरबाद का पेशकार नियुक्त कर दिया। कुछ दिनों के बाद उनका लड़का मर गया जिसकी आयु सिर्फ चार वर्ष की थी। इस आघात से प्रभावित होकर उन्होंने नौकरी छोड़ दी और तीन वर्ष तक बेकार रहे। तीन वर्ष के पश्चात पूर्व वर्णित कलेक्टर ने पुनः उन्हें बरेली की कलेक्टरी में बहाल कर दिया और एक ही महीने बाद नायब सरिश्तेदार के पद पर उन्नति दे दी। अवध सल्तनत के वजीर मुतिजमुद्दौला नाजिम-उल-मुल्क मेहदी अली खां सिपेहदार उन्हें दो मास के लिए लखनऊ लेकर आये और बादशाह की सेना में पहुँचा दिया। बादशाह ने उनको बकाया ख्वानी पर नियुक्त किया और ५ वर्ष के बाद बादशाह ने उनको मीर मुन्शी का पद और राजा की पदवी प्रदान कर दी।

१२५६ हिजरी (१८४० ई०) में उनकी धर्मपत्नी का स्वर्गवास हो गया। इसके बाद अश्की ने सदैव के लिए नौकरी से सम्बन्ध विच्छेद कर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



लिया। उन्हें जीविकोपार्जन की चिन्ताओं से कभी मुक्ति नहीं मिली किन्तु वह कभी पठन-पाठन से विमुख नहीं हुए। लेखन का कार्य भी अवाधगति से चलता रहा। विभिन्न विषयों पर उन्होंने बहुत सी पुस्तके लिखी हैं। उर्दू और फारसी में लगभग १९ पुस्तकें लिखी हैं। तीन पुस्तकें संस्कृत में भी लिखी हैं, जिनके नाम हैं—आचार्य कल्पलता, कुन्दीपिका, पुराणों का संकलन। ये सभी पुस्तकें हिन्दू धर्म से सम्बन्धित हैं।

उपरोक्त सभी पुस्तकें उन्होंने ४७ वर्ष की आयु तक लिखी थीं। उनकी मृत्यु का सन् काफी प्रयत्न के बाद भी मालूम न हो सका।

अश्की की रुचि गद्य की ओर अत्यधिक थी। उनके निम्न-लिखित पद्यों के अतिरिक्त अन्य नहीं प्राप्त होते। अश्की मिर्जा हातिम अली मेहर के मित्रों में थे और वही उनके शायरी के उस्ताद भी थे।

## कलाम

हमारे हक़ में वह क्या कुछ कहा नहीं करते।
हम अपने कानों से क्या कुछ सुना नहीं करते।
नहीं है यार से सर गोशी इतनी बहरे ज़ुल्फ़
परी रुखों के बहुत सिर चढ़ा नहीं करते।
किसी बहाने से कूए सनम में जाकर हम
जो बैठते हैं वहां फिर उठा नहीं करते।
किया जो चाक गरेबां अजब किया नासेह।
कि जोशे इश्क में दीवाने क्या नहीं करते।
नहीं है वस्ल मुकद्दर में क्या करें, वर्ना।
हम उनके मिलने की तदवीर क्या नहीं करते।
तुम अहले दिल हो बताओ तो ए मियां अश्की।
यह चाल देख के कब दिल पिसा नहीं करते।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

# २–पंडित विष्णु नरायन दर 'अब्र'

पंडित विष्णु नरायन दर लखनऊ के प्रसिद्ध बैरिस्टर थे । इनका अंग्रेजी भाषा पर अधिकार था । प्रायः राजनैतिक समस्याओं पर इनसे विचार विमर्श किया जाता था । अंग्रेजी भाषा में गम्भीर लेख लिखते थे । नगर में इनका काफी मान व सम्मान था । इन्होंने एक मसनवी 'गुल्जारे कश्मीर' लिखी है । यह हकीमउद्दीन लखनवी के शार्गिर्द थे ।

इनका जन्म बाराबंकी जिले में १८६४ ई० में हुआ था और १९१६ ई० में लखनऊ में देहान्त हुआ । इनके पिता का नाम कृष्ण नरायन दर था ।

गुन्चों को गो जुबां भी मिली और गुलों को गोश ।
राजे़ रियाजे़ दहर मगर कुछ खुला नहीं ।।
गुल से यही इशारए शबनम है बाग में ।
रोने का है मुकाम यह हसने की जा नहीं ।।
जख्मे बदन है उतनी ही जितनी कि चाक-चाक ।
कुछ कम कबाये गुल से हमारी कबा नहीं ।
हर एक की जुबां पे यह जारी है रात दिन
सरकश वह कौन है जो जमी पर गिरा नहीं ।।

# ३-पं० ज्वाला प्रसाद 'आज़र'

आज़र के पिता का नाम पं० देवी प्रसाद पाग्मू था । इनके पूर्वज कश्मीर के रहने वाले थे परन्तु लखनऊ में बस गये थे। प्रारम्भ से ही आज़र अपने बड़े भाई गंगाद 'रिन्द' के पास बरेली और आगरा में रहा करते थे । जब पुलिस विभाग में नौकर हुए तो मुजफ्फर नगर, शाहदरा और मथुरा में रहे और अवकाश ग्रहण करने के बाद मथुरा में शेष जीवन बिताया । शेर व शायरी में अपने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



भाई 'रिन्द' से विचार विमर्श करते थे। २१ दिसम्बर १८६२ में पैंसठ साल की आयु में इनका देहान्त हुआ।

### कलाम

शौक में खाये हैं चेहरये गुलगून के गुल।
क्यों न रंगीं हो मेरे गुलशने मज़मून के गुल॥

न हमें रंज का कुछ रंज न राहत की खुशी।
उसका जी चाहे सो वह यह गर्दिशे अफलाक करे॥
दिन कहीं रात कहीं सुबह कहीं शाम कहीं।
ऐसे हरजाई से उल्फत कोई क्या खाक करे॥

### रूबाई

दुनिया में ग़मे अबूदियत से छूटे।
उक़्बा में हिसाबे मासियत से छूटे॥
हर चहार तरफ से मिट गये वहमोखयाल।
हम इश्क में फिक्रे शश जहत से छूटे॥
तदबीर के जोकि छानते रस्ते हैं।
तकदीर के शाकिरों पै हँसते हैं॥
हँसते हैं जो आज़रों उन्हें हँसने दें।
हँसते-हंसते ही यहां घर बसते हैं॥

## ४-राजा नवल राय 'वफ़ा'

राजा नवल राय वफा सक्सेना कायस्थ थे। इनके पूर्वज इटावा के कानूनगो थे। नवल राय का प्रारम्भिक समय राजा रतन चन्द्र के पास बीता, जो जाति के बनिये थे सय्यद अब्दुल्ला खाँ सूबेदार, इलाहाबाद के यहां दीवान थे। अपनी व्यक्तिगत योग्यता और क्षमता के कारण नवल राय भी राजा हो गये। अहमद शाह के शासन काल में (१७४८—१७५४ ई०) जब नवाब अब्दुल्ला मन्सूर खाँ सफदर यार जंग को अवध और इलाहाबाद की सूबेदारी मिली, राजा नवल राय दोनों प्रान्तों में उनके नायब नियुक्त हुए। यह बड़े

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



कूटनीतिज्ञ, प्रबन्धक और राजनीतिज्ञ थे। कलम और तलवार दोनों के धनी थे, अर्थात शायर भी थे और सैनिक भी।

१८६३ ई० में पठानों से होने वाले एक युद्ध में यह मारे गये थे। हमारे पास कोई ऐसा साधन नहीं है कि इनकी जन्म तिथि या यह किसके शागिर्द थे इस पर प्रकाश डाला जा सके।

## कलाम

रोमांटिक रंग

पहले तो दिल सहज में गिरफ्तार हो गया।
अब छूटना उस जुल्फ से दुशवार हो गया॥
देना तो दिल न आपको मकसूद था बले।
जब मिल गई यह आँख तो नाचार हो गया॥
समझे सफाये शुस्त तेरी चश्म का वही।
जिसके जिगर से तीरे नजर पार हो गया।

ऐसे मिज़ाज भी देखे हैं ए वफा॥
क्या बात थी जो रात वह बेज़ार हो गया।

## दर्द व तड़प

जूं अश्क न फिर उठा ज़मी से
यारब मैं गिरा हूँ किस नजर से॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



इस ग़म में गर रहा सलामत
पत्थर से भी सख्त है यह सीना ॥
शोलाज़न है हमेशा दाग़ अपना,
बुझ नहीं जाता है चिराग़ अपना ॥

## तसब्वुफ

शेख कुछ फर्क है तेरे ही नजर आने में,
वर्ना है एक वही काबा ओ बुतखाने में ॥
अपने ही चश्म के तईं तावे नज़र नहीं,
यर्ना वह आफताब कहाँ जलवागर नहीं ॥
है जलवागर वह हममें पर आलूदगी से दूर,
जिस तरह-अक्स आब में हो माहताब का ॥
याँ तक अज़ खेश हे रफता हो महताब कि मुदाम,
आप करता हुँ मैं सुराग अपना ॥

# ५-पंडित गंगाप्रसाद कश्मीरी 'रिन्द'

पंडित गंगा प्रसाद, कश्मीरी के पिता का नाम पंडित देवी प्रसाद पारमू था। 'रिन्द' तहसीलदार और पुलिस अधिकारी नियुक्त हुए थे और नजीरउद्दीन हुसेन 'शायक' के शागिर्द थे।

## कलाम

सैल खाँ था जो वहाँ आखों से।
तुमने दिल को न जिगर को देखा ॥
देख फिर हमको न देखेगा कभी।
यार जो तूने इधर को देखा ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


न तो की नालये शब ने तासीर।
न असर आह सहर में देखा॥
हुस्न परियों का सुना करते है।
इश्क देखा तो बशर में देखा॥

---

अब तो चारा कोई बाक़ी नहीं बेचारों का।
आख़िरी वक़्त है प्यारे तेरे बीमारों का॥

दुनियाँ में न हो शेफ़ता इन्सान किसी का।
दिल हाथ से जावे, न मेरी जान, किसी का॥
उश्शाक तो जल-जल के हुए सर्व चरागाँ।
पर वह न हुआ शम्मए शबिस्तान किसी का॥

---

जलाती है तपे इश्क आह जीते जी बदन मेरा।
मूवे पर या इलाही कब छोड़ेगी कफ़न मेरा॥

---

मिल चुका मैं ख़ाक में और दिल में है तेरे .गुबार।
जा मुझे इस क़दर किसने मुकद्दर कर दिया॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

# ६-जगन्नाथ सहाय 'खुश्तर'

मुन्शी जगन्नाथ खुश्तर, श्रीवास्तव कायस्थ थे तथा लाला मन्नालाल के लड़के थे। उनके पूर्वज बडिहा ज़िला उन्नाव के निवासी थे और जीविका की खोज में लखनऊ आकर शाना साज़ों के मोहल्ले में बस गये थे और सरकार शाही में नौकर हुए। 'खुश्तर' का जन्म लगभग १८०६ ई० में हुआ था। वह वाजिद अली शाह के दफ्तर में मुतसद्दी थे। सुलेख मे कोई उनका प्रतिद्वन्द्वी न था। उनकी मृत्यु १८६४ ई० में हुई।

शायरी में उनका झुकाव धर्म की ओर अधिक था। इसलिए उन्होंने शायरी की किसी अन्य दिशा को नहीं चुना, उन्होने श्रीमद्-भगवद् गीता मंजूम, मसनवी चित्रगुप्त, कथा सत्यनारायन मन्ज़ूम और सुदामा चरित्र इत्यादि किताबों की रचना की जो नवल किशोर प्रेस से प्रकाशित हुई। मगर खुश्तर की सबसे लोकप्रिय रचना 'रामायन खुश्तर' है। उन्होंने १८५१ ई० में ४२ वर्ष की आयु में तुलसीकृत रामायण का अक्षरशः अनुवाद वहुत आकर्षक शैली में किया।

खुश्तर की यह रामायण जो २५५ पृष्ठों पर तथा ४८०० पदों पर आधारित है, अपनी भाषा और भावों के लालित्य के कारण अत्यन्त लोकप्रिय हुई। १६२४ में नवल किशोर प्रेस से वह १६वीं बार प्रकाशित हो चुकी थी। १६३८ में पुनः इसका प्रकाशन कराना पड़ा। इतनी लोक प्रियता उर्दू साहित्य में मसनवी गुल्जार नसीम को छोड़कर और किसी पुस्तक को नहीं मिली।

मुंशी जगन्नाथ सहाय 'खुश्तर' का उर्दू साहित्य में यह बड़ा महत्वपूर्ण योगदान है कि रामकथा का क्रमबद्ध रूप से वर्णन उर्दू साहित्य में हिन्दुओं के धार्मिक अंग की जो बड़ी कमी थी वह पूरी हो जाती है। निःसन्देह इस पुस्तक के रचयिता होने के नाते 'खुश्तर' उर्दू के प्रसिद्ध हिन्दू शायरों में गिने जाने के अधिकारी हैं। जब तक यह काव्य बाकी रहेगा, 'खुश्तर' भी अमर रहेंगे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



## कलाम

जब रामचन्द्र व लक्ष्मण जनक जी के बाग में फूल लेने जाते हैं और जानकी जो अपनी सहेलियों के साथ गिरिजा की पूजा करने के लिए आती हैं तो उस स्थल का वर्णन 'खुश्तर' साहब के इन शब्दों में किया है :—

यह आयी बाग़ में यूं नाज़ परवर,
नसीम आये चमन में जिस रविश पर।
कोई ज़ोहरा थी कोई मुश्तरी थीं,
कोई थी हूर और कोई परी थी।
कोई शब्बो थी कोई यासमन थी,
कोई नसरीं थी कोई नस्तरन थी।
कोई शक्ले सुमन थी नाज़ुक अन्दाम,
कोई सूरजमुखी थी कोई गुलफ़ाम।
जो देखे उनके गेसू पेच दर पेच,
कहा सुम्बुल ने अब है ज़िन्दगी हेच।
नज़र आये वहीं पर रामो लक्ष्मन,
व शक्ले आफ़ताबो माहे रौशन।
ख़ुदा जाने मलक हैं या बशर हैं,
बज़ाहिर सूरते शम्सो क़मर हैं।
हुआ सीता पे जब यह आशकारा,
हुई सो दिल से मुश्ताक़े नज़ारा।
जबस वह हमनशीं थी शोख़ो गुस्ताख़,
दिखाए दोनों गुल दर परदए शाख़।
नज़र आये जो रश्के गुल वह रुख़सार,
हुई मानिन्द बुलबुल आशिक़े ज़ार।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



जो देखे उसने रूए शोखो तन्नाज़,
तो आँखें शक्ले नर्गिस रह गई बाज़।

नज़र आये जो क़द बेसाखता वह,
हुई क़ुमरी सिफ़त दिल बाख़ता वह।

हुई सीता जो रूए राम से शाद,
न की जुम्बिश वहां से शक्ले शमशाद।

उधर से राम ने सीता को देखा,
हुए सौ जानो दिल से उस पे शैदा।

जो गुल थे हो गये मानिन्दे बुल-बुल,
जो बुल-बुल थे हुए वह सूरते गुल।

इसी प्रकार धनुष-यज्ञ के अवसर का वर्णन करते हुए वे कहते हैं:-

हुआ जब मतलए ख़ुर्शीद रोशन,
गुलिस्ताने जहाँ में जलवा, अफगन।
हुआ मशरिक़ से ज़ाहिर आरिज़े हूर,
रुख़े आलम प चमका परतवे नूर।
उड़ा ज़ागे सियाह शब जहाँ से,
हुमा-ए-रोज़ निकला आसमाँ से।
हुई क़ौसे हिलाले शब शिकस्ता,
उरू से-सुबह निकली दस्त बस्ता।
फ़लक पर शाहिदे ख़ुर्शीद आया,
दुरे शबनम का जेवा हार लाया।
हुई बस धूम आये राम लक्ष्मन,
अवध के शाहज़ादे सैद अफ़्गन।
वह शाहों में नज़र इस तरह आये,
सितारों में क़मर जिस तरह आये।
न हो किस तरह शाहों में मुज़मिर,
कि वह ज़र्रा थे ये ख़ुर्शीदे अनवर।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



धनुष टूटने पर गोस्वामी तुलसी दास ने परशुराम और लक्ष्मण के विवाद को अत्यन्त रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है। 'खुश्तर' ने भी तुलसीदास की रामायण का वर्णन शत प्रतिशत सफलता के साथ प्रस्तुत किया है। वह कहते हैं —

अदब से रूबरू मुर्शिद के कर बात।
नहीं जेबा है गुस्ताखाना हर बात।
बिरादर का नहीं तुझ को अदब है।
ये गुस्ताखी तेरे हक़ में गजब है॥
नहीं वाक़िफ है मेरे ज़ोरो बल से।
कि दुश्मन क्षत्री का हूँ अजल से॥
तबर हो जिस तरफ मेरा शरर बार।
क़यामत उस जगह पर हो नमूदार॥
तू है कज फ़हम अज़बस शोखो नादाँ।
रवाँ है गोशमाली तेरी इस आँ।
कहा लक्ष्मन ने ऐ फख्रे बरहमन।
तेरा अहवाल है आलम में रौशन॥
तेरी शाइस्तगी ज़ाहिर है सब पर।
कि अपनी कत्ल की बेवजह मादर॥
डराता है मुझे तू क्या तबर से।
हज़र कर मेरे तीरे तेज पर से॥
खबर रखते हैं तेरे जोर से हम।
नहीं है कोह को कुछ काह से ग़म॥
जो की यह गुफ्तगू लक्ष्मन ने बेबाक़
हुआ आतिश ग़ज़ब से आबिदे पाक॥
हुआ गुस्से से लरज़ां सूरते बर्क़।
हुआ अफ़रोख्ता वह पा से ता फ़र्क़॥
हुआ अज़बस कि विश्वामित्र से गम।
कहा यह बेअदब है सख्त बेशर्म॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



उमे दहशत नहीं मेरे तबर से।
मयर आजिज है यह जानी जिगर से ॥
अब उसका सर है और मेरा तबर है।
नहीं मेरी खबर ऐ नामवर है ॥
तुम्हारे पाश विश्वामित्र हैं सब।
अजल ने वर्ना घेरा है उसे अब ॥
अगर है पास मेरा तुमको मन्जूर।
करो मेरी नजर से तुम उसे दूर ॥

———

साकेत नगरी से जब राम चन्द्र जी बन के लिए रवाना हुए तो राजा दशरथ और अयोध्यावासियों के दुख का ठिकाना न था। उस करुणापूर्ण दृश्य का 'खुश्तर' ने भी अपने शब्दों में बड़ा मार्मिक चित्रण किया है।

जुदा जिस दम हुए वह गैरते बाग।
दिले दशरथ ने खाया लाला सा दग़ ॥
पड़ा शहरे अवध में शोरो शेवन।
चले हमराह गिरयां मर्द और जन ॥
अवध में यह हुआ रोने का सैलाब।
हुए हर जा लबालब नहरों तालाब ॥
ज़बस थे गम से गिरियाँ सक़फ़ो दीवार।
नजर आते थे रौजन चश्मे खूँबार ॥
मकाने शाह के हर ताको मजर।
पये गिरियां थे शक्ले दीदये तर ॥
हज़ारों चश्म से रोता था दरिया।
हुबाव उसके हुए दीदे सरापा ॥
किया ग़म ने सेहर ने पैरहन चाक।
उड़ाई सर पे अपने शाम ने खाक ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



जहाँ गिरियाँ था सब आहों फुआं से।
फरिन्ते मुल फशां थे आसमां से।।
न खोली आंख ऐसी शह ने की बन्द।
यकायक जवांके छूटे दोनों फरजन्द।।
जमीं पर शव्ह था इस तरह बेताब।
कि हो जिस तरह से आतिश पे सीमाब।।
फर्जू थे हर घड़ी दर्दो गमों आह।
बहे लख्ते जिगर अश्कों के हमराह।।

युद्ध क्षेत्र के चिढण में भी खुश्तर ने अपनी सायरी का कमाल दिखाया है। राजा राम चन्द्र और कुम्भ कर्ण के बीच होने वाले युद्ध का वर्णन देखिए—

हुआ जब कुम्भ करन सहबा से मदहोश।
बरंगे वर्क तड़पा वह बला नोश।।
सुये मैदा हुआ रावन से रुख्सत।
चला देवे लई शक्ले कयामत।।
लिए हमराह लाखों देव खूंखार।
हजारों काफिरों शैतनों गद्दार।।
सितमगर संगदिल रोई बदन सब।
शबीहे गुणों शक्ले करदन सब।।
हुआ वारिद ब शक्ले गोल नागाह।
चमावाने बेगम में देवे गुमराह।।
सदाए कोस ब करना हर तरफ थी।
निदाए कत्लों कुश्तन सफ-ब-सब थी।।

---

मचाई बन्दरों ने धूम रन में।
हुआ महशर बपा गोया कि रन में।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



उड़ाई खाक देवों ने जमी पर।
अन्धेरा आ गया चर्खे बरीं पर।।
किया देवों ने हमला बन्दरों पर।
गिरे रीछों पे काफिर शक्ले अजदर।।
बचा बाक़ी न कोई बन्दरों से।
किए जख्मी जुम्रो कुल खंजरों से।।
रवाँ थे तरों खँर हर तरफ से।
सदा थी धर पकड़ की हर तरफ से।।
यह उस दम गर्म बाजारे क़जा था।
कयामत खेज मैदाने वेगा था।।
वहम लड़ते थे खुर्सो देवे मद होश।
कजा खोले हुए फिरती थीं अगोश।।

---

# ७-दया शंकर कौल 'नसीम'

पं० दयाशकर 'नसीम' १८११ ई० पैदा हुए थे। उनके पिता का नाम पं० गँगा प्रसाद कौल था। लखनऊ के रहने वाले थे। आमतौर से कश्मीरी अपने लम्बे छरहरे शरीर और गोरे वर्ण के लिए प्रसिद्ध हैं परन्तु यह छोटे कद, नन्दुमी रँग और काली आँखों वाले व्यक्ति थे। समय के अनुसार इनकी प्रारम्भिक शिक्षा उर्दू और फारसी से हुई। उर्दू और फारसी शायरों के कलाम का रसास्वादन बहुत ही कम उम्र से ही प्रारम्भ कर दिया था और बीस वर्ष की आयु तक पहुचते पहुचते शायरी की इतनी क्षमता पदा कर ली थी कि मुशायरों में छा जाते थे। यह 'आतिश' के शागिर्द थे। प्रारम्भ में गजल कहते रहे लेकिन हृदय उद्गार निकालने के लिए गजल का क्षेत्र अत्यन्त सीमित था, इसलिए मसनवी की ओर उन्मुख हुए और 'गुल बकावली' की कथा जो गद्य में थी उसे नज्म के रूप में परिवर्तित करके 'गुलजारेनसीम' की संज्ञा दी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



'गुलज़ारे नसीम' को प्रकाशित हुए अभी कुल चार ही साल हुए थे कि हैजे की बीमारी से १९४४ ई० में इनका स्वर्गवास हो गया। मृत्यु के समय इनकी आयु केवल ३२ वर्ष की थी। कहा जाता है कि अंग्रेजी शायर कीट्स और शैली की तरह नसीम ने भी अपनी अल्प आयु में ही वह यश प्राप्त कर लिया जो कभी धूमिल न हो सकेगा।

'नसीम' के स्वभाव में विचारधारा और स्पष्टवादिता कूट-कूट कर भरी थीं। यदि वह चाहते तो अन्य दूसरे व्यक्तियों की तरह अवध दरबार के किसी प्रतिष्ठित पद पर बड़ी आसानी से पहुंच सकते थे परन्तु उन्होंने कभी इसकी इच्छा नहीं की।

'नसीम' बड़े हाज़िर जवाब थे। एक बार किसी मुशायरे में उर्दू के प्रसिद्ध शायर शेख ने इनकी ओर सम्बोधित होकर एक मिसरा पढ़ा। शेर की पहली पंक्ति इस प्रकार थी।

"शेख ने मस्जिद बना मिसमार बुतखाना किया।

और कहा कि दूसरा मिसरा मुझे नहीं सूझ रहा है। कृपया आप दूसरा मिसरा लगा दीजिये। उसके कहने की देर थी कि नसीम ने यह मिसरा लगाया—

"तब तो इक सूरत भी थी अब साफ वीराना किया॥"

यह मिसरा सुनना था कि सभी लोग फड़क उठे और वाह-वाह करने लगे।

## नसीम की ग़ज़लें

जब न जीते जी मेरे काम आयेगी।
क्या यह दुनिया आक़बत बखशायेगी॥
जब मिले दो दिल मुखिल फिर कौन हो।
बैठ जाओ खुद हया उठ जायेगी॥
गर यही है इस गुलिस्तां की हवा।
शाखे गुल एक रोज़ झोंका खायेगी॥
जां निकल जायेगी तन से ऐ "नसीम"
गुल को बूए गुल हवा बतलायेगी॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



खुम न बनकर खुद गरज हो जाइए।
मिस्ल सागर और के काम आइए॥
अब्रे रहमत सुनते हैं नाम आपका।
खाकसारों पर करम फरमाइए॥
जौहरे तेग़ निगह खुल जायगा।
मुंह च मेरे ज़ख्म का खुलवाइऐ॥

---

भिन्नत दिला किसी की न हरगिज़ उठाइए।
मर जाइए न नाजे मसीहा उठाइए॥
कैसा हिजाब कैसी हवा और कहां की शरम।
पर्दे से हाथ, हाथ से पर्दा उठाइए॥
जलिए मगर चुनार के पंजे की तरह से।
बहरे दुआ न दस्ते तमन्ना उठाइए॥
ए जान दिल जला के न लीजी किसी की आह।
आँच आती है जो आग से शोला उठाइए।
क्या-क्या हसीं चुने हुए मिट्टी में मिल गये।
अफशाँ समझ के ख़ाक से जर्रा उठाइए॥
हम से सिवा है गैर हवाखवाह वाह वाह।
होते हुए 'नसीम' के पंखा उठाइए॥

---

## शोख़ी और हास्य

बुतों को जों देखा गुनह क्या हमारा।
खुदाई खुदा की तमाशा हमारा॥
बुतों की गली छोड़ कर कौन जाए।
यहीं से है काबे को सजदा हमारा॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



## मसनवी गुल्जारे नसीम

मस्नवी गुल्ज़ारे नसीम जब समाप्त हुई तो इसके लेखक की आयु केवल २५ वर्ष की थी। यह मस्नवी अपने ढंग में बिल्कुल निराली थी। न किसी की नकल की गई थी और न किसी का रूपान्तर शेख नासिख ने इस मस्नवी को संशोधित किया था। संशोधन के बाद यह मस्ननवी जब प्रकाशित हुई तो हाथों हाथ तुरन्त बिक गई। अभी तक मस्नवी के क्षेत्र में 'मीर हसन' ही अद्वितीय माने जाते थे परन्तु अब मस्नवी गुल्ज़ारे नसीम जनमानस के चर्चा का विषय बन गई।

मस्नवी मीर हसन और मस्नवी गुल्ज़ारें नसीम की कलात्मक दृष्टि से एक दूसरे से तुलना की जाने लगी। मौलाना 'हाली' और मौलाना 'शरर' जैसे दिग्गजों ने कुछ आपत्तियाँ कीं। 'चकबस्त' और शरर, के मध्य यह वाद-विवाद लगभग एक साल तक चलता रहा और यह वाद-विवाद साहित्यिक स्तर से व्यक्तिगत आरोपों और गाली गलौज तक पहुंच गया।

मौलाना 'असग़र हुसैन 'असगर' गोंडवी ने इस पुस्तक की जो आलोचना की, वह प्रामाणिक मानी जाती है। उनके अनुसार-'गुल्ज़ारे नसीम' न सिर्फ अपने रंग की पहली मस्नवी है बल्कि उसे लखनऊ और लखनवी स्कूल की पहली मस्नवी भी कहना बेजा न होगा। इस मस्नवी ने ऐसी लोकप्रियता प्राप्त कर ली है कि हर तरफ लोगों में मस्नवी लिखने का शौक और उत्साह पैदा हो रहा है। इसमें वह सभी विशेषतायें पाई जाती हैं जो एक मस्नवी के लिए आवश्यक हैं।

एक दूसरे आलोचक (नक्काद) लिखते हैं—गुल्ज़ारे नसीम भी उसी प्रकार की एक नज़्म है कि जिसे जितनी बार पढ़िये एक नया लुत्फ मिलता है और जब मस्तिष्क उसकी सभी कलात्मक विशेषताएं आत्मसात कर लेता है तो वह अत्मविभोर हो उठता है। एक अत्यन्त प्रसिद्ध प्रो० एवं साहित्यकार सैय्यद रफीक हुसैन, (प्रयाग विश्व-विद्यालय) ने 'गुल्जारे नसीम' के सम्बन्ध में कहा है कि गुल्जारे नसीम

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



उर्दू की गौरवशाली मस्नवी है। इसमें प्राचीन समय की ऐसी काव्य-गत विशेषतायें मिलती हैं जो अपने आप उदाहरण हैं। इसकी लोकप्रियता और काव्यकला के गुणों को देखते हुए कहा जा सकता है कि इस मस्नवी के अतिरिक्त अगर हिन्दुओं ने उर्दू की अन्य रचनाओं में कुछ भी हिस्सा न लिया होता तो भी उनके भागीदार होने में किसी प्रकार के संदेह की गुन्जाइश नहीं रह गई थी। इस मस्नवी की लोकप्रियता का सिर्फ एक ही प्रमाण है कि यह नवल किशोर प्रेस, लखनऊ से २५ वार छप चुकी है।

## उदाहरण

तोता बनकर शजर पे जा कर।
फल खा के बशर का रूप पाकर॥
पत्ते, फल, गोंद, छाल, लकड़ी।
इस पेड़ से लेके राह पकड़ी॥
त्योरा के वहीं वह बार बरदोश।
बैठा तो गिरा, गिरा तो बेहोश॥
इक़रार थी जो बेहयाई।
शर्माई, लजाई, मुस्कराई॥
वह सैरे चमन वह फूल लेना।
वह अज़्मे वतन वह दाग देना॥
पूछा कि सबब कहा कि किस्मत।
पूछा कि तलब कहा क़नाअत॥

———

वह बादे चमन चमन खरामाँ।
यानी वह बकावली परेशाँ॥
गुलशन से जो खाक़ उड़ाती आयी।
उस शहर में आते-आते आयी॥
देखा तो खुशी के चहचहे थे।
गुलचीं के शगूफे खिल रहे थे॥
गुले बाग़े जिनाँ था जहाँ था।
एक, एक हज़ार दास्ताँ था॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



पाते ही पता खुशी से फूली।
शाद ऐसी हुयी कि रंज भूली॥
जादू से बनी है आदमज़ाद।
इन्सानों में जा मिली परीजाद॥
सुल्तान की सवारी आ रही थी।
सूरत जो निगाह की परी थी॥
पूछा कि ऐ आदमे परी रुख।
इन्साँ है, परी है, कौन है तू॥
क्या नाम है और वतन किधर है।
है कौन सा गुल चमन किधर है॥
दी उसने दुआ कहा बसद सोंज।
फरुख है शहा में इब्ने फीरोंज॥
गुल तू तो कोई चमन बताऊँ।
गुरबत ज़दा क्या वतन बताऊँ॥
घर-बार से क्या फक़ीर को काम।
क्या लीजिए छोड़ें गांव का नाम॥
पूछा कि सबब कहा कि किस्तम।
पूछा कि तलब कहा क़नाअत॥
बातों पे फ़िदा हुआ शहन्शाह।
लाया बसद इम्तियाज हमराह॥
चेहरे से अमीर ज़ादा पाया।
घर ला के वज़ीर उसे बनाया॥
दरबार में चारों शाहज़ादे।
देखा खुले वह दिल के सादे॥
तजवीज में था यह साहिबे फिक्र।
आया ताजुलमलूक का ज़िक्र॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



ज़ाहिर न किया वतन अपना।
नालें से लिया शगून अपना।।
मंजिल गहे रहरवां बना के।
शाम सहर उसमें आप आके।।
रह-रव को दिया बलुत्फो इकराम।
आते आराम जाते आराम।।

## ८-मुन्शी द्वारिका प्रसाद 'उफ़क़'

मुन्शी द्वारिका प्रसाद उफ़क़ का जन्म १८६४ ई० में हुआ था। यह सक्सेना कायस्थ तथा लखनऊ के नौबस्ता मोहल्ले के रहने वाले थे। 'उफ़क़' मुन्शी पूरन चन्द के तीसरे और सबसे छोटे लड़के थे। मुंशी राम सहाय 'तमन्ना' और मुन्शी माता प्रसाद 'नोशां' उनके बड़े भाई थे। इस तरह शायरी उनकी पैतृक सम्पत्ति है।

उफ़क़ की प्रारम्भिक शिक्षा कैनिंग कालिज में हुई। फारसी, उर्दू, हिन्दी की शिक्षा घर पर ही प्राप्त की। 'उफ़क़' मुन्शी शंकर दयाल 'फरहत' के शिष्य और शैली की दृष्टि से शेख नासिख और ख्वाजा वज़ीर के समर्थक थे। अत्यन्त सज्जन और विनम्र विचारों वाले व्यक्ति थे। अपने कलाम पर किसी का आक्षेप सहन नहीं करते थे। अत्यधिक मद्यपान के कारण इनका स्वास्थ्य बिगड़ गया और १२ सितम्बर, १९१३ ई० को संग्रहणी की बीमारी में इनका देहान्त हो गया।

'उफ़क़' एक नैसर्गिक शायर थे। बचपन से ही शेरो शायरी का शौक था। उर्दू, फारसी और हिन्दी तीनों भाषाओं में शेर कहते। 'उफ़क़' न केवल अपने वंश के लिए ही वरन पूरे राष्ट्र के लिए गौरवपूर्ण व्यक्ति थे। सम्पूर्ण देश ने इनकी शायरी की प्रशंसा की है। दक्षिण के अनेक रजवाड़ों की प्रशंसा में इन्होंने अपने कसीदे फारसी में लिखे जिसकी प्रशंसा में शाह ईरान के दामाद ने दक्षिणा के रूप में एक प्रमाण पत्र भी दिया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



प्रारम्भ में "उफक" मीर और दाग की शैली से प्रभावित होकर गज़लें लिखते रहे। मगर कुछ अरसे बाद उन्होंने अपना ध्यान ऩज्म लिखने तथा ठोस साहित्य के सर्जन में लगाया और इसी पर केन्द्रित किया। इसमें संदेह नहीं कि उन्होंने कसीदा मस्नवी, मुसद्दस, नौहा, गज़ल, तारीख गोई, रुबाई इत्यादि सभी विधाओं में शायरी की है।

उफक़ ने उर्दू में 'नज़्म अखबार' निकालने का गौरव प्राप्त किया। यह अखबार बारह पृष्टों पर आधारित होता था। आठ पृष्ठों में कविता, शेष में खबरें प्रकाशित की जाती थीं जिसमें अधिकांश 'उफक' की ही नज़्म होती थीं। यह अखबार पाक्षिक था और १८८५ से १८९४ तक चलता रहा।

रामायण, महाभारत, गुरु गोबिन्द सिंह का जीवन चरित नज़म में और टाड राजस्थान के अनुवाद 'उफक' के अद्वितीय यादगार हैं। अलिफ लैला का अनुवाद उर्दू गद्य में किया जिसकी जिल्दें नवल किशोर प्रेस में मौजूद है किन्तु वह आज तक प्रकाशित नहीं हो सकी। 'उफक' केवल एक सिद्धहस्त शायर ही नहीं वरन उच्चक़ोटि के लेखक भी थे। इन्हें शेर व शायरी के अतिरिक्त उर्दू गद्य मे भी प्रवीणता प्राप्त थी। इसलिए इन्होंने कई उपन्यास और नाटक भी लिखे। इनके उपन्यासों में कादम्बरी, आलमें तस्बी, जुल्फे लैला, इश्के वफा विशेष रूप से उल्लेखनीय है। 'जुल्फे लैला' में बेशर्मो की भाषा का मजा पाया जाता है। इसके अतिरिक्त वह ड्रामा लिखने में भी सिद्धहस्त थे। १९०४ से १९०७ के बीच वह पंजाब समाचार के सम्पादक रहे। राम नाटक क्लब के अनुरोध पर रामायण को ड्रामा के रूप में प्रस्तुत किया तथा कृष्ण-सुदामा और भीष्म पितामह नामक दो ड्रामे इसी ऩज्म के लिए लिखे थे। उफक की प्रतिभा चमत्कारिक थी। ऐसे व्यक्ति तथा ऐसे प्रतिभाशाली व्यक्ति कम ही जन्म लेते हैं।

'उफक' की सर्वोत्तम कृति रामायण उफक' है, जिसमें लगभग १३०० शेर हैं जो एक हैं काफिया के हैं। उफक की रामायण प्रवाह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



तथा काव्य कला की अनेक विशेषताओं से पूर्ण है। रोचकता इसकी सबसे बड़ी विशेषता है। कुछ शेर उदाहरण स्वरूप हैं। इनमें राम के स्वरूप को किस सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

दिल की ख्वाहिश है कि रघुबर का सरापा हो बयाँ।
खींचता है राम की तस्वीर यों किल्के रवाँ॥
नूर की तस्वीर सर से पाँव तक हैं राम चन्द्र।
साँवली सूरत पे सबको मरदुमक का है गुमाँ॥
कान में कुण्डल, मुकुट सर पर, तिलक जेबे जबीं।।
माल बैजन्ती गले में हाथ में तीरों कमाँ॥
कान से जिसने सुनी प्रहलाद की आवाज़े दर्द।
द्रोपदी की टेर, गज की आह। फरियादों फुगां॥

---

दम में फिर जाय जो वह चश्मे इनायत कैसी।
एक सुक्ता से जहमत हो वह रहमत कैसी॥
हबसे दूर में बेकार है अल्लाह की याद।
आशिकी जिससे हो पैदा वह इबादत कैसी॥
शेख तुम हूर पर हम अपने सनम पर कुर्बान।
खुद फजीहत हो तो औरों की नसीहत कैसी॥
अश्क पीने को दिये यार ने गम खाने को।
की है उस शोख ने अश्क की दावत कैसी॥
दिले बेताब को है शोलए आरिज पे करार।
दंग हूं आग पे सीमाब को राहत कैसी॥
उम्र क्यों जुस्द में एक गवाए उश्शाक।
हूर दुनिया मे जो मिल जाय तो जन्नत कैसी॥
वही कहता है जो अशआरे 'उफक' सुनता है।
पाई है उनसे खुदा जाने तबियत कैसी॥
मंजिले अव्वल के चलने से थका मैं नातवाँ।
कब्र में बैठों दस्तों पा मेरे दबाने के लिए॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



जहाँ गुल्ज़ार में चुनते हो तुम बिखरे हुए तिनके।
कभी मेरा भी वाँ ऐ हमसफर इक आशियाना था।
तयूरे बाग़ क्यों सैय्याद तेरे जाल में फंसते।
वहीं तक़दीर ले आई जहाँ का आबो-दाना था।

# ६-तोता राम 'शायाँ'

मुंशी आत्मा राम श्रीवास्तव के पुत्र तोता राम "शायां" लखनऊ के रहने वाले और अत्यन्त प्रसिद्ध शायर थे। उनके दादा मनसुख राय और परदादा राय मंसा राम वड़े प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। मुंशी तोता राम शायां, नवाब सआदत अली खां के समय में बख्शीगीरी के पद पर प्रतिष्ठित थे। इसके बाद लम्बे अर्से तक नवल किशोर प्रेस से प्रकाशित होने वाले 'अवध अखबार' का सम्पादन किया। महाभारत मन्जूम, क़िस्सा अमीर हम्ज़ा मन्जूम मारूफ व तिलिस्म शायाँ और अल्फ लैला मन्जूम इत्यादि उनकी कृतियाँ हैं।

मुंशी तोता राम शायां बड़े सुकोमल विचार के और मधुर भाषी शायर थे। उन्हें रज़्मियां न.ज्म, (युद्ध बर्णन) लिखने में निपुणता प्राप्त थी। इन्होंने अपनी योग्यता से उर्दू साहित्य की वृद्धि की।

शायां की किताब महाभारत मन्ज़ूम तीन सौ दो पृष्ठों पर आधारित हैं और इसमें कुल दस हज़ार शेर लिखे है। इस मस्नवी की भाषा बड़ी ही सरल और सर्व साधारण के समझने वाली है। इस पुस्तक में प्रचलित मुहावरों और किंवदन्तियों आदि का खूब प्रयोग किया गया है। यह पुस्तक १८६२ में प्रकाशित हुई। १८८० ई० में इनका देहान्त हुआ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



# महाभारत

परीक्षित ने इक रोज़ बहरे शिकार।
उठाया हिरन की तरफ़ राहबार।
हिरन चौंकड़ी भर के पिन्हाँ हुआ।
परीक्षित निहायत परेशां हुआ।
समीं एक आबिद था बैठा वहां।
हिरन का परीक्षत ने पूछा निशाँ।
वह आविद था बहरे इबादत में ग़र्क़।
न बोला कि होगा रियाज़त में फ़र्क़।
परीक्षित को फ़र्तें गज़ब से वहाँ।
न बाक़ी रहा दिल में कुछ खौफ़े जाँ।
कि इक सांप बे जान आया नज़र।
न थी पर उसे आक़बत की खबर।
जो नोके कमाँ से उठाया उसे।
क़रीब उस रखीशर के लाया उसे।
हमायल किया उसकी गर्दन में आह्।
लिया अपनी गर्दन प बारे गुनाह।
रखीशर का फ़रज़न्द आली मुक़ाम।
कि कहते संगीरख थे उसको तमाम।
जो आंखों से देखा वद अहवाले ज़ार।
गुलूए पिदर में है अफ़ई का हार।
तबीयत निहायत हुई खशमनाक।
दुआ उसने की ए खुदा-वन्दे पाक।
हुआ जिससे सरज़द यह कारे जुनूं।
न कोई चले उसका मक्र पसूं।
जो तच्छक बड़ा सांप है जहरदार।
इसी सात दिन में हुआ उससे दो चार।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



शशोपंज कुछ दिल में इसका न लाय।
डर्ते उसको रस्ता फ़ना का दिखाय।

अन्त में उनकी कुछ ग़ज़लों का नमूना भी प्रस्तुत किया जा रहा है:—

रहम दिल हम सा कहां मयकदऐ आलम में।
आंखें भर आई जो भरते कहीं सागर देखा।

---

मिश्री करे न बात तेरे लब के रूबरू।
क्या कहिए किस क़दर तेरा शीरीं कलाम है।

---

आई न नज़र ख़्वाब में भी यार की सूरत।
देखी न कभी तालऐ वेदार की सूरत।

---

धूम हैं जब से तुम्हारे हुस्न की।
मिस्र में यूसुफ़ का है बाज़ार बन्द।

---

बाम पर न बैठो खिड़की खोलकर।
रास्ता ही जायेगा ऐ यार बन्द।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

# १०-बृज नारायन 'चकबस्त'

"चकवस्त" के पिता का नाम उदित नारायन चकवस्त था। "चकबस्त" १८८२ ई० में फैज़ाबाद में पैदा हुए थे, मगर कुछ ही वर्ष के बाद लखनऊ आ गये थे और वहीं पर शिक्षा प्राप्त की। १९०८ में कानून की परीक्षा पास करके वकालत प्रारम्भ किया और इस पेशे में काफ़ी सफल भी रहे। थोड़े ही दिनों में उनका शुमार लखनऊ के प्रतिष्ठित वकीलों में होने लगा। १२ फरवरी, १९२६ ई० में वह एक मुकदमे के सम्बन्ध में रायबरेली गये थे, वहां से लौट रहे थे। कि गाड़ी पर ही फालिज का आक्रमण हुआ। इसलिए उनको गाड़ी से उतारकर वेटिंग रूम में ले जाया गया। मेडिकल सहायता भी पहुंचाई गई परन्तु सात बजे शाम को स्टेशन पर ही उनका स्वर्गवास हो गया। उनकी लाश ११ बजे रात को मोटर द्वारा लखनऊ लाई गई।

"चकबस्त" ने ९ वर्ष की ही आयु में शायरी प्रारम्भ कर दी थी, और बहुत थोड़े समय में ही उनका कलाम इतना परिमार्जित हो गया था कि सोलह वर्ष की आयु में "जलवए सुबह" और "मुरक्कए इबरत" जैसी उच्चकोटि की नज़में लिखकर लोगों को चकित कर दिया। उनकी नज्मों का सकलन "सुब्हे वतन" के नाम से मृत्यु के बाद प्रकाशित हुआ। इसमें २६ नज्में, लगभग ४० गजलें और रुबाइयाँ और कुछ स्फुटिक शेर हैं।

"सुब्हे वतन" "चकबस्त" की वह कृति है, जिसने उर्दू शायरी को गौरवान्वित किया है।

"चकबस्त" केवल शायर ही नहीं थे अपितु वह एक विद्वान गद्य लेखक और आलोचक भी थे। १९२८ में उनके लेखों का संकलन "मज़ामीने चकवस्त" के नाम से प्रकाशित हुआ। यह पुस्तक ३४४ पृष्ठों पर आधारित थी। इस किताब का हर लेख चकवस्त की असाधारण योग्यता का परिचायक है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



१२ फरवरी, १९३९ को लखनऊ में चकबस्त दिवस कैसरबाग़ की बारादरी में सर तेज बहादुर सप्रू की अध्यक्षता में मनाया गया था, जिसमें देश के प्रसिद्ध साहित्यकारों और विद्वानों ने अपने निबन्ध पढ़े। बाद में इन निबन्धों को संकलित करके "यादे चकबस्त" के नाम से पुस्तक के रूप में प्रकाशित कराया गया। चकबस्त के सम्बन्ध में यह एक प्रामाणिक पुस्तक हैं।"

दया शंकर कौल "नसीम" की पुस्तक 'गुल्जारे नसीम" पर अनेक दिग्गजों ने बड़ी आपत्तियाँ की और शिष्टता की सीमा भी लाँघ गये। उस स्थिति में भी चकबस्त ने मसनवी गुल्ज़ारे नसीम की विशेषताओं का समर्थन करते हुए उन्होंने जो उत्तर दिये हैं, उनसे उनकी योग्यता का पता चलता है तथा उत्तर देने में उन्होंने जो शालीनता बरती थी वह उनकी नैतिकता का द्योतक है। इसी बात पर मिर्जा मोहम्मद सफी अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "मुबाहसए गुल्जारे नसीम" में लिखते हैं कि 'न्याय हमें यह बात कहने के लिए विवश करता है कि श्री "चकबस्त" की कलम से "शरर" की अपत्तियों के जो उत्तर प्रकाशित हुए हैं उनमें अलोचना की पूरी गरिमा निहित है। उन्होंने अपने विरोधियों के सम्मान के विरुद्ध एक शब्द भी ऐसा प्रयोग नहीं किया जो शालीनता की सीमा से परे हो।

"चकबस्त" के हृदय में देश-प्रेम कूट-कूट कर भरा हुआ था, देश की उन्नति और सुधार के प्रति उनके जो भाव थे, उस की झलक उनकी प्रसिद्ध नज़्म "खाके हिंद" में पाई जाती है। भाषा सौंदर्य' आकर्षक शैली एवं उच्च विचार की दृष्टि से यह एक उच्चकोटि की नज़्म है।

इस नज़्म में जो भी उपमाये प्रयोग की गई हैं, वह सब भारतीय हैं। वह अरब या ईरान की नहीं है:—

ए खाके हिन्द तेरी अज़मत में क्या गुमाँ है।
दरियाये फैज़े कुदरत तेरे लिए रवाँ है॥
तेरी जबीं से नूरे हुस्न अज़ल अयाँ है।
अल्लाह रे ज़ेबो ज़ीनत क्या औजो इज्ज़ोशाँ हैं॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



हर सुब्ह है यह खिदमत खुर्शीदे पुर ज़िया की।
किरनों से गूँजता है चोटी हिमालया की।।

———

गौतम ने आबरू दी इस माबदे कुहन को।
सरमद ने इस ज़मीं पर सद्के किय वतन को।।
अकबर ने जामे उल्फ़त बख़्शा इस अन्जुमन को।
सींचा लहू से अपने राना ने इस चमन को।।

सब सूर बीर अपने इस खाक में निहां हैं।
टूटे हुए खंडर हैं या उनकी हड्डियाँ हैं।।
ए सूरे हुब्बे क़ौमी इस ख़्वाब से जगा दें।
भूला हुआ फसाना कानों को फिर सुना दे।।
मुर्दा तबीयतों की अफ़सुर्दगी मिटा दे।
उड़ते हुए शरारे इस राख से दिखा दे।।
हुब्बे वतन समाये आँखों में नूर होकर।
सर में खुमार होकर दिल में सुरूर होकर।।

एक दूसरी नज्म "वतन का राग" में जोश व तड़प कूट-कूट कर भरी हुई हैं। वतन की आजादी (होम रूल) प्राप्त करने के लिए चकबस्त का संघर्ष उनके जीवनोत्सर्ग की भावना की निर्भीकता के साथ प्रगट करता हैं। कुछ छन्द प्रस्तुत हैं—

हमारे वास्ते ज़ंजीरों तौक़ गहना है।
वफा के शौक में गांधी ने जिसको पहना है।।
समझ लिया मुझे रंजो दर्द सहना है।
मगर जुबां से कहेंगे वही जो कहना है।।

तलब फ़ज़ूल है काँटों को फूल के बदले।
न लें बहिश्त भी हम होमरूल के बदले।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



पिन्हाने वाले मगर बेड़ियाँ पिन्हायेंगे।
खुशी से क़ैद के गोशे को हम बसायेंगे॥
जो सन्तरी दरे ज़िन्दा के सो भी जायेंगे।
यह राग गा के उन्हें नींद से जगायेंगे॥

तलब फ़जूल है काँटों की फूल के बदले।
न लें बहिश्त भी हम होमरूल के बदले॥

———

ज़ुबां को बन्द किया है यह ग़ाफ़िलों को है नाज़।
ज़रा रगों में लहू का भी देख लें अन्दाज़॥
रहेगा जान के हमराह दिल का सोज़ो गुदाज़।
चिता से आयेगी मरने के बाद यह आवाज़॥

तलब फ़ज़ूल है काँटों की फूल के बदले।
न लें बहिश्त भी हम होमरूल के बदले॥

———

१९१७ में मिसेज एनी बेसेन्ट की नजरबन्दी के समय "चकबस्त" ने एक बहुत ओजस्वी नज़्म 'मिसेज़ बेसेन्ट की खिदमत में क़ौम का पयामे वफ़ा' लिखी, जो इस प्रकार है—

हिन्द बेदार हुआ यूँ तेरी बेदारी से।
जैसे बरसों का मरीज़ उठता है बीमारी से॥
क़ौम आज़ाद हुई तेरी गिरफ्तारी से।
चांदनी फैल गई हुस्ने वफ़ादारी से॥

तू नज़र बन्द है जलवा है तेरा हर घर में।
शमअ फ़ानूस में है नूर है महफ़िल भर में॥

———

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



हुक्म हाकिम का है फ़रियादे ज़बानो रुक जाय।
दिल की बहती हुई गंगा की रवानी रुक जाय।।
क़ौम कहती है हवा बन्द हो पानी रुक जाय।
पर यह मुमिकन नहीं अब जोशे जवानी रुक जाय।।

हो खबरदार जिन्होंने यह अजीयत दी है।
कुछ तमाशा यह नहीं क़ौम ने करवट ली है।।

"क़ौम के सूरमाओं को अलविदा" शीर्षक से एक राष्ट्रीय नज़्म लिखी है। यह चित्रण उस अवसर का है, जब हिन्दुस्तानी सिपाहियों की फौज ब्रिटेन की ओर से योरप के युद्ध मे भाग लेने के लिए रवाना हो रही थी। यहाँ यह भी स्मरण रखना चाहिए कि अंग्रेजों ने भारतीय राष्ट्र से यह वादा किया था कि तुम हमारी युद्ध में सहायता करो तो हम जीतने के बाद तुम्हें स्वतन्त्र कर देंगे।

साहिले हिन्द से जर्रारे वतन जाते हैं।
कुछ नई शान से ज़ांबाज़ कुहन आते हैं।।
रन में बांधे हुए शमशीरों कफ़न जाते हैं।
तेग़जन, बर्क़ फ़िगन क़िलआ शिकन जाते हैं।।

सामने उनके ज़फर बरहना पा चलती है।
उनकी तलवार के साए में कजा चलती है।।

———

उनकी रग-रग में है पैवस्ता शुजाअत के चलन।
रन का मैदान है उनके लिए माँ का दामन।।
अर्सए जंग की मौत उनको है इक शब की दुल्हन।
मर के तलवार से हासिल हो तो खिलअत है कफ़न।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



जोश उनमें जो है उस जोश का अब दौर नहीं।
सात पुश्तों के सिपाही हैं कोई और नहीं।।

---

हाँ दिलेराने वतन धाक बिठा कर आना।
तनतना जर्मने खुदबीं का मिटा कर आना।।
क़ैसरी तख़्त की बुनियाद हिला कर आना।
नदियाँ खून की बर्लिन में बहा कर आना।।
यही गंगा है सिपाही के नहाने के लिए।
नाव तलवार की है पार लगाने के लिए।।

---

जिस घड़ी मारकए जंग में ही तेगें अलम।
सूरमा लड़ते हैं इस तरह पुकारे अलम।।
दिल हो अर्जुन का, जिगर भीम का, अगद का क़दम।
मौत के वक्त नजर में हों शवीहे भीषम।।
जिसका काबू न हटा मौत की तदवीरों पर।
सायए तेग़ में आराम किया तीरों पर।।

---

चकबस्त ने सुबहे वतन भाग दो में अधिकतर सुधारवादी एवं धार्मिक नज़्में लिखी हैं। रामायण का एक सीन, सैरे-देहरादून, गाय, कृष्ण कन्हैया, फूलमाला इत्यादि अत्यन्त दिलचस्प नज़्में हैं।

"चकबस्त" की एक नज़्म 'रामायण का एक सीन' उर्दू शायरी की एक गौरवपूर्ण नज़्म है। यह पूरी नज़्म नैतिक शिक्षा, सांसारिक नश्वरता, हरिइच्छा, विरह-पीड़ा आदि का एक सजीव चित्रण है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



## 'रामायण का एक सीन' शीर्षक कविता से

दिल को संभालता हुआ आखिर वह नौनिहाल।
खामोश माँ के पास गया सूरते खयाल।।
देखा तो एक दर में है बैठी वह खस्ता हाल।
सकता सा हो गया है यह शिददते मलाल।।

तन में लहू का नाम नहीं जर्द रंग है।
गोया बशर नहीं कोई तस्वीरे संग है।

---

क्या जाने किस खयाल में गुम थी वह बेगुनाह।
नूरे नज़र पे दीदए हसरत से की निगाह।।
जुम्बिश हुई लबों पे भरी एक सर्द आह।
ली गोशाहाय चश्म से अश्कों ने रुख़ की राह।।
चेहरे का रँग हालते दिल खोलने लगा।
दर मूये तन जुबाँ की तरह बोलने लगा।।

---

गोपाल कृष्ण गोखले की मौत पर जो मर्सिया लिखा है, उसकी कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं :—

अजल के दाम में आना है सारे आलम को।
मगर यह दिल नहीं तैयार तेरे मातम को।।
पहाड़ कहते हैं दुनिया में ऐसे ही ग़म को।
मिटा के तुझको अजल ने मिटा दिया हमको।।
जनाज़ा हिन्द का दर से तेरे निकलता है।
सुहाग क़ौम का तेरी चिता में जलता है।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

# ११-राय जवाहर सिंह 'जौहर'

(१८२४-८० ई०)

राय जवाहर सिंह जौहर के पिता का नाम राय बख्तावर सिंह था। यह सक्सेना कायस्थ थे और इनके पूर्वज अवध दरबार में प्रतिष्ठित पदों पर रहे। मुन्शी मुन्नू लाल सफा एक प्रसिद्ध शायर हुए है। वह "जौहर" के दादा के भाई थे। राजा रतन सिंह 'ज़ख्मी' इनके मामा थे। जब इनके पिता का देहान्त हुआ तो यह उनकी जगह पर दफ्तर शाही दीवानी में नियुक्त हुए। १८५६ ई० में जब अवध अँग्रजी राज्य में मिला लिया गया तो वह चीफ कमिश्नर के कार्यालय में मुन्सरिम नियुक्त हुए और ग़दर के बाद मलिहाबाद में तहसीलदार बनाए गए।

महाराजा दिग्विजय सिंह बहादुर (बलरामपुर नरेश) के अनुरोध पर तहसीलदारी छोड़कर बलरामपुर चले गये और महाराज के विशिष्ट लोगों में शामिल हो गये। महाराजा दिग्विजय सिंह को भी शायरी का शौक था। उन्होंने जौहर को अपना उस्ताद स्वीकार कर लिया। जौहर अत्यन्त सिद्धहस्त शायर थे। शायरी उनकी स्वाभाविक प्रवृत्ति थी। उसके लिए उन्हें अधिक सोचना-विचारना नहीं पड़ता था। यही कारण है कि उनके पांच दीवान प्रकाशित हुए। दो दीवान उर्दू शायरी के है, जिनके नाम हैं- 'मख़जनें फसाहत' और 'नख़िलस्तान' और तीन दीवान फारसी शायरी से सम्बन्धित है जिनके नाम हैं 'मतलए खुर्शीद' 'मस्नवीहाय क्रयाफिया व 'नजूम', 'जौहरे अफलाक' और 'जौहरे इदराक' और 'शिकार नामा' इत्यादि उनकी कृतियाँ हैं। गुल मुहम्मद खाँ नातिक़ से फारसी में और ख्वाजा वजीर से उर्दू में शायरी के बारे में विचार-विमर्श करते थे। 'खुमखानए जावेद' के लेखक श्रीराम ने जवाहर सिंह जौहर के बारे में निम्न शब्दों में अपने विचार प्रकट किए हैं:--

सूफीमत और एकेश्वरवाद की ओर उनका स्वाभाविक झुकाव है। बहुत ही सरल और आकर्षक शेर कहते हैं। 'उनकी शायरी स्वाभाविक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



प्रवृत्ति है। इनके पाँच दीवान इस बात के प्रमाण हैं जिनमें से दो नवल किशोर प्रेस, लखनऊ और तीन मतबए रफ़ाहे आम स्यालकोट से प्रकाशित हुए हैं।"

## कलाम

अस्ल मतलब एक है आगाहो नागाह का
हैं अलख का तर्जुमा अरबी में लफ़्जुल्लाह का।
देखे जो बीना हो इन्सा सनअते रब्बे हफ़ीज।
ता के अबरूए बुतां से गुम्बद हैं बिस्मिल्लाह का।।

---

गरदिश से आसमाँ की किसी जा मफर न था।
किस सरज़मीं प यह फलक फितनागर न था।।
मैं इश्क से वह हुस्न से, बेहोश दोनों थे।
जो कुछ हुआ, माफ़, कोई बाखबर न था।।
कुछ ओर ही मजा है नए शौको जोक़ का।
जो लुत्फ पहले दिन था वह रोजे दिगर न था।।
ठहरा विसाल वादए फरदाये हश्र पर।
दिल को यहाँ तहम्मुले रोजे दिगर न था।।

---

आफते जाँ हुआ आलम के लिए तू पैदा।
किस बला के हुए चश्मों-रुखो गेसू पैदा।।
वह जबानी के मजे दिलबरे कमसिन में कहाँ।।
गुन्चा जब तक न हो गुल, न हो खुश्बू पैदा।।
दोनों हाथों से बलायें तेरी लेता है हुस्न।
चेहरे पे तेरे यह ए बुत नहीं आबरू पैदा।।

---

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



अब्द लब सागरे अल्मास में साक़ी मये लाल।
मोती बरसाता हुआ अब्र गुहर बार आया॥

---

ख़याले जुल्फ़ से है दीदये पुर आब में साँप।
तेरे दिखलाने को यह बन्द है हुबाब में सांप॥

---

यह इश्क अफ़ई गेसू की देखिये तासीर।
कि रात भर नज़र आते हैं मुझको ख्वाब में सांप॥

---

सब खींचते हैं नालये गर्म इसके वास्ते।
इक शमआ ने लगाई है यह अन्जुमन में आग॥
न कोई रहा है न कोई रहेगा।
फ़कत एक नामे निकोई रहेगा॥

---

सब्र आ हो जायगा, ऐ नासिहो।
थक के खुद हो जाएगा नाचार दिल॥
भड़की गुलों से आतिशे दिले हिजरे यार में।
फुंक जाय बाग़ आग लगे इस बहार में॥

---

गर न हो हासिल किसी से मुद्दआए दिल न हो।
आदमी को रब्बे आला पर तवक्कुल चाहिए॥

---

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



परी व हूर हैं ना जिन्स, क्या, लुत्फ़ आदमीयत का।
बशर हैं हम, बशर से हैं मज़ा अपनी तबीयत का॥
खुदा ने लज़्ज़तें दुनिया में दीं तुम समझते हो।
नतीजा ज़ाहिदो, अच्छा नहीं कुफराने नेमत का॥
जनम भी उसके मजहर है करूं सिजदा न क्यों जौहर।
नजर आता है जो कुछ है नमूना उसकी कुदरत का॥

---

जगाने सुब्ह वालों पर वह बेनक़ाब आया।
उठो भी सुब्ह हुई सर पर आफताब आया॥
तुझ को ऐ शाहे हुस्न क्या देखा।
बखुदा सायए खुदा देखा॥
मुझ तक आई आई बुते शराब उठकर।
जज़्बए दिल को साक़िया देखा॥
वही होता है जो खुदा चाहे।
बारहा हमने आज़मा देखा॥

# १२-मुंशी ज्वाला प्रसाद 'बर्क़'

मुंशी ज्वाला प्रसाद "बर्क़" २१ अक्तूबर, १८६३ ई० को लखीमपुर जिले के मोहम्मदी कस्बे में जन्मे थे। १८७८ ई० में जिला खीरी से हाई स्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की और वजीफ़ा प्राप्त किया। १८८२ ई० में कैनिंग कालेज से बी० ए० की परीक्षा पास की और १८८३ ई० में वकालत की डिग्री प्राप्त की और वकालत प्रारम्भ की। १८८३ ई० में मुंसफी के पद पर आसीन हुए और इस क्षेत्र में उन्नति करते-करते सेशन जज के पद पर पहुंचे थे। २६ मार्च, १९११ को लखनऊ में ताउन की बीमारी से स्वर्गवासी हुए।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



"बर्क" अत्यन्त मेधावी एवं प्रतिभाशाली व्यक्ति थे। वह उर्दू में भी शायरी करते थे और फारसी में भी। वह प्रारम्भ से ही 'अवध पंच' मे प्रकाशित होती रहीं। 'मसनवी बहार' और 'माशूकए फिरंग' जो कि 'रोमियो जूलियट' का अनुवाद है। उनकी शायरी के बेहतरीन नमूने हैं। इनके अलावा 'बर्क' ने बंकिम चन्द्र चटर्जी के उपन्यासों का अनुवाद बड़ी सरल और हृदयग्राहिणी भाषा में किया है। इसके अतिरिक्त उन्होंने शेक्सपियर के नौ या दस ड्रामों का अनुवाद भी सरल उर्दू भाषा में किया है। इनकी मित्रमंडली में पं० त्रिभुवन नाथ 'हिज्र', मुंशी सज्जाद हुसैन, मुंशी अहमद अली 'शौक' आदि का नाम उल्लेखनीय है।

## मसनवी "बहार"

हिन्दू शायरों की लिखी हुई साहित्यिक मसनवी में 'गुलजारे नसीम' के बाद मुंशी ज्वाला प्रसाद 'बर्क' की 'मनसवी बहार' को विशेष लोकप्रियता प्राप्त हुई। सर सैय्यद अहमद खाँ ने भी इस मसनवी की भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

इस मसनवी में लखनऊ की टकसाली जबान और मुहावरों वगैरह का सर्वोत्तम नमूना मिलता है। अलंकारों का प्रयोग भी सुन्दर हुआ है। बहार के आगमन का सजीव चित्रण आँखों के सामने आ जाता है। शब्दों का चयन एवं चित्रण तथा प्रयोग 'बर्क' की अपनी विशेषता है। ऐसा मालूम होता है कि नगीने जड़ दिए गए हैं।

## "मसनवी बहार" की काव्य पंक्तियाँ

अठलाती, लजाती, मुस्कराती, किस नाज़ से है बहार आती।
कमसिन, अल्लढ़, हसीन, अनीली, चौथी को दुल्हन नयी नवेली।
बूटा सादह क़द बहार के दिन, उठती कोपल उभार के दिन।
गहना फूलों का ज़ेब तन है, धानी जोड़े पे क्या फबन है।
घूँघट इक नाज़ से निकाले, सेहरा फूलों का मुँह पे डाले।
उतरी गुलशन में जब सवारी सूरज ने आरती उतारी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



गुल ने जरे गुल किया निछावर, सदके हुई अन्दलीब उड़कर।
नहरें भर-भर के लाई पानी, सब्जे ने बिछाया फर्श धानी।
खुशियाँ अशजार ने मनाई, मेवों की डलियाँ लगाई।
मुर्गाने चमन ने गीत गाये, क्या क्या नये जमज़मे सुनाये।

यह मसनवी उपलब्ध नहीं है। मुन्शी ज्वाला प्रसाद 'बर्क' की 'मसनवी बहार' को उर्दू साहित्य के इतिहास में पंडित दया शंकर नसीम की 'गुल्जारे नसीम' की भाँति एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

# १३-मुन्शी छन्नू लाल 'दिलगीर'

मुन्शी छन्नूलाल 'दिलगीर' सक्सेना कायस्थ तथा लखनऊ के निवासी थे। वह नवाजिश हुसेन खाँ और 'नासिख' के शिष्य थे। वह तरुण अवस्था में बहुत ही रसिक एव मस्त स्वभाव के व्यक्ति थे। उन्होंने इस्लाम धर्म अंगीकार कर लिया था और सम्भवतः १७९६ ई० में पैदा हुए थे।

'दिलगीर' ने मर्सिया को ही अपना क्षेत्र बनाया। उस समय चार मर्सिया कहने वाले नामवर लोग थे—मीर ज़मीर खलीक, दिलगीर' और मियाँ 'फसीह'। 'दिलगीर' की जबान में हकलाहट थी इसलिए मजलिस में मर्सिया नहीं पढ़ते थे। मियाँ फसीह 'दिलगीर' को अपने मर्सिया दिखाते थे और उचित सलाह-मशविरा करते थे।

'दिलगीर' मर्सिया के क्षेत्र में उस्ताद माने जाते थे। इनके मर्सिए चार बृहद भागों में प्रकाशित हुए हैं।

हजरत इमाम हुसैन मदीना छोड़ने की तैयारी कर रहे हैं। हजरत फातिमा सुगरा को बीमारी की वजह से मदीने में ही रहने देते है। यात्रा की तैयारियाँ पूरी हो चुकी है। सभी बीबियां महमलों। ऊँट की सवारी। में बैठ चुकी है। हजरत फातिमा सुगरा को बहुत अफसोस होता है कि बाबा जान सबको अपने साथ लिए जा रहे है लेकिन मुझे यहाँ छोड़े जाते है। वह अपनी बहन हजरत सकीना से मालूम करती हैं कि मेरा नाम भी जाने वालों में हैं कि नहीं। इस सम्बन्ध में हजरत फातिमा और हजरत सकीना की बात-चीत दिलगीर 'की कलम की ज़ुबान से सुनिये—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



कहने लगीं सकीना से सुग़रा पुकार कर।
उठकर पिदर के ज़ानू से आओ जरा इधर।।
बीमार को भुला दिया क्यों तुमने इस क़दर।
यह आज क्या है तुम जो मिलाती नहीं नज़र।।

तुमने सफ़र से पहले ही तोड़ी कमर मेरी।
क्यों आज सुबह आके न पूछी खबर मेरी।।

आई सकीना पास तो सुगरा ने यह कहा,
बैठे बिठ ये बहना यह कैसा सफ़र हुआ।
जाते है किस तरफ़ को पिदर माजरा है क्या,
बाबा ने मेरा नाम लिखाया नहीं लिखा।

किस किस की हमरहीं पे रज़ाए इमाम है।
इस बन्द में लिखा हुआ किस किस का नाम है।।

बहना बताओ ज़िक्र मेरा भी सुना है कुछ।
मेरे भी हक़ में बाबा ने मुंह से कहा है कुछ।।
चलना न चलना मेरा भी साबित हुआ है कुछ।
पोशीदा है यह राज़ कि तुम पर खुला है कुछ।।

कैसा सफ़र है यह जो फुफीजान रोती हैं।
यह क्या सबब है बातें जो कान में होती हैं।

---

## ग़ज़ल का एक नमूना

मुअत्तर उसके बहावे से बस कि आब हुआ।
हुबाबे बहर हर इक शीशए गुलाब हुआ।।

---

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



किसको दिखाऊं मैं यह भला माजराये चश्म ।
नासूर बन गये हैं अज़ीजों बजाय चश्म ।।
बातें तेरी सुना करें और देखें तेरी शक्ल ।
दारूये गोश यह हैं तू वह मुद्दआये चश्म ।।
आये तरफ तुरा जो वह खुश चश्म बाग़ में :
नर्गिस के दस्ते कीजिये तू भी फिदाये चश्म ।

## १४-चौधरी जगत मोहन लाल 'रवाँ'

'रवाँ' की गणना आधुनिक युग के चोटी के शायरों में होती है । वह चौदह जनवरी १८८९ को पैदा हुए थे और श्रीवास्तव कायस्थ थे । इनके पिता का नाम चौधरी गंगा प्रसाद था जब रवां ९ वर्ष के थे तभी इनके पिता का देहान्त हो गया । इसलिए इनकी पड़ाई-लिखाई की व्यवस्था इनके बड़े भाई कन्हैयालाल न की । १९०७ में मौराबां हाईस्कूल से इन्होंने इन्ट्रेन्स की परीक्षा प्रथम श्रेणो में पास की । कैनिग कालेज लखनऊ से बी०ए० और एम०ए० (अंग्रेजी) की परीक्षाए पास की । यह इतने कुशाग्र बुद्धि के थे कि सदैव प्रथम श्रेणी में पास होते रहे । पाठ्य पुस्तको के अतिरिक्त अंग्रेजी और फारसी का कोई ऐसा प्रसिद्ध शायर न रहा होगा कि जिसके कलाम का अध्ययन इन्होंने न किया हो ।

१९१६ ई० में एल०एल०बी० की परीक्षा पास करके स्थायी तौर पर उन्नाव में रहने लगे और वकालत आरम्भ की । कुछ ही समय में इनकी गणना लखनऊ और उन्नाव के विशिष्ट वकीलों में की जाने लगी ।

'रवाँ' एक बहबी शायर थे । शायरी की ओर बचपन से ही उनका रुझान था । शिक्षा के साथ-साथ शायरी को भी बल मिलता गया । अध्ययनशीलता और दार्शनिकता ने उनकी शायरी को उच्च शिखर पर पहुंचा दिया । १९०६ में वह मो० अज़ीज़ लखनवी के शागिद हुए और उन्नाव जैसे छोटे शहर में शायरी का बातावरण पैदा कर दिया । साहित्यिक वातावरण से बिहीन इस नगर से क्षुब्ध होकर उन्होंने कहा था—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



गुले बीराना हूँ कोई नई है कद्र दां मेरा।
तुही देख ऐ मेरे खल्लाक़ हुस्ने रायगाँ मेरा ।।

'रवाँ' ने अधिकतर नज्में, गज़लें और रुबाइयाँ लिखी है। उनकी नज्में प्राकृतिक वरदान, नैतिक, ऐतिहासिक एव धार्मिक हैं। उनकी नज्मों का उद्देश्य सामाजिक बुराइयों को दूर करना है और मानव चरित्र को ऊँचा उठाना है। सम्भवतः उन्होंने राष्ट्रीय एवं राजनैतिक नज्में नहीं लिखीं किन्तु उनके मन में मानवता के प्रति अथाह प्रेम हिलोरें ले रहा था। वह चाहते थे कि मनुष्य मानवीय गुणों से विभूषित हो। इसी उद्देश्य से प्रेरित होकर उन्होंने 'लावारिस बच्चे', 'शौहर कुश हसीना', 'अज्मते तौबा' और 'दो आइने' इत्यादि नज्में लिखीं। प्राकृतिक विषयों पर भी उन्होंने 'सरुदे इश्क', 'तितली' और 'गंगा के किनारे की शाम' जैसी लुभावनी नज्में लिखी है। इन नज्मों से उनकी काव्य प्रतिभा का परिचय मिलता है।

मो० अजीज लखनवी ने 'रवाँ' की रुबाइयों के बारे में कहा था कि विषयों के आधार पर रुबाइयाँ उर्दू भाषा की वृद्धि में सहायक हैं। 'असर' लखनवी ने कहा था कि यदि 'रवाँ' का प्रयास जारी रहा तो वह व्यक्ति उर्दू का 'उमर खैय्याम' कहलाने का हकदार होगा।

'रवाँ' की अधिकाँश रुबाइयाँ ऐसी हैं जो पूर्व और पश्चिमी साहित्य, सभ्यता और संस्कृति के गहन अध्ययन की उपलब्धि है।

नज्म के अतिरिक्त इनकी काव्य प्रतिभा गज़लों में मुखरित होती है। उनकी गजलों में दार्शनिक और नैतिक समस्याओं का विवेचन भी है। परन्तु गजल की आत्मा से विलग होकर वह कहीं-कहीं आध्यात्मिक सूफी विचारधारा की झलकियाँ हैं! 'रवाँ' की गज़लों में वेदना एव पीड़ा अधिक है, जो प्रत्येक शायर या कवि में नहीं होती!

'रवाँ' की शायरी का एक संकलन १९३८ में 'रूहे रवाँ' के नाम प्रकाशित हो चुका है तो २१२ पृष्ठों पर आधारित है। 'रवाँ की रुबाइयों का एक संकलन लाहौर से प्रकाशित हो चुका है। वह एक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



मसनवी 'गौतम बुद्ध' के शीर्षक से लिख रहे थे। यदि वह पूरी हो गई हुती तो उसका भी उर्दू साहित्य में वही स्थान होता जो अंग्रेजी में 'लाइट आफ एशिया' का है, परन्तु क्रूर काल को यह स्वीकार न था। उसने ४५ वर्ष की आयु में उन्हें हमसे छीन लिया।

नज्म 'दो आइने एक नैतिक नज्म है, जिनमें एक हिन्दू विधवा। स्त्री के चरित्र को बहुत ही उच्चकोटि के रूप में और अत्यन्त कारुणिक रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह नज्म एव नवयुवक को हिन्दू विधवा से शादी करने की प्रेरणा देता है—

ज़िन्दगी क्या है फ़कत वक़्त का अच्छा कटना।
और तम्हीदे अजल रूह की राहत घटना॥
सिक्कए हुस्न बनाया क्या चलने के लिए।
न कि यूँ आतिशे फुरकत में पिघलने के लिए॥
शमआ बेकार हैं जब उससे उजाला न हुआ।
हुस्न किस काम का गर देखने वाला न हुआ॥
रूह क़ालिब से पसे मर्ग जुदा होती है।
किसको मालूम कहां जाती है क्या होती है॥
जान भी दे दें अगर रंज उठाने वाले।
फिर पलट कर भी नहीं देखते जाने वाले॥

---

दो पहर की वह उदासी वह पहाड़ ऐसे दिन।
कटे कट जाए अकेले यह भला कब मुम्किन॥
दिन अगर कट भी गया रात कटेगी क्योंकर।
जिसकी इक इक घड़ी तूल में रोज़े महशर॥
साथ लाती है बहारों के झमेले बरखा।
कैसे काटोगी मेरी जान, अकेले बरखा॥
झोंके इठलाते हवा के जो कभी आयेंगे।
तीर की तरह कलेजे में उतर जायेंगे॥
आके बरसेंगी जो घनघोर घटायें बन में।
तीर बन बन के हर इक बूंद लगेगी तन मे॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



ज़िन्दगी वह है जो हंस खेल के खुश होके कटी।
क्या कटी उम्र अगर ग़म में कटी, रो के कटी ॥

विवाह के इस प्रस्ताव पर विधवा का उत्तर "रवाँ" के कलम से सुनिये

आपने खत तो बहुत खूब लिखा है लेकिन।
सख्त अफ्सोस, कि इक़रार नहीं है मुम्किन।
'जान' कहना किसी बेगाने को दस्तूर नहीं।
यह करम ऐसी इनायत मुझे मंजूर नहीं ॥
दिल नहीं, टूटे हुए दिल से लगाने क़ाबिल।
मैं सियह बख़्त नहीं प्यार जताने काबिल ॥
साथ स्वामी के, मेरे दिल की तरंगें भी गई।
मेरे अरमां भी गये मेरी उमगें भी गई ॥
बिजली तड़पेगी तो समझूंगी मेरा दिल तड़पा।
कभी बादल जो बरसते हुये आयेंगे नज़र।
क्या सुनायेंगे पपीहे मुझे बानी अपनी।
मेरा ही दुख तो कहेंगे वह जबानी अपनी ॥
कूक कोयल की सुनूंगी तो यह समझूंगी ज़रूर।
कि जुदाई से हैं हम जिन्स के अपने मजबूर ॥
इश्क़ का कमज़र्फ करते हैं जो इज़हार।
चार दिन भी नहीं ऐसों की मुहब्बत को करार ॥

-----

"चित्रकूट" एक धार्मिक नज़्म है। जिनमें "राम कथा" का एक दृश्य प्रस्तुत किया गया है। भरत चित्रकूट में श्री रामचन्द्र से एक बड़े जन समूह के साथ भेंट करने आते हैं। उनको देखकर लक्ष्मण को ईर्ष्या होने लगती है। इसलिए कहते हैं :--

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



आया नज़र जो दूर से उड़ता हुआ गुबार।
लक्ष्मन के दिल को होने लगा सख्त इज़्तिरार॥
की अर्ज़ यूँ हुज़ूरे शहे आसमाँ बक़ार।
कुछ हो रहे हैं खतरे के आसार आशकार॥
तसकीं हुसूले तख़्त से शायद हुई नहीं।
यह फ़ौज है भरत की मेंरे दिल को है यक़ीं॥
दुश्वार हैं यह काम कुछ आसाँ मगर नहीं।
शायद हमारे ज़ोर की उनको खबर नहीं॥
गो मेरे पास नाम को तेग़ो तबर नहीं।
हूँ ज़ेरे साया आपके कुछ मुझको डर नहीं॥
गर हुक्मे जंग मुझको शहे ज़ुलकराम हो।
दम में भरत को फ़ौज़ की तुर्की तमाम हो॥

---

## ग़ज़लों का चयन

हिर्से दुनियाँ में मगर इन्सान गिरफ्तार न हो।
दिल पशेमान न हो रूह कभी बेज़ार न हो॥

---

नज़अ में आके खुला है आलमे फ़ानी का राज़।
ऐ मेरी जाती हुई दुनिया बड़ा धोखा हुआ॥

---

यक़ीनन वसअते इम्काने इंसानी यहाँ तक हैं।
कि मैदाने अमल इसका ज़मीं से आसमाँ तक है॥

---

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



जमीं पर बार हूँ और आसमाँ से दूर ऐ, मालिक।
नहीं मालूम कुछ आखिर ठिकाना है कहाँ मेरा।।
बुतों का जिक्र करते हैं खुदा की याद करते हैं।
फ़रिश्ते भी नहीं करते जो आदम ज़ाद करते हैं।।
जरा कमी तो करें शाम की उदासी में।
चिराग़े गौर न दें साथ रात भर न सही।।
रख दिया हिम्मत ने बढ़कर हद्दे मंजिल पर कदम।
मैं अभी शिकवा तराजे गरदिशे अय्याम था।
अब चमन में रह के भी लुत्फे चमन हासिल नहीं।
हाँ मगर जब तक चमन में थे क़फस बदनाम था।।
कफस में और यह सैयाद ने मुझ पर सितम ढाया।
नजर के सामने ही ला के शाखे आशियाँ रख दी।।
दिले इन्साँ में जब फ़ितरत ने रक्खी कुव्वत ला खों।
तो इक कमजोरिये उल्फत बतर्जे इम्तिहाँ रख दी।।

## रुबाइयाँ

हिर्से हविसे हयाते फानी न गई।
इस दिल से हवाए कामरानी न गई।
है सगे मजार पर तेरा नाम "रवाँ"।
मरकर भी उम्मीदे जिन्दगानी न गई।

---

आलूदये मासियत है दामन मेरा।
जल जाने का मुस्तहक है खिरमन मेरा।
बेकार है शिकवा अहले दुनिया का "रवाँ"।
बढ़कर नही कोई मुझसे दुश्मन मेरा।

---

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



नौरोज़ है गर्क़ बादो मीना कर दे।
मेरा अरमान आज पूरा कर दे॥
पी लूं मैं शराब भर के उसमें साकी।
तू कासए आसमाँ को सीधा करदे॥

———

हाले दिल कुछ खराब सा रहता है।
यानी एक पेचो-ताब सा रहता है॥
खुलता नहीं है राजे कुलफत लेकिन।
हर वक्त इक इज़तराब सा रहता है॥

———

# १५-मौजी राम "मौजी"

मुन्शी मौजी राम "मौजी" के पिता का नाम दीवान छत्रपति राय था। वह श्रीवास्तव कायस्थ थे और लखनऊ के निवासी थे। उनके पिता अवध के नवाब सआदत अली खाँ के यहाँ नौकर थे। स्वयं मुन्शी मौजी राम सॉंडी में कानूनगो थे। गुलाम हम्दानी "मुस्हफी" के शागिर्द थे। वह स्वयं बहुत विद्वान व्यक्ति थे। उर्दू और फारसी दोनों में शायरी करते थे। उनकी गणना भी एक ऊंचे दर्जे के उस्तादों में की जाती थी। उनके शागिर्दों का क्षेत्र भी बड़ा व्यापक था उर्दू और फारसी दोनों को मिलाकर उनके सात दीवान हैं। उनके प्रसिद्ध शिष्यों में मुन्शी दया कृष्ण "रैहां" का नाम उल्लेखनीय है।

दीवान दया कृष्ण "रैहां" ने अपने गुरु मौजी राम के गुणों की प्रशसा इन शब्दों में की है!

"मौजी" से करो मश्के फने शेर में हासिल।
"रैहां" कोई उस्ताद फिर ऐसा न मिलेगा॥

———

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



रंईं हो नाम शेर का कम लखनऊ से क्या।
"मौजी" तो हैं हयात अगर 'मुस्हफी नहीं ॥
'रैहां' फ़ने शेर में जो था उस्ताद।
'मौजी' शागिर्द मुशहफ़ी का ॥

मौजीं सिर्फ नाम के मौंजो थे। यह शब्द उनकीं वास्तविकता का प्रतीक न था। उनकी शाएरी प्रेम की भावना पर आधारित थी कहीं-कहीं सूफ़ी विचार धारा की भी झलक मिलती है। भाषा पर इनका अधिकार था इनकी शायरी उच्च स्तर की है।

मुस्लिम धर्म के प्रवर्तकों के प्रति भी इन्होंने अपनी श्रद्धांजलि के पुष्प अर्पित किए हैं जो उनकी धार्मिक सहिष्णुता का प्रतीक है।

"मौजी" की निम्नलिखित रुबाई बहुत प्रसिद्ध है। इस एक रुबाई के कारण वह उर्दू शायरी के संसार में अमर हा गये।

वस्ल भा देखा जुदाई देखली, हक़ ने जो सूरत दिखाई देख ली।
दिल के आईने में है तस्वीरेयार, जब ज़रा गर्दन झुकाई देख ली।

## ग़ज़ल

थे गर्द से भरे जो ग़रीबुल वतन के पाँव,
शबनम धुला रही हैं नसीमे चमन के पाँव।
आई जो उसके आने से गुलशन में फ़सले गुल,
बुल-बुल ने चूम चूम लिए गुलबदन के पाँव।
खोली जो उसने जुल्फें गिरह गीर की रसन,
ज़ाहिद के हाथ बाँध लिए बरहमन के पाँव।
मानी न एक बात सेहर तक शबे विसाल,
मेरा सर नियाज़ था ओर सीमतन के पाँव।
जाऊँगा तेशा लेकर सूये बेसुतूँ अगर,
ठहरेंगे सामने मेरे कब कोहकुन के पाँव।

———

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



आवे जो सवा बाग़ में गाहे तेरे कू से,
बुलबुल को हो नफ़रत गुले नवखेज़ की बू से।

---

तरकश कमर से अपनी अगर तुम लगा चुके,
हम भी निशाने तीरे वला दिल वना चुके।

---

इक ज़ख़्म से जो मैं न मरा उसने यह कहा,
क्या ऐसे सख्त जान पे तलवार तोड़िये।

---

क्या कहूँ तुझसे जो हालत मेरे बीमार की है,
तादमे मर्ग तमन्ना उसे दीदार की है।

---

## १६-मुंशी गुर सहाय 'मुल्तजी' काकोरवी

मुन्शी गुरु सहाय "मुल्तजी" श्रीबास्तव कायस्थ और लखनऊ ज़िला के काकोरी कस्बे के रहने वाले थे। वह कलेक्टरी ज़िला उन्नाव में नाज़िर थे। कृष्ण जी के बड़े भक्त थे और पेशन प्राप्त करके बृन्द्र बन में एकान्तवास करते रहे। १९०९ ई० के लगभग स्वर्गवासी हुए। उर्दू, फारसी, हिन्दी, संस्कृत भाषाओं के पडित थे।

"मुल्तजी" की गौरव शाली कृति "सुदामा चरित्र" है। जिसे उन्होंने सम्वत् १९६६ बिक्रमी अर्थात् १९०९ ई० में लिखी थी। अभी तक सुदामा पर लिखीं गयी पुस्तकों में यह सर्वोत्तम है। सुदामा चरित्र मुसद्दस के रूप में है। जिसके बीच बीच में गज़लें, गीत, दोहे और सोरठा आदि भी लिखकर कविता को रोचक और प्रभावशाली वना दिया है। यह कविता ८६ पृष्ठों पर आधारित है। सुदामा चरित्र एक आख्यात्मक वाटिका है जिसमें कवि ने हिन्दी, उर्दू, और फ़ारसी के आकर्षक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



पुष्पों की क्यारियाँ सजाई हैं जिसकी सैर से आत्मा को शान्ति प्राप्त होती है। काव्यकला के दृष्टि से भी यह खण्डकाव्य अत्यन्त प्रशंसनीय है।

## सुदामा चरित्र

एक हरि भक्त बरहमन था सुदामा मफ़लूक।
हर्फ़ दौलत के वह रखता था जबीं से महकूक।
ऐशो इशरत थी जमाने की सबं उससे मतरूक।
कृष्ण के ध्यान में लगती थी उसे प्यास न भूक॥

रात दिन कुंजे क़नाअत में गुज़र करता था।
ज़िन्दगी ज़ोहदो रियाज़त में बसर करता था॥
फ़िक्र थी उसकी खवासी में, अलम खिदमतगार।
फ़क्रो फ़ाक़ा दो अदादार थे फ़रमाँ बरदार॥

बोरिया मसनदो क़ालीन थे हम कसंगे हिसार।
गर्म रहता था ग़मो दर्द का हरदम दरबार॥
खामुशी लब पे जो थी मेहरे सुलेमानी थी॥
ज़ब्त से बाबे तवक्कुल की निगहबानी थी॥

ख़िरका बरदोश, न तन ज़ेब न कमख्वाब सेकाम।
कमली रहती थी दोशाले की तरह सर पे मुदाम॥
इल्म था उसकी अमलदारी में और हिल्म गुलाम।
दीनो व ईमाँ से तनो जाँ का था अंजाम मुदाम॥
तख़्ते गद्द उसके लिए साअते बीराना था।
झोपड़ा लखलखए जुहद से खसखाना था॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



एक दिन सुशीला (सुदामा की पत्नी) ने अपनी निर्धनता की शिकायत सुदामा से की इस शिकायत का बड़ा सजीव वर्णन "मुल्तजी" ने किया है।

एक दिन उसने कहा ऐ शाहे वे वर्गोनवा।
घर में लोटा है न थाली न पतीली न तवा॥
आपके होते यह तकलीफ नहीं मुझ को रवा।
इस मरज़ की नहीं क्या आपकी हिकमत में दवा।
फ़क्रो फ़ाक़ा से तो मोहलिक कोई आज़ार नहीं।
पर यह हैरत है कि तुमको खलिशे खार नहीं॥

——————

तुम तो सहराए क़नाअत के हुए गोशा गुजीं।
मैं खिदमत के लिए आपकी एक परदा नशीं॥
दुख कहाँ तक यह जमाने के सहे जाए हज़ीं॥
हैफ सद हैफ फ़लक दूर है और सख्त ज़मीं॥
क्या गिला कीजिए इस बेसरो सामानी का।
अपनी बदबख्ती का और आपकी नादानी का॥

——————

इस पर सुदामा अपनी पत्नी सुशीला को सन्तोष, पूजा, उपासना की प्रेरणा देते हैं। इस विषय पर "मुल्तजी" का वर्णन देखिये।

तुझको है रग़बते ज़र, मुझको नहीं उसकी हवस।
तुझको है माले गुहर, मुझको नहीं उसकी हवस॥
तुझको दरकार है घर मुझको नहीं उसकी हवस।
तेरी राहत पे नज़र, मुझको नहीं उसकी हवस।
मैं किसी रखते मसर्रत से नहीं हूँ नाकाम।
मिल गया है मुझे जिस रोज़ से हीरा हरिनाम॥

——————

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



वह वह हीरा है कि दिन रात दरख़्शाँ है यह।
दुर्रेतुलताजे शहे किबरे अरफ़ां है यह॥
ज़ीनते नौरतने साइदे ईमाँ है यह।
क़शक़ये नासिये माह जबीनां है यह॥
छोड़ कर उसको पड़ी हिर्सो हवा के पाले।
कुछ भी ग़ैरत हो जो तुझको तो यह हीरा खाले॥

---

फ़िक्र मे उम्रें गराँ माया तू क्यों खोती है।
इस क़दर ज़र के लिए ज़ार तू क्यों होती है॥
गौर कर देख तू हरि नाम भी क्या मोती है।
इसका दुख कुछ भी नहीं सुख के लिए रोती है॥
सूद मन्दे तू न ई आहो फ़ुग़ाँ ख़्वाहद बूद।
आँचे बर लोहे नविश्त अस्त हमां ख्वाहद बूद॥

ये अश्आर फ़ारसी के हैं जिसका अर्थ है कि तुम्हारे रोने-धोने से कुछ लाभ नहीं होगा। जो विधाता ने भाग्य में लिख दिया है वही भोगना पड़ेगा।

सुदामा माँगने की बुराई सुशीला से यूं बयान करते हैं :--

माँगना खूब नहीं जान, मेरा कहना मान।
क्यों बनी जाती है नादान, मेरा कहना मान॥
इससे घट जाती है सब शान, मेरा कहना मान।
माँग है सर पे तेरे, माँग तो क्या देता है।
माँग छूटे हुए बालों को बंधा देती॥

---

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



सुशीला माँगने की सार्थकता सिद्ध करते हुए जो तर्क प्रस्तुत करती है। उसके सम्बन्ध में "मुल्तजी" के केवल दो बन्द पढ़िए।

माँगना उनसे नहीं ख़ूब जो हों आपसे कम।
माँगना उनसे नहीं ख़ूब जो करते हैं सितम॥
माँगना उनसे नहीं खूब जो रखते हों अलम।
माँगना उनसे नहीं ख़ूब जो हों नीच अधम।
माँग वह शै है कि मोती से भरी जाती है।
अपने दूल्हा की दुल्हन माँग से कहलाती है॥

---

चाहता कौन नहीं नामवरी दुनिया में।
कौन है बारे तअल्लुक से बरी दुनिया में॥
कौन करता नहीं दरयूज़ा-गरी दुनिया में।
तब्अ नेएमत से कहो किसकी भरी दुनिया में॥
ऐनै दुनिया में सदफ तश्ना रहा करती है।
अब्र को देख के हसरत से घुटा करती है॥

## सुदामा चरित्र की ग़ज़लों के कुछ शेर

ज़मीं के पीसने को को, चाल है चर्ख़े सितमगर की।
कभी इसके सिवा चलती न देखी आसिया घर की॥
तिही रहता नहीं गौहर से दमभर दामने हसरत।
सख़ावत आबरू है यह हमारे दीदए तर की॥
निगाहे लुत्फ से हो जिसके बेग़म उम्र भर रहना।
रवा है कीजिए ख़िदमत जो ऐसे कीमियागर की॥
ग़में दौराँ से क्या ग़म अगर ज़ोरे फ़लक हरदम।
बसी है 'मुल्तजी' के दिल में सूरत श्याम सुन्दर की॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



आहन है गिरिया वक्त सियह कुछ अलम नहीं।
संगे दरे निगार भी पारस से कम नहीं॥
दिलवर हो दिलवरी पे तो वे दिल हो किस लिए।
है यार ग़म गुमार तो फिर कुछ हमको ग़म नहीं॥
सद शुक्र 'मुल्तजी' कि बजुज़ आस्ताने श्याम।
अपना सरे नियाज कहीं और खम नहीं॥

## १७-मुंशी शंकर दयाल 'फ़रहत'

मुंशी शंकर दयाल 'फ़रहत' लखनवी के पिता का नाम पूरनचन्द्र सक्सेना था वह शायरी के क्षेत्र में जाने माने उस्ताद थे। वह राय जवाहर सिंह 'जवाहर' के शिष्य थे। उनके पूर्वज ज़िला मैनपुरी के कस्वा भोगाँव के कानूनगो थे। उनके दादा मुन्शी जहानसिंह फ़रुखाबाद में आकर बस गए। उनके पिता मुन्शी पूरन चन्द्र काफी समय तक लखनऊ के नवाबों और रईसों की सेवा में सम्मानित पदों पर रहे।

मुन्शी शंकर दयाल 'फ़रहत' लखनऊ में सम्भवतः १८४४ ई० में पैदा हुए। उर्दू, फारसी, अंग्रेजी, और हिन्दी भाषा का ज्ञान प्राप्त कर वह अमरीकन मिशन लखनऊ के छापेखाने में मुन्सरिम के पद पर एक अर्से तक कार्यरत रहे। उनके शिष्यों की संख्या बहुत अधिक थी, जिनमें मुन्शी ललता प्रसाद 'शफ़क़' मुन्शी राम सहाय 'तमन्ना' और मुन्शी द्वारिका प्रसाद 'उफ़क़' इत्यादि बहुत ही प्रसिद्ध शायर हुए हैं।

खुश्तर की भाँति फ़रहत की स्वाभाविक प्रवृत्ति धार्मिक आख्यायिकाओं की और अधिक थी। अपनी इसी प्रतिभा के आधार पर १८६६ ई० में रामायण को कविता में लिखकर काव्य जगत में अपने यश अर्जित किया। इन्होंने रामायण के अतिरिक्त शिवपुराण, प्रेम-सागर, जानकी विजय, गणेश पुराण आदि को भी कविता के रूप में प्रस्तुत किया है। यह पुस्तकें जनता में लोकप्रिय हुईं।

'विष्णु सहस्र नामक पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



सारी पुस्तक एक हजार नामों पर आधारित है और इन नामों को इस तरह कबिता के रूप में प्रस्तुत किया गया है कि आरोह और अवरोह में बाधा उपस्थित नहीं होती है और इसमें एक शब्द भी अधिक या भरती का नहीं मालूम होता।

रामायण फरहत के कुछ अंश इस प्रकार हैं —

सीता जी श्री रामचन्द्र जी के साथ बन-गमन के लिए तत्पर हैं और रानी कौशिल्या से आज्ञा चाहती हैं, परन्तु कौशिल्या इस बात पर अड़ी हुई हैं कि वह राम के साथ न जायें क्योंकि जंगल में जाना अपने ऊपर तबाही व बर्बादी लाना है।

जनाबे जानकी ने जब सुना हाल।
तो जोशे गिरयाँ से आँखें हुई लाल।।
हुई आसाइशे खातिर फ़रामोश।
उड़ा मौजे हवा पर तायरे होश।
न था ज़ब्ते शकेबाई का यारा।
हुई शौहर की .फ़ुरक़त नागवारा।।
हया ने आके गो दामन लिया थाम।
मगर जोशे मुहब्बत ने किया काम।।
ख़याल आया कि हमराही में रहिए।
सदा क्नके हवा ख्वाही में रहिए।।
पए पाबोसिए खुश दामने खास।
हुई हाजिर बराए लुत्फो-अखलास।।
कहा मुझको भी इरशादे सफ़र हो।
कि तसकीने दिलों जानों-जिगर हो।।
सुनो जिस दम यह खुशदामन ने गुफ्तार।
किए दामन के पुर्जे जेब के तार।।
कहा रोकर कि ऐ सरमायए ऐश।
बनाए नाज़ के पैराए ऐश।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



तुम्हीं हो रौनक़े काशानऐ दिल।
तुम्हीं नूरे चिराग़े खानऐ दिल॥
मकाने बादशाही में करो चैन।
रहो दिल में मिसाले मर्दुमे ऐन॥
सताऐ संगो नामूसे शहन्शाह।
करो ग़ारत न बन में ज़के हमराह॥
सफ़र में हासिल नीम ब जर हैं।
हक़ीक़त में सफ़र सिस्ले सफ़र है॥
कहाँ पाए हिनाए रश्के गुलज़ार।
कहाँ नश्तर सिफ्त नोके सरेखार॥
लगे गुल पाये नाज़ुक में जो गड़ जाय।
जबीं पर चीं शिकन अबरू पे पड़ जाय॥
गराँ है जबकि खुशबूऐ गुलेतर।
सहोगी कब गुबारे बादये सर सर॥

धनुष तोड़ने के अवसर का चित्रण देखिये :—

धनुष को तोड़कर फेंका ज़मीं पर।
अंधेरा छा गया अर्शे बरीं पर॥
हुआ आसारे महशर मच गया शोर।
छुपे गोशों में मुर्ग़ो माहियो मोर॥
परिन्दों के उड़े हाथों के तोते।
यका एक चौंक उठे दरिया से सोते॥
जो मन में देवता फूले जुज़े कुल।
तो की अर्जे फ़लक से बारिशे गुल
फड़क उठे जनक, सीता हुई शाद।
खुशी, से खानए खातिर था आबाद।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

# १८-नौबत राय 'नज़र'

नौबत राय 'नजर' लखनऊ के निवासी और जाति के कायस्थ थे। इनके पिता का नाम मुन्शी उल्फ़त राय 'उल्फत' था, जो बहुत ही सम्पन्न व्यक्ति थे और फारसी-अरबी के बहुत विद्वान थे। अंग्रेजी भाषा के भी माहिर थे। उल्फत राय के तीन बेटे थे जिनमें नौबत राय नज़र मंझले बेटे थे। जब नजर पांच ही वर्ष के थे तभी उनके पिता का देहान्त हो गया। अतः उनका पालन-पोषण नाना उमराव सिंह ने किया। वहाँ उनका जीवन बड़े लाड़-प्यार तथा ऐश्वर्य में बीता। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही हुई, फिर उन्हें अंग्रेजी की शिक्षा दिलाई गई। उनके बारे में केवल इतना पता लगता है कि उनका प्रवेश मिशन स्कूल नख्खास में हुआ। लेकिन यह पता नहीं चल पाया कि मिशन स्कूल में उन्होंने किस कक्षा तक शिक्षा पाई। अंग्रेजी के उपन्यासों के अनुवाद से उनकी अंग्रेजी के असाधारण ज्ञान का पता लगता है।

शेर व शायरी तो उन्होंने बहुत पहले ही प्रारम्भ कर दिया था। वे आगा मज़हर के शिष्य थे। चित्रकला, सगीत और नृत्य आदि का भी शौक़ था। जब इनके ससुर का देहान्त हो गया तो यह इलाहाबाद चले गये। वहाँ इन्डियन प्रेस से निकलने वाले मासिक पत्र "अदीब" के सहायक सम्पादक बन गये परन्तु कुछ दिनों के बाद पुनः लखनऊ वापस आ गये और यहाँ से कानपुर चले गये और वहाँ मुन्शी दया नारायण निगम से सम्बन्धित हो गये। लखनऊ का नागरिक जो लखनऊ का दिलदादा हो वह किसी दूसरे नगर में नहीं ठहर सकता। साल भर में ही वह फिर लखनऊ वापस आ गये। १९१५ में लखनऊ में एक बहुत भयंकर बाढ़ आयी थी जिसमें तमाम आबादी तितर-बितर हो गई थी।

उन्होंने उसी ज़माने में यह शेर कहा था:—

लखनऊ हम पर फ़िदा और हम फ़िदाए लखनऊ।<br>
क्या है ताकत आसमाँ की जो छुड़ाए लखनऊ॥

जब यह शेर अवध अख़बार के मालिक ने सुना तो इतने प्रसन्न हुए कि उन्होने ५० रु० नक़द और एक सोने की अंगूठी पुरस्कार में दी और उन्हें अवध अखबार में काम करने के लिये जगह भी दी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



नज़र बहुत ही हंसमुख और प्रसन्नचित्र व्यक्ति थे और कठिन परिस्थितियों में भी घबराते न थे। नज़र के कोई अपनी औलाद न थी उन्होंने अपने नाती को गोद लिया था जिसकी मृत्यु बचपन में ही हो गई। नजर ने उसका एक बहुत करुणा पूर्ण मर्सिया 'शोकगीत' लिखा है जिसकी गणना उनकी अत्यन्त प्रसिद्ध कृतियों में की जाती है जिसके कुछ अंश इस प्रकार हैं:—

किधर चले मेरे लख्ते जिगर को ले के अज़ीज़।
कहाँ पे दफ़न की उस नौजवाँ के है तजवीज़॥
किसी को भी नहीं अफ़सोस नेकोबद की तमीज़।
मिलाने ख़ाक में जाता है कोई ऐसी चीज़
गई जो हाथ से नेमत तो क़द्रे नेमत क्या।
मगर ख़ुद उसके मिटने में ऐसी उजलत क्या॥

———

थमो थमो कि इस उजड़े मकाँ का था यह चिराग़।
बहार पर था इसी नौनिहाल से यह बाग़॥
न होगा अब मुझे हासिल कभी जहाँ में फ़राग़।
तमाम उम्र दिले नातवाँ है और यह दाग़॥
फ़ुग़ाने बुलबुले जाँ दिल के पार होती है।
नज़र के बाग़ से रुख़सत बहार होती है॥
हज़ार नाज़ से इस लख्ते दिल को पाला था।
कभी न धूप मे बाहर इसे निकाला था॥
इसी से ख़ानए तारीक में उजाला था।
क़मर था यह तो 'नज़र' इस कमर का हाला था॥

मुझे भी दफ़न करो उसके साथ तुरबत में।
यह किस तरह से अकेला रहेगा ग़ुरबत॥

———

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



अभी और तूल देते गमे इश्क को 'नज़र' हम।
अगर अपनी ज़िन्दगी का हमें एतबार होता।।

------

हो सका हमसे न अपना दिले मुज़तर अपना।
लोग गैरों को बना लेते हैं क्योंकर अपना।।

------

इससे बढ़कर और क्या है सादा लौही इश्क की।
आपने वादा किया और मुझको बावर आ गया।।

------

छोड़ा हर एक ने साथ दमे जुस्तुजूए दोस्त।
एक एक नक्श जादए मंज़िल में रह गया।।

------

खुदा जाने यहाँ तक किस खुशी से दिल को लाया हैं।
उठा कर ले चला हूँ इक जनाज़ा तेरी महफ़िल से।।

------

जिन्दगी की कश्मकश से मर के कुछ पाई नजात।
इससे पहले ऐ नज़र फ़ुरसत कभी ऐसी न थी।।

------

हज़ारों हसरतें मरती भी हैं पैदा भी होती हैं।
बज़ाहिर गो ज़रा सा दिल है लेकिन एक दुनिया है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



'नज़र' अपने समय के माने हुये उस्ताद थे। उनकी काव्य पंक्तियाँ सबूत में प्रस्तुत की जाती थीं। उनके वहुत से मुसलमान शिष्य थे। नौबत राय 'नज़र' अद्वितीय शायर तथा सिद्धहस्त पत्रकार थे।

इनका स्वर्गवास सत्तावन वर्ष की आयु में १९२२ में हुआ था।

## १९-मुंशी राम प्रसाद सक्सेना 'लखनवी'

मुन्शी रामप्रसाद 'लखनवी' नवाब सर मुहसिनुद्दौला की सरकार में दरोगा के पदपर थे। नबाब मुहसिनुद्दौला नवाब गाज़ीउद्दीन हैदर के नाती और नबाब मुहम्मदअली शाह के दामाद थे। नवाव साहब अपने कर्मचारी श्रीराम प्रसाद सक्सेना, लखनवी पर पूरा-पूरा भरोसा करते थे और सभी प्रबन्ध उन्हीं के हाथ में था। हुसैनाबाद के इमाम वाड़े (नवाब साहब ही उसके संरक्षक थे) का पूरा प्रबन्ध वर्षों तक श्रीं राम प्रसाद सक्सेना हीं करते रहे और सभी लोग उनके प्रबन्ध की कुशलता और व्यवहार के प्रशंसक रहे।

### कलाम

हाय इस मेहमाँ सरा से हाथ खाली कर चले।
बारे असियाँ मुफ़्त हम तो अपने सर पर धर चले॥
गौर करके खूब देखा कोई भी अपना नहीं।
ख्वाबें ग़फलत में अबस हम उम्र गाया कर चले॥
गो कि होता है वही लिखा जो है तकदीर में।
हर बशर को चाहिए कुछ काम अच्छे कर चले॥
'राम प्रसाद' उनको जन्नत में मिला जामे तहूर।
तश्ना लब जो याँ से वहरे साकिए कौसर चले॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

# २०--ठाकुर रामेश्वर बख्श सिंह 'एजाज़'

ठाकुर रामेश्वर बख्श सिंह ग्राम सीमा परसरी, ज़िला सीतापुर के ज़मींदार थे। इन्हें शेर व शायरी का शौक़ था। इनकी भाषा साफ़-सुथरी और सरल है। यह हज़रत वसीम के शागिर्द थे।

## कलाम

नाज़ से गोरे गरीबाँ पे है आने वाला।
वह नज़ारों प क़यामत है उठाने वाला॥
देख कर खन्जरे पुरआब तेरा दिल बोला।
कि यहीं मेरी लगी का है बुझाने वाला॥

छक के साक़ी को दुआ देते हैं पीने वाले।
या इलाही रहे आबाद पिलाने वाला॥
दे के मिट्टी मुझे बोला कि मिला खाक में है।
दिल के परदे में मेरा राज़ छिपाने वाला॥

तूने देखी नहीं ए चर्ख़ मेरे चांद की शक्ल।
वह तेरे चाँद को है दाग़ लगाने वाला॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

# २१-अवध बिहारी लाल 'समर'

इनके पिता का नाम कुँवर चंदीं लाल था। इनका जन्म १८५९ ई० में सीतापुर में हुआ था। उर्दू शायरी में अपने पिता के शिष्य हुए और फ़ारसी शायरी के लिए ख्वाजा अज़ीज़ उद्दीन 'अज़ीज़' लखनवी को अपना उस्ताद बनाया। पंजाब यूनीवर्सिटी से फ़ारसी की परीक्षा मुन्शी फ़ाज़िल पास करके आगरा और अवध के विभिन्न स्कूलों में फारसी के अध्यापक रहे। 'कायस्थ समाचार', 'कायस्थ उपदेशक' लखनऊ, 'कायस्थ अख़बार' लखनऊ के सम्पादक रहे। १८९१ ई० से १९२५ तक चर्च मिशन हाई स्कूल लखनऊ में फारसी के अध्यापक रहे। अचानक १९२५ ई० में इनके जवान बड़े बेटे बाबू प्रभु दयाल की मृत्यु का इन्हें ऐसा आघात लगा कि जिनसे यह निर्जीव हो गये और संसार फीका-फीका सा लगने लगा और शेर व शायरी वगैरा से मुँह मोड़ लिया। इनकी फारसी शायरी का एक संकलन 'खयाबाने समर' के नाम से प्रकाशित हुआ है। अवध बिहारी लाल 'समर' का निधन १९३२ ई० में हुआ। 'समर' ने फारसी भाषा के अतिरिक्त उर्दू भाषा में भी थोड़ी बहुत शायरी की है। उनके उर्दू कलाम को संक्षिप्त रूप में यहाँ दिया जा रहा है।

क्यों नहीं गुल को जरूरत तेरी। दिल में रहती है आरज़ू तेरी।

———

रह रह के देखता है तिरछी नज़र से हमको।
खंजर लगा रहा है क़ातिल संभल-सँभल के।।

———

वह शहे हुस्न है उश्शाक़ है नाचीज़ फक़ीर।
इस सबब से उन्हें भाती ही नहीं संगदिली।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

# २२-प्रो० राधेश्याम रस्तोगी 'अहक़र'

प्रो० राधेश्याम रस्तोगी का जन्म १५ अक्तूबर, १९०६ को लखनऊ के सम्पन्न परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम रघुवर दयाल था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही हुई परन्तु कुशाग्र बुद्धि के होने के कारण शीघ्र ही इतनी योग्यता प्राप्त कर ली कि इनका प्रवेश १९१६ में चर्च मिशन हाई स्कूल में कक्षा-६ में हो गया। यह स्कूल उस समय लखनऊ का सर्वोत्तम विद्यालय माना जाता था। वहीं मुंशी एम० सी० राय हेड मास्टर और मुन्शी अवध बिहारी लाल साहब 'समर' फ़ारसी के अध्यापक थे। इन प्रख्यात अध्यापकों की संरक्षता में इन्होंने अंग्रेजी तथा फारसी उर्दू आदि की बहुत अच्छी योग्यता प्राप्त की।

हाई स्कूल की शिक्षा के बाद रस्तोगी साहब ने इन्टमीडिएट और बी०ए० की परीक्षायें पास कीं। इन कक्षाओं में अन्य विषयों के अलावा फ़ारसी विषय भी लिए हुए थे। तत्पश्चात एम० ए० अंग्रेज़ी की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास किया और अंग्रेजी के लेक्चरर हो गये और लम्बे समय तक उस पद पर कार्य करते रहे परन्तु अधिकारियों की मनमानी के विरोध में इन्होंने अपने पद से त्याग पत्र दे दिया था।

श्री राधेश्यान प्रभावशाली वक्ता भी थे। १९३४ ई० में वह यू०पी० काउन्सिल के सदस्य मनोनीत हुए तो वक्ता की हैसियत से उनकी काफ़ी ख्याति हुई।

शेर व शायरी का शौक़ रस्तोगी साहब को प्रारम्भ से ही था और अवध बिहारी लाल 'समर' जैसे उस्ताद को पाकर इनकी योग्यता एवं काव्य क्षमता चमक उठी थी। इनका उपनाम 'अहक़र' था। १९२० ई० से लगभग दस वर्ष तक तो उन्होंने ग़ज़लें लिखीं परन्तु सन १९३० ई० के राष्ट्रीय आन्दोलन से प्रभावित होकर राष्ट्रीय नज़्में लिखीं। इन्होंने उर्दू और फ़ारसी दोनों भाषाओं में शायरी की है।

'फ़क़ीरे बरहना', 'मुश्ते गुबार', 'ख़्वाबो ख़याल', 'नौहा सरदार भगत सिंह आदि इनकी प्रसिद्ध राष्ट्रीय नज़्में हैं। इनकी उर्दू और फ़ारसी नज़्मों का संकलन 'नक्शहाय रंगारंग के नाम से प्रकाशित हुआ है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



प्रो० राधेश्याम रस्तोगी 'अहक़र' का निधन २१ मार्च १९८२ ई० को हो गया।

## कलाम

परेशाँ मुझे देखकर लोग बोले।
सद अफ़सोस यह मुब्तिला है किसी का ॥

---

मजमू लिखे हं उस रुखे ताबाँ के वस्फ़ में।
खुरशीद इक वरक़ है हमारी किताब का ॥

---

ग़लत कहते हैं परवानों के जलने का उसे ग़म है।
रुलाता है तसव्वुर शमा को महफ़िल से जाने का ॥

---

मुशामें जाँ मुअत्तर हो गईं।
नसीमे सुबह लाई नकहते दस्त ॥

---

हमारे खूं की रंगत शोख है रंगे रुखो गुल से।
तमाशाए चमन दिखलाएगी क़ातिल के दामन पर ॥

---

हर बात पर बिगड़ते हो रिन्दों से शेख जी।
सारे जहाँ मे एक मुस्लमाँ तुम्हीं तो हो।।

इसमें ज़िक्रे यार है इसमें खयाले यार है।
अपनी खामोशी भी हमपल्ला है गोयाई के साथ॥

---

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



मुहब्बत में हैं सब्रो—शुक्र के हरचन्द हम क़ायल।
मगर कुछ कुछ कभी लब पर शिकायत आ ही जाती है।

## राष्ट्रीय कविता

तेग़े मुस्लिम भी बराए हिफ़ज नंगो जानो माल।
या बराए क़त्ले बे हुरमाने बेकस खस्ता हाल॥
तेग़े मुस्लिम है बराए दुश्ममाने मुल्के हिन्द।
या बराए मुस्लिमाने सादिक़ाने मुल्के हिन्द॥
तोड़ जन्जीरं गुलामी क़ैद से आजाद कर।
वरना तुफ़ है दीन पर लानत तेरे ईमान पर॥

---

# १३-मुंशी राम सहाय 'तमन्ना'

मुंशीं राम सहाय 'तमन्ना' लखनऊ के नौबस्ता मोहल्ला में १८५४ ई० में पैदा हुए थे। 'तमन्ना' को शायरी की प्रतिभा बंश परम्परा से ही मिली थी। उनके परदादा मुंशी उदय राज 'मतला' और दादा मुन्शी ईश्वरी प्रसाद 'शोंआई' फारसी के उच्चकोटि के शायर थे। 'तमन्ना' के पिता का नाम पूरन चन्द था, जो १९०० ई० में स्वर्गवासी हुए। १३ वर्ष की आयु में 'तमन्ना' अवध के शिक्षा निदेशक के कार्यालय में क्लर्क हुए। शिक्षा बिज्ञान की ओर से उर्दू में एक गज़ट का प्रकाशन प्रारम्भ किया गया था जिसके सम्पादन का भार 'तमन्ना' को हीं सौपा गया था। वह गज़ट उनके सम्पादन में लगभग २७ वर्ष तक निकलता रहा इन सब कर्तव्यों का पालन करते हुए उन्होंने शेर व शायरीं जारी रखी। उन्होंने तेरह वर्ष तक ज़िला उन्नाव में डिप्टी इन्सपेक्टर आफ स्कूल के पद पर कार्य करते रहने के बाद १९१० ई० में अवकाश ग्रहण किया।

'तमन्ना' की शेरो शायरी में बड़ी रुचि थी। वह अपना कलाम अपने मामा श्री शंकर दयाल 'फ़रहत' को दिखाया करते थे। उन्होंने अपने पिता की देख-रेख में तमन्नाई प्रेस स्थापित किया और 'तमन्नाई' नामक एक पत्र का प्रकाशन भी प्रारम्भ किया जो प्रारम्भ से अन्त तक कबिता में होता था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


'तमन्ना' ने लगभग शायरी की सभी विधाओं में अपने भावों को प्रकट किया है। नौकरी से अवकाश ग्रहण करने के बाद 'दरबार' नामक एक पत्रिका प्रकाशित की। इन्होंने गज़लें कम लिखीं क्योंकि इनकी अधिकतर शायरी ऐतिहासिक घटनाओं, प्रेमाख्यानों, मुसद्दस और रुबाई आदि पर तथा कुछ नैतिक एवं धार्मिक विषयों पर आधारित है।

'तमन्ना' की शायरी विशेष रूप से धार्मिक एव नैतिक विषयों पर थी क्योंकि उर्दू भाषा में हिन्दुओं की धार्मिक पुस्तकों का बिलकुल अभाव था। इसलिए 'तमन्ना' ने अनेक पुश्तकें लिखीं जिनमें कई प्रकार की रामायण, भजन, और स्तुतियाँ है। 'तमन्ना' एक बड़े शायर के रुप में तो विख्यात थे ही इसके अतिरिक्त वह एक बहुत अच्छे गद्य लेखक भी थे। इसलिए उन्होंने अनेक पाठ्य पुस्तकें भी लिखीं। 'तमन्ना' की लिखो हुई कुल पुश्तकों की संख्या लगभग दो सौ है जिनमें से कुछ महत्वपूर्ण पुश्तकें ये हैं :—

## धार्मिक पुस्तकें

संक्षिप्त रामायण, भगवदगीता मन्ज़ूम, रामलीला मन्ज़ूम, विष्णुलीला मन्ज़ूम, राम सजीवन बूटी, विचित्र रामायण, शिक्षाबली रामायण नग़्मए रामायण, तरानए रामायण, सीता परित्याग, गंगा जी की तौक़ीर (महिमा) ध्रुव का जीवन चरित्र, हनुमान चालीसा, बजरंग साठिका, गीता महातम, कृष्णास्तुति, चण्द्रिका स्तुति, नवरत्न श्तुति, धर्म दर्पण, सुदामा चरित्र, शबरी चरित्र, कृष्ण चरित्र, सनातन धर्म सागर, कृष्ण चमत्कार बाल कांड, करम बेबाक रहस्य, पञ्च अध्यायी और गोपाल चरित्र इत्यादि।

## साहित्यक व नैतिक पुस्तकें

नज़्मों दिल पज़ीर, गुलदश्तए बाग़े कश्मीर, आराइशे खिलअत, गुल्ज़ारे फ़रंग (रोमियों जूलियट का उर्दू) अनुवाद प्रेमाख्यान के रूप में। सिल्के गौहर (प्रेमाख्यान), तिलिस्मे बंगाल, फरियादे वगबाने हिन्द, नज्म मुफीदुल तरकीब, जे़बरे हयात, नाफेएसेहत और उमर-खय्याम की रूबाइयों की टीका आदि।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


## पाठ्य पुस्तकें

रिसाला उर्दू नवीसी, रिसाला खते शिकश्त, तालीमी जन्त्री, स्कूल डिक्शनरी और रिसाल-ए-मज़ामीन अखलाक़ इत्यादि।

## ऐतिहासिक पुस्तकें

अहसनुल तवारीखे अवध, अफ़ज़लुल तवारीख अवध, अशरफुल तवारीखे अवध, नैपाल समाचार, गुलगश्ते बाग़ लखनऊ, यादगारे दरबारे ताज पोशी (१९११) यादगारे रियासत अलवर, यादगारे जुबली राजा साहब दरभगा वग़ैरा।

'तमन्ना' की भाषा पर बड़ा अधिकार था। इसलिए उन्होंने जो भी वर्णन किया है, वह अत्यन्त मनोरंजक शैली में है।

'तमन्ना' की पत्नी श्रीमती किशन प्यारी भी हिन्दी और उर्दू दोनों भाषाओं में शायरी करती थीं।

'तमन्ना' का स्वर्गवास मई १९३२ में हुआ। मुंशी माता प्रसाद 'नोसाँ' और मुंशी द्वारका प्रसाद 'उफक़' इनके छोटे भाई थे। 'उफक़' बहुत मशहूर शायर हुए हैं। उनकी लिखी पुस्तकों की सख्या भी बहुत अधिक है। मुंशी विशेश्वर प्रसाद 'मुनव्वर' लखनवी' 'उफक' के पुत्र थे।

'तमन्ना का धार्मिक कलाम

## शिक्षावली रामायण से उद्धृत कुछ काव्य पंक्तियां

उस तरफ खाली जो मैदान हुआ रावन आया।।
दान लेने के लिए बन के बरहमन आया।।
जानकी समझीं न हरगिज कि यह रहज़न आया।
थी तो औरत ही न जाना कोई बदजन आया।।
खत था महदूद हिफाजत को वह अन्दर ही रहीं।
कहा रावन ने दिया जाता है यूँ दान कहीं।।
जानकी जी ने दियां हद से निकल कर जब दान।
बन गया अहले दग़ा बस वहीं पूरा शैतान।।
जानकी ज़ी को उठा ले गया फौरन नादान।
अब तो फुरकत का नजर आ गया पूरा सामान।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


रामो लछमन जो फिरे दश्त से घर खाली था।
जानकी जो थीं निहाँ कँसए-ज़र खाली था॥
इस जुदाई का अब अहवाल क़लम क्या लिखे।
हालते कुलफ़ती अन्दोहो अलम क्या लिखे॥
किलक पुरदर्द यह कैफ़ीयते ग़म क्या लिखे।
हाले बेताबिए अहबावे हशम क्या लिखे॥
खल्क को वाक़या जानकाह यह समझाता है।
कि जो क़िस्मत में लिखा है वही पेश आता है॥

## रावन के कुकृत्य का हाल सुनिये :—

यह न देखा कि हँसेंगे मुझे दुनिया वाले।
चन्द दिन बाद ही जीने के पड़ेंगे लाले॥
कब वह साधू हैं जो आफ़त के बने परकाले।
ग़ैर के ठगने को माला हैं गले में डाले॥
रावन ऐसे बने जो साधू हैं धिक्कार उन पर।
क़हरे ख़ालिक़ का चला करता है हथियार उन पर॥

'तमन्ना' की मसनबी 'सिलके गुहर' से भी कुछ पंक्तियाँ उद्धृत की जा रही हैं जिससे उनके कलाम की विशेषताओं का अन्दाजा हो सके कि वह दैनिक जीवन में व्यवहार होने वाले मुहावरों के प्रयोग करने में कितने सिद्ध हस्त थे।

गुबार ने होश उधर उड़ाया, जीत उनकी हुई जो हार पाया।
वह ऊँचा हुआ इधर कई हाथ, अन्धे के बटेर लग गई हाथ।
बिल्ली के जो भाग झींका टूटा, बेरहमों ने माले नियामत लूटा।
गरदूँ पर था जौहरी नाकाम, मोती आंधों के हो गये आम।
गुबार उड़ा जो बेतहाशा, देखा घर फूंक कर तमाशा।
याद आई जो हार की सफाई, उड़ने लगी चेहरे पर हवाई।
हम चाल से अपनी हो गए मात, पों बारह है दुश्मनों के हीहात।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


मस्नवी 'गुलजारे फ़िरग' (रोम्यो जूलियट का उर्दू अनुवाद) 'तमन्ना' की गौरवशाली कृति है। जिसमें उनकी काव्य कला की प्रतिभा दृष्टिगोचर होती है।

जूलियट की सुन्दरता का वर्णन और उसकी सुन्दरता पर आसक्त हो जाने का वर्णन अत्यन्त हृदयग्राही है।

था जूलियट उनका नाम मशहूर, थी मायए हुस्न चश्मे बददूर।
अख्तर थे सब और अहले महफ़िल, यह बीच में मिस्ले माहे कामिल।
वह क़द कि क़यामत उससे पैदा, वह सरो कि फ़ाख्ता हो शैदा।
धूँघर वाले थे बाल सर के, उलझे दिल, पारे हंश सर के।
जूड़ा न वह फ़रक़ पर बंधा था, आशिक़ का दिल कसा हुआ था।
थे सूरते दाम मूए पेचाँ, तिल दाना था बहरे तायरे जाँ।
अबरू शमशीरे खून अफशाँ थी, खमदार थी सूरते कमाँ थी।
इस आँख से जो आँख लड़ाए, अन्धा क़िस्मत का आँख पाए।
पलकों पर निसार हर नज़र थी, चिलमन दरे चश्मे यार पर था।
हर नोके मिजा थी सरबसर तेज़ा, बरछी थी कि नश्तरे-शरर रेज़ा।
थे गाल गुलाब की तरह लाल, या सुर्ख शराब की तरह लाल।
रुखसारों का वस्फ कब बयाँ हो. दो माहों का सामना जहाँ हो।
लब दोनों हिलाले-चर्खे उम्मीद, चमकाते थे खुद ही किस्मते-ईद।
नाजुक गोरी अजब कलाई, जिसने देखी न फिर कल आई।
साये में थे दो हुबाब पिन्हाँ, या अब्र में आफताब पिन्हाँ।
पतली पतली थीं ऊँगलियाँ नर्म, थीं पजये आफ़ताब को शर्म।
इन्सां थीं कि सूरत परीं थी, हर अज़्व में नाज़की भरी थी।
देखी जो यह रोम्यू ने सूरत, पेश आ गई इश्क़ की ज़रूरत।
दर परदा लगा वह इश्क़ का तीर, तड़पा सरे खाक मिस्ले नखचीर।
आँखों में बसी जो उसकी तस्वीर, दिल दादह हुआ उसका दिलगीर।
काबू न रहा दिले जिगर पर, टूटा कोहे मलाल सर पर।
जी रह गया बस तरस-तरस के, बढ़ने लगे हौसले हवस के।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



दिल पहलू में इस तरह था बेताब, आतिश पे न ठहरे जैसे सीमाव ।
बोल उठा न तावे ज़ब्त लाया, उस बुत को यह हाले दिल सुनाया ।
महफिल की तू ही आबरू है, इन आँखों में मेरे तू ही तू है ।
तू रूह है मैं हू कालिबे खाक तू दाफिये रंज मैं हूँ ग़मनाक ।
तू कातिले सफ शिकन, मैं बिस्मिल, तू दिलवरे मह़े जबी मैं बेदिल ।
तू गुल है तो मैं हूँ बुलबुले ज़ार, तू सर्व, मैं कुमरीये दिल अफगार ।
तू बाद-ए-सहर, गुबार हू मैं, तू गुन्च-ए-बाग़, खार हूं मैं ।
परवानां मैं, तू हैं शमे-महफिल, दीवाना मैं, तू हसीने कामिल ।
तू सरहवे जोर ज़ार हू मैं, तू फख्रे जमाना, ख्वार हूं मैं ।
तू बहर है, न क़तरे आब हूं मैं, तू आबे रवां, हुबाब हू मैं ।
हा हुस्न का तेरे बोल बाला, मैं नाज तेरा उठाने वाला ।

## २४-पं० किशन प्रसाद कौल

पंडित किशन प्रसाद कौल आगरा के रहने वाले थे परन्तु वह लखनऊ के होकर ही रहे । इनकी शिक्षा-दीक्षा आगरे में हुई । १९०५ ई० में आगरा कालेज से बी.ए० की परीक्षा पास की । गंगा प्रसाद वर्मा की मृत्यु के बाद वह 'हिन्दुस्तान' अखबार काफी दिनों तक निकालते रहे परन्तु जब यह अखबार बन्द हो गया तो एक उर्दू मासिक 'सुब्हे उम्मीद' का प्रकाशन प्रारम्भ किया । यह एक उच्च स्तर का पत्र था परन्तु अधिक दिनों तक चल न सका । लेकिन इस पत्र के कारण उर्दू साहित्य में उनका नाम सदैव के लिए अमर हो गया ।

ब्रज नारायन 'चकबस्त' भी उनके घनिष्ठ मित्रों में से थे । यद्यपि शेर-व-शायरी की सूक्ष्मताओं से कौल साहब खूब परिचित थे । तदपि अपने मित्रों के अनुरोध के बावजूद भी शेर नहीं कहते थे । उनको गद्य से बड़ा लगाव था । उर्दू गद्य में लगभग एक दर्जन पुस्तकें प्रकाशित

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



हो चुकी थीं जिनमें नाटक, उपन्यास, कहानियाँ, ऐतिहासिक समीक्षायें अनुवाद आदि सभी सम्मिलित है। नाटक 'कुर्बानी' १९३४ ई० 'नशा' १९४० ई० मे प्रकाशित हुआ। उपन्यासों में मजबूरे वफा, श्यामा, साधू और वैश्या, यह तीनों उपन्यास १९२९ में ही प्रकाशित हो चुके हैं। कहानियों का एक संग्रह 'बिखरी किरनें' के नाम से १९५३ में प्रकाशित हुआ। 'नया अदब' यह नये अवध के कहानीकारों की कहानियों का संकलन है। जो १९४७ मे पूरा हो गया था। और अन्जुमन तरक्की उर्दू पाकिस्तान ने प्रकाशित किया। 'इन्क़लाबे रूस' की तारीख का एक मुतालेआ 'तथा हिन्दुस्तान का नया दस्तुरे हुक्म' ये दोनों पुस्तकें ऐतिहासिक या राजनैतिक समझी जानी चाहिए। १९१५ में 'गुलदस्तए पंच' प्रकाशित हुआ। जों लेखन कला के क्षेत्र में महत्व पूर्ण ग्रन्थ है।

सन् १९५४ ई० में कौल साहब का स्वर्गवास ७० वर्ष की आयु में आगरा में हुआ जहाँ वह लखनऊ से एक शादी के सम्बन्ध में गये हुए थे।

---

## २५-मुंशी हरिकृष्ण सहाय श्रीवास्तव 'बर्क़'

इनके पिता का नाम मुन्शी बलदेव सहाय था, जो लखनऊ के रहने वाले थे। 'बर्क' प्रसिद्ध उस्ताद 'दाग' के शागिर्द थे। एक पुस्तक ज्योमिति विषय पर भी लिखा है। इनकी शायरी के कुछ नमूने यह हैं।

---

आईना देख के देखा यह तमाशा ए अजीब।
इक तमाशा था उसे अपनी तमाशाई का॥

---

आई है बहार अब तो सैय्याद।
बुलबुल को क़फ़स से तू रिहा कर॥

---

मैं कहता तो हूं कि है क़ीमते दिल का एक बोसा।
इस पे हुज्जत है तो फिर आप ही इरशाद करें॥

---

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



जो शक है आपके उनको मिटा देते हैं।
लो आओ चीर के हम दिल ही दिखा देते हैं ॥

———

जज़्बये दिल खींच लायेगा उसे परवा नहीं।
ग़ैर बहकाता है गर उसको बहकाने भी दो ॥

———

तुम्हीं सच्चे सही आखिर यह झगड़ा तय भी हो साहब।
बिगड़ते क्यों हो अच्छा बेवफ़ा मैं, बावफ़ा तुम हो ॥

———

यह छुपकर रोज़ जाना मैकदे में हज़रते ज़ाहिद।
हमें मालूम है वल्लाह जैसे पारसा तुम हो ॥

———

अल्लाह रहे बेखुदी कि तसव्वुर में यार के।
तस्वीरे यार ही से हम आगोश हो गए ॥
ऐ 'बर्क़' तुम तो बर्क़ थे फिर इक निगाह मे।
क्यों देखकर हबीब को बेहोश हो गए ॥

———

आइना तुम्हारे रूबरू है, सच-सच कहो कौन खूबरू है।

———

माना कि उसे तेग लगानी नहीं आती
अबरू भी सितमगर को हिलानी नहीं आती।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

# २६-अयोध्या प्रसाद 'हैरत काश्मीरी'

पंडित अयोध्या प्रसाद 'हैरत काश्मीरी', 'जुरअत' के शिष्य थे। 'शेफ्ता' के अनुसार उन्होंने कुछ मरनवियाँ भी लिखी थीं और एक संक्षिप्त सा दीवान भी तैयार किया था। वह संगीत कला मे भी खूब पारंगत थे। कभी लखनऊ, कभी दिल्ली मे रहा करते। १२३४ हिजरी (१८१८ ई०) मे ३५ वर्ष की आयु मे ही इनका स्वर्गवास हो गया।

### कलाम

बरंगे नकशे पा उसकी गली से उठ नहीं सकता।
हुआ ममनूने एहसाँ खूब अपनी नातवानी का॥

--------

# २७--पं० श्याम मनोहर कौल 'सगीर'

पं० बैजनाथ कौल शरगा के सुपुत्र थे। इनका परिवार पाँच पुश्तोतक अवध का वसीकादार रहा। इनके पिता सवाई गंगापुर रियासत जयपुर में प्रबन्धक थे। यह माधवपुर ग्राम तहसील नवेली में जन्मे। प्रारम्भिक शिक्षा सेन्टीनियल स्कूल लखनऊ, महाराजा स्कूल जयपुर और जुबली स्कूल लखनऊ में हुई। १८९५ ई० में इन्ट्रन्स की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। १३ वर्ष की आयु तक अरबी, संस्कृत और फ़ारसी पढ़ी। एम०ए० (अंग्रेजी) में प्रथम श्रेणी से और सेकेन्ड पोजीशन से उत्तीर्ण किया। १९०८ में कैनिंग कालेज, लखनऊ में इंगलिश के प्राध्यापक हुए। १९०८ में मुंसिफ और १९१९ में सब जज हुए। सन २४ २५, २७, में एडीशनल सेशन जज बहराइच व लखीमपुर खीरी हुए।

### कलाम

नहीं यारा मेरे ग़म के रक़म का, कलेजा चाक होता है क़लम का।
गरीके जार हूँ बहरे करम का, मुझे क्या ग़म हिसाबो कमो-वेश का।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



किया रफ़्तारने किसकी बह पामाल, किसुरमा वनगया नक़्शे क़दम का।
तगाफ़ुल भी जालिम का क़यामत, कि दिल मुश्ताक़ है मश्के सितम का।
किये क्या-क्या गुले मानी शगुफ़्ता, करिश्मा देख इस टूटे क़लम का।
दो आलम हो चुके बिस्मिल इलाही, अभी आगाह है हुस्ने सनम का।

'समीर' खस्ता जाँ से पूछिये हाल।
शुरूए इश्क में जब्ते अलम का।

---

## २८–लाला धनपत राय 'ज़ार'

लाला धनपत राय 'ज़ार', लाला शंकर लाल के पुत्र थे। ख़्वाजा वज़ीर अली के शिष्य थे। फ़ारसी भाषा के उच्चकोटि के विद्वान थे। उर्दू की ओर कम ध्यान था। फ़ारसी में बहुत कुछ लिखा है। १८५७ ई० के संग्राम के बाद इनका देहान्त हुआ।

### कलाम

मेरी तरह किसी पे तुम्हारा जो आये दिल।
सीने पे हाथ रख के कहो हाय-हाय दिल॥

क्योंकर तुम्हारे रूए मुसफ़्फ़ा तक आये दिल।
इस दर्जा है सफ़ा कि फिसलता है पाये दिल॥

दागों पे दाग सदमों पे सदमे उठा चुके।
देखें अभी यह और न क्या-क्या दिखाये दिल॥

मैं गिरयाँ करूँ जो भरें आप आहे सर्द।
क्या खुश होंगी अगर किसी पर तुम्हारा भी आए दिल॥

सुबह अज़ार व गेसुए शबगूँ दिखाइए।
सदमें यह रात-दिन के कहाँ तक उठाये दिल॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

# २६-लाला भगवत राय 'राहत'

लाला भगवत राय 'राहत' के पिता का नाम मुंशी दीन दयाल था। यह काकोरी कस्बा के रईस थे। आग़ा हसन 'अमानत' लखनवी के शागिर्द थे। शेर-व-शायरी में अच्छी निपुणता प्राप्त की थी। मस्नवी ज़ोहरा व वहराम' और 'नल व दमन' लिखी। यह दोनों मस्नवियाँ अब कहीं भी उपलब्ध नहीं हो पा रही है। इन्होंने एक और मस्नवी 'सोज़-ए-आशिक़ां' लिखी हैं जो उपलब्ध है। यह वाजिद अली शाह के समय तक जीवित रहे। १८५७ के बाद इनका स्वर्गवास हुआ।

## कलाम

मज़हरे इश्क़ या खुदा हो दिल, मसदरे सदमए जफ़ा हो दिल।  
कूचए इश्क़ का हो, रुसवाई, रुए ज़ेबा का हो तमाशाई।  
गुल पे गुल रोज़ सैकड़ों खाये, बेकली से ज़रा न घबराए।  
लाख ज़ख्मी हो खंजर ग़म से सैकड़ों कोस भागे मरहम से।  
सींचे हरदम लहू को ख़ारों से, ख़ार देता रहे हज़ारो को।  
गुल पे गुल खाके मायऐ गम हुआ सरबसर शाख़ नखले मातम हो।  
ज़ख्म उसका न हो रफ़ू बरसों, ऐश की न हो जुस्तजू बरसों।  
क़िबलए रुख के रूबरू बरसों, चश्मे तरसे करे बज़ू बरसों।  
लाए रोने की फिर न ख़ू बरसों, पाई अश्कों से आबरू बरसों।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

# ३०—लाला जयनारायन वर्मा 'असर'

यह 'नावेल' पत्रिका के मालिक थे। पहले 'साने' इनका उपनाम था, बाद में 'असर' के नाम से लिखने लगे। कैंनिग कालिज में बी० ए० तक शिक्षा प्राप्त की। किशोरावस्था से ही शायरी का शौक था। 'असर' ने अंग्रेजी के कुछ उपन्यासों का हिन्दी में अनुवाद भी किया है। खेद है कि ३६ वर्ष की तरुण अबस्था में मार्च १९०७ में ही इनका स्वर्गबास हो गया।

## कलाम

आप सुन सकिये तो सुनिये दास्ताने अहले दर्द।
है जबाने बेज़बानी से बयाने अहले दर्द॥
इज़तराबे दिल का शिकवा कुफ्र से कुछ कम नहीं।
बले 'असर' है दर्द हो आरामे जाने अहले दर्द॥

————

बजुज़ दर्दों सम अन्दूह हिरमां, खबर ले कौन अपनी बेकसी में।

————

मेरे सबाले बस्ल पे तुम भी तो हां करो।
मैं तुम से दिल के बातें करता नहीं-नहीं॥

————

जान इक रश्क़ मसीहा पे दिये जाते हैं,
रोज़ मरते हैं मगर फिर भी जिए जाते हैं।

————

किस तरह उनसे हो इज़हार तमन्नाए विसाल,
अर्जें मतलब पे वहां होंठ सिये जाते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



बात रख लेते हैं हम साक़ी व वाइज़ की असर,
जाम भी पीते हैं तोबा भी किये जाते हैं ।।

---

मुद्दत से बैठे हैं यह इरादा किए हुए,
काबे को जायँ याद बुतों की लिये हुए ।।

---

कूचये यार पर तरजीह उसे मैं दूँगा
जाहिद ऐसी है कहाँ की तेरी जन्नत आई ।
हमने बुतखाने में अल्लाह का जलवा देखा,
ऐन कसरत में नज़र सूरते वहदत आई ।।

---

# ३१ मुन्नी लाल जवां 'सन्दीलवी'

यह १८८९ ई० में सन्दीला। ज़िला हरदोई. में पैदा हुए। इनके पिता का नाम गुलाब राय शाह था, जो शीरे का व्यवसाय करते थे। मन्नीलाल ने आठवें दर्जे तक शिक्षा पाई थी। उसके बाद ही वह अपने पिता के कारोबार में सहायता करने लगे। जब इनके पिता ने संदीला से आ कर लखनऊ को अपना स्थायी निवास बना लिया तो यह भी उनके साथ यहाँ चले आये और यहाँ कुछ उर्दू और फ़ारसी का ज्ञान प्राप्त किया।

उन्होंने १९०५ में शायरी प्रारम्भ की। प्रारम्भ में मीर मंसब अली हुनर मंडयावी, को अपना कलाम दिखाते थे परन्तु उनके स्वर्गवासी हो जाने पर अनवर हुसैन 'आरज़ू' लखनवी को अपना गुरु बनाया। जब 'आरज़ू' साहब कलकत्ते जाकर बस गये तो यह भी उनके साथ चले गये और १९६१ तक कलकत्ते में रहे। कलकत्ते में भी उन्होंने व्यापार को ही अपना जीविका का सहारा बनाया था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



'आरज़ू' काव्यकला के बड़े मर्मज्ञ विद्वान थे। 'जबाँ' ने उनसे बहुत कुछ ग्रहण किया था, इसलिए बहुत से लोग इनसे भी लाभान्वित हुए।

१९६१ ई० में यह कलकत्ते से लखनऊ वापस आ गये। उस समय उनकी आर्थिक दशा काफ़ी खराब हो चुकी थी। इसलिए उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से ५०.० रुपया मासिक आर्थिक सहायता मृत्यु पर्यन्त मिलती रही। २५ जनवरी १९७४ ई० को शाम के ६ बजे अपने मुहल्ला हसन गंज, लखनऊ में स्वर्गवासी हुए।

'जबाँ' की शायरी के कई संकलन प्रकाशित हो चुके हैं।

| | |
|---|---|
| कुल्लियाते जबाँ (प्रथम भाग) | (हसीन चिरागाँ १९६३ ई०) |
| कुल्लियाते जबाँ (भाग दो) | (शोख गुन्चा १९६४ ई०) |
| कुल्लियाते जबाँ (भाग तीन) | (चिरागे काफ़ १९६६ ई०) |
| सोज़े दिल | (दस नज्मों पर आधारित) |

रुबाइयाते जबाँ इत्यादि के अतिरिक्त अनेक गज़लें, मर्सिया आदि भी हैं।

## कलाम

परवाना बन के काम किसी के न आ सका।
मानिन्द शमा रौनक़े महफिल नहीं हूँ मैं।

---

कलीमो तूर का अफ़साना सुनकर भी वही धुन है।
जबाँ, होशियार होने पर भी नादानी नहीं जाती॥

---

अभी तो, मूसा, ग़शी का शिकवा,
पलक झपकने ही का गिला है।

---

जो अब की परदा किसी ने उल्टा,
तो यह समझ लो कि फ़ैसला है॥

---

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



जुनूने इश्क की कारफ़माई निहाँ है खन्दये गुल में,
गरेबाँ से अयाँ होते ही गरेबाँ हमने देखा है।

---

हम भी किसी के साथ बदलते रहे मिज़ाज,
चलना पड़ा ज़माने की रफ़्तार देखकर।
बाज़ू में जब से ज़ोर रिहाई का आ गया,
आती है शर्म खुद को गिरफ्तार देखकर।
मरना क़बूल, बात से फिरना नहीं क़बूल,
आते बढ़ेंगे हम रसनोदार देखकर।

---

गुज़र जा अपनी हद से इस तरह ऐ जज़्बये उल्फ़त।
बनायें जो हमें मजबूर, खुद मजबूर हो जायें।

---

इस तरह जुनूँ की जाँच करे जेबा यह नहीं फरज़ाने की।
सोचो तो सही, क्या करते हो; देते हो छुरी दीवाने को।

---

घटा है, चमन है, बहारें हैं, फिर भी,
जो हम चाहते हैं वह सामाँ नहीं है।

---

मुहब्बत करके अन्जामे मुहब्बत पर नजर कैसी,
यह अब क्यों पूछता है ऐ दिले नाकाम क्या होगा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

# ३२-मेंडू लाल 'ज़ार'

मुंशी तोता राम 'आसी' के गौरवशाली शिष्य थे। यह सक्सेना कायस्थ थे और बिलग्राम में पैदा हुए थे लेकिन बाद में स्थाई तौर पर लखनऊ में रहने लगे थे। १८८५ ई० में आपका स्वर्गवास हुआ।

'ज़ार' फ़ारसी के बड़े विद्वान थे और उनकी विद्वता दूर दूर तक विख्यात थी। उनकी गणना प्रसिद्ध उस्तादों में की जाती थी। उनके शिष्यों की संख्या भी बहुत थी। मुंशी गोबिन्द प्रसाद 'फ़ज़ा', 'मुंशी कुँवर जी 'मदहोश', लल्ले जो 'तजल्ली' राय दौलत राय 'शौक', मुंशी नब निधि राय 'वक़ार' आदि ज़ार के प्रसिद्ध शिष्यों में थे। मौलाना हैदर अली नज़्म तबातबाई जैसे विद्वान ने भी 'ज़ार' से ही फ़ारसी पढ़ी थी। तबातबाई ने अपनी आत्मकथा में 'ज़ार' का वर्णन बड़े आदरपूर्ण शब्दों में किया है।

'ज़ार' उर्दू, फारसी दोनों भाषाओं में शायरी करते थे और दोनों में ही अपने दीवान संकलित किया था मगर उनके दोनों दीवान प्रकाशित न हो सके और उनकी पाडुलिपियाँ भी नष्ट हो गई। 'ज़ार' गद्य लिखने में भी उतने प्रवीण थे जितना पद्य में। उनकी लिखी हुई एक पुस्तक 'गुल्ज़ारे फसाहत' इतनी प्रसिद्ध थी कि वह पाठ्यक्रमों मे पढ़ाई जाती थी।

## कलाम

जिस दम धुवाँ उठा दिले पुर इज़तराब का।
गुल हो गया फ़लक पे चिराग़े आफ़ताब का।

———

मैं वह पज़मुर्दए ख़ातिर कि मेरी आहे अफ्सुर्दा।
हुई फ़सले बहारों के लिए बारे खिज़ाँ पैदा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


यह आतिशे ग़म, यार की महफ़िल से लगी है।
ऐ शम्ना तेरे सर से, मेरे दिल से लगी है।

आँख़ अपनी बुते हूर शुमायल से लगी है।
बुत बन गये, जन्नत की हवा दिल से लगी है।

लैला रगे जाँ कैस को खिंच आई है शायद।
डोरी यह नहीं परदये महमिल से लगी है।

कौन करता मयकशों की गोर पर रोशन चिराग़।
हमको चश्मे गोल है गोया सरे मदफ़न चिराग।

काम है क्या शम्मे काफ़ूरी से और फ़ानूस से।
गोर है फ़ानूस दागे दिल है या रोशन चिराग़।

जान से गुज़रे जो आशिक, ग़म न हो माशूक को।
मौत पर परवाने की करता नहीं शेवन चिराग

उसने जुल्फें खोल दी या दाग़ ग़म कम हो गया।
"ज़ार" सच है साँप के आगे न हो रोशन चिराग।

लिपटी है फिर वुह जुल्फें गिरहगीर पांव में।
भाये न किस तरह मुझे ज़ंजीर पांव में।

ता उसकी हिरज़ा गोई का क़ायम रहे निशां।
फिरता हूँ बांधे कैस की तस्वीर पांव में।

नक़्शे क़दम है पंजये ख़ुरशीद रोज़े हश्र।
क्या हक़ ने दी है यार के तनवीर पांव में।

खाके लहद गो मेरी किया सूरते तिला।
थी 'ज़ार' उस परी के यह अक्सीर पांव में।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

# ३३-ब्रजमोहन दयाल मख़्फ़ी

ब्रज मोहन दयाल 'मख़्फ़ी' एक सम्भ्रान्त एवं सम्पन्न परिवार के व्यक्ति थे। शायरी का बड़ा शौक़ था। यह एक ऊँचे शायर ही नहीं अपितु एक साहित्यकार भी थे। यह कई भाषाओं के विद्वान थे। इन्होंने भागवत् गीता के अठारह अध्यायों का उर्दू पद्य में अनुवाद किया है। यह अनुवाद हिन्दी लिपि में प्रकाशित हो चुका है परन्तु खेद है कि उर्दू अनुवाद अभी प्रकाशित नहीं हो सका है।

मुख़्तलिफ़ राहें हैं लेकिन सब की मन्ज़िल एक है।
मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ में मंशा व ईमाँ एक है।
इस्मे आज़म है बहुत लेकिन मुसम्मा एक है।
है जो बे नामोनिशाँ वह ज़ाते बाला एक है।
हैं मसाजिद मुख़्तलिफ मसजूद है पर एक ही है।
हैं मआबद मुख़्तलिफ माबूद है पर एक ही।

नाते रसूल में बहुत कुछ लिखा है।

रहमते मनअमें हक़ का ये सामाँ देखो।
सुब्हे उम्मीद चमकने को है आँखें खोलो।
लुट रहा नक़्दे हिदायात है झोली भर लो।
वक़्त खुफ़ता हुआ बेदार हो, ऐ तश्ना लवो।
खुश्क दरियाये हिदायत में फिर आब आता है।

बाग़े आलम की फ़ज़ा दिल को लुभाने वाली।
शाख़ में कोपलें और कोपलों में हरियाली।
दस्ते 'मख़फी' में है गुलहाय सुख़न की डाली।
अल्ला अल्ला क्या शाने वुरूदो आली।
लुत्फ़े हक़ आपके हमराहे रकाब आता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



दूसरे मुखम्मस का एक बन्द इस प्रकार है:—
आप खुद जानते है शाने रसूले अरबी,
अजनबी हो के मैं किस किस से करूँ ज़िक्रे नबी।
छोटे मुंह बात बड़ों की है खुली बेअदबी।
इसलिये मेरी ज़बां मेरे दहन में है दबी।
वर्ना सीने में हैं मिदहत के ज़खायर 'मख़्फ़ी'

---

## ३४—पंडित विशम्भर नाथ सप्रू साबिर

पं० विशम्भर नाथ सप्रू 'साबिर' के पिता का नाम राय साहब प० अयोध्या प्रसाद था जो अवध के सूबे में असिस्टेन्ट कमिश्नर थे। 'साबिर' नियमित रूप से सरकारी कामों के अतिरिक्त चार-पाँच घंटे अध्ययन करते थे। इनकी रुचि नज्म की ओर कम थी, फिर भी रामायण का उर्दू में अनुवाद कार्य किया जो पूरा न हो सका और जो अनुबाद हुआ भी उसका अधिकांश भाग नष्ट हो गया। जो अंश उपलब्ध हैं उनमें से कुछ इस प्रकार है—

सुन ए आली नसब खातुने ज़ी जाह, सुनाएं वाला हसब बानीए ज़ीं जाह।
कि तूने तरबियत पाई है बेहतर, अमीराना, शरीफाना सरासर।
क़दम रख राहे नेकी में मेरी जाँ, यही है कारे खैरो दीनों ईमाँ।
सुन ए दुख्ते जनक वह माजरा तू, कमी बेशी नहीं जिसमें सरे मू।
मैं कहता हूँ तुझे बा खातिर शाद, पड़ी उफ्ताद में क्योंकर यह उफ्ताद।
नहीं है आज का कल का यह अहवाल पुराना है बहुत बरसों का यह हाल।
कि मेरे बाप ने जो है दिलावर, सच्चाई में नही रखता वह हम सर।
दिये थे कैकेयी रानी को दो वर, सिले में एक खिदमत के समन बर।
यह वर अब हुये हैं रखना अंदाज जो सरबस्ता थे अब तकजैसे एक राज़।
इन्हींवरकी बदौलत, कैकेयीने कियेआज, किये हैंइकक़लमेंसब तख़्तोताराज़।
न थी यह बात हरगिज़ उसकीमंज़ूर, मगरथाकौल से वह अपने मजबूर।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



हजार उसने कहा, और दे दे मारा, सर अपना बस जमीं पर, और पुकारा।
कि तू दुश्मन है मेरे जिस्मो जाँ की, तबाही का सबब इस खानमाँ की।
लेकिन पास था अपनी कसम का, कि जिसका तोड़ना वाजिब नहीं था।
सुन ए दुख्ते जनक ओ मेरी दिलदार, सिवा इसके नहीं अब चारये कार।
कि मशग्ल अपना सेहरा में बनाऊँ बिला ताखीर अब दंडक को जाऊँ।
कि खारिस्तानदंडक खुबजायेअस्त, अजब मुरताजो आबिद रा पनाहे अस्त।

---

## ३५—पंडित शिवनाथ कौल 'शाकिर

पंडित शिवनाथ कौल के पिता का नाम पंडित काशीनाथ कौल लखनवी था। 'शाकिर' साहब शिक्षा-दीक्षा की अजमेर और लखनऊ में हुई। अंग्रेजी और फारसी भाषा पर बहुत अधिकार था। मसनवी 'मीरातुल ख्याल' में ईश्वरीय ज्ञान और प्रकृति के चमत्कार का बड़ा ही सुन्दर और सजीव वर्णन है। शाकिर पहले बनारस राज्य में दीवान थे फिर ग्वालियर चले गये थे।

मिला है हुस्न तुम्हें, इश्के ला ज़वाल मुझे।
तुम्हें है उसमें कमाल, इसमें है कमाल मुझे।
बहुत ही तंग है वहशत में वस्अते आलम।
इलाही इस कफ्से तंग से निकाल मुझे।

---

राहत अफ्ज़ा, इश्रत अफ्ज़ा इल्म है।
बहजेते अफ्ज़ा, फ़रहत अफ्ज़ा इल्म है।
इज्ज़त अफ्ज़ा दौलत अफ्ज़ा इल्म है।
शौकत अफ्ज़ा सरवत अफ्ज़ा इल्म है।
नातवाँ की तवानाई है इल्म।
और नादाँ की दानाई है इल्म।

---

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

# ३६--राजा जसवन्त सिंह 'परवाना'

राजा जसवन्त सिंह 'परवाना' राजा बेनी बहादुर के बेटे थे। राजा बेनी बहादुर नवाब शुजाउद्दौला के नायब थे। आपने १७३४ ई० में बक्सर की लड़ाई में बड़ी शूरवीरता का परिचय दिया था राजा जसवन्त सिंह 'परवाना' नवाब शूजाउद्दौला के दीवान और मड़ियाँव तथा महोना के जागीरदार थे। प्रसिद्ध फ्रांसीसी विद्वान गारसां द तासी 'परवाना' के सम्बन्ध में लिखते हैं कि 'बह लाला सरब सिंह दीवाना के शिष्य था। अत्यन्त शिक्षित तथा कुशाग्र बुद्धि का व्यक्ति था। पहले फारसी में लिखता था परन्तु इसने अच्छी भाषा जो भारत में अब बहुत कम प्रचलित हैं उसको छोड़कर अपनी हिन्दुस्तानी भाषा में लिखना आरम्भ किया। 'मसहफी' के कथनानुसार उसने बारह बर्ष तक दिन-रात परिश्रम किया। वह हिन्दुस्तानी शेर की नकल किया करता था 'परवाना' ने शायरी में शीघ्र ही नाम पैदा कर लिया। उसने गजल और कसीदा 'सौदा' के ढंग पर लिखा परन्तु वह नई-नई उपमायें देने में रुचि लेता था। उसके शेर बहुत ही रुचिकर और परिमर्जित हं। वह 'मीर तक़ी मीर', 'मीर हसन' और मियाँ वफाउल्लां का सम्मान करता था और कभी-कभी उनसे अपनी शायरी को संशोधित कराता था। 'परवाना' ने 'मुसहफी' को भी अपना उस्ताद माना। उसका एक दीवान १७८० ई० के लगभग हिन्दुस्तान में डा० स्प्रेंगर साहब बहादुर के पास मौजूद था। खेद है कि ऐसे सिद्धहस्त शायर का दीवान अब उपलब्ध नहीं है, सम्भवत वह डा० स्प्रेंगर के साथ विदेश चला गया।

'परवाना' की सब से बड़ी खूबी यह है कि परवाना पर लखनऊ की शायरी के निम्नकोटि के स्तर का प्रभाव नहीं पड़ा; यद्यपि उनका सारा विकास इसी वातावरण में हुआ था वैसे उनके प्रेम में यौनक्षुधा नहीं है तथा उनकी प्रेमिका बाज़ारू स्तर की नहीं है। दिल्ली के शायरों की तरह अपने माशूक की प्रतिष्ठा की परम्परा को बनाये रखने की पूरी कोशिश की है। उनकी गणना अपने समय के उच्चकोटि के शायरों में होती है।

परवाना का स्वर्गवास १८११ ई० में हुआ था।

परवाना का सर्वोत्तम शेर जो जनमानस का कंठहार बन गया वह यह है:

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



जिसने देखा उसे किया सजदा गरज़ उस बुत ने भी खुदाई की।

इसी गज़ल के कुछ और शेर हैं :—

अहद क्या-क्या किये क़ौलों क़रार, आह तिस पर भी वेबफ़ाई की।
हम से रख कर गुबारे खातिर में, जाकर अगयार से सफाई की।
ए दिलेज़ार तू ही कर इन्साफ़ यही है तर्जे दिल रुबाई की।
देख तो हम से रास्तवाज़ों से, तूने आखर यह कज अदाई की।

जोफ़ है गश है नातवानी है, बिन तेरे मौत ज़िन्दगानी है।
कौन मदफून है चमन में सबा, जिसकी तुरबत पे गुल फिशानी है।
पूछते अबहो मुर्गे दिलका हाल, कब से वह जन्नत आशियानी है।
आपने रात छुप के पी है शराब, रंग चेहरे का अरग़वानी है।

———

चश्मे बद दूर परी है कि कोई हूर है तू,
सर से पा तक जो तुझे देखे एक नूर है तू।
लाख तदवीर करें हाथ कोई आता है,
अपने नज़दीक तो, ऐ जान, बहुत दूर है तू।
बहरे हस्ती में तेरा जिस्म है मानिन्दे, हवाब
तिसपे इक दम की हवा खाने पर मसरुर है तू।
उसको हमचश्मी इन्हीं आँखों से बस-बस, नरगिस
तुझ को बीनाई से बहरा नहीं, माज़ूर है तू!
तन बदन में जो लगी आग तो ऐ 'परवाना',
क्या करे अपने जला देने में मजबूर है तू।

———

यों आग दो जिगर को इस दिल के दाग़ से।
करते हैं ज्यों चिराग़ को रौशन चिराग़ से॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


बुलबुल ज़रा तो देख कि गुलचीं चमन में आज।
बू कर रहा है गुल के तईं किस दिमाग़ से।।

कतिपय अन्य शेर

कहती हैं अन्दलीब चमन में पुकार के।
अपने भी दिन फिरे जो फिरें दिन बहार के।।
क्या कीजिए हमदम कि उसे देख के हम तो।
हर चन्द संभाले रहे पर दिल को ग़श आया।।
करने को किया क़त्ल पे खूँ बहते जो देखा।
ठहरा न गया सामने क़ातिल को ग़श आया।।
देखते ही उसको, चेहरे पर बहाली आ गई।
जाफ़रानी रंग जो था उसमें लाली आ गई।।

---

# ३७ विशेश्वर प्रसाद 'मुनव्वर'

'मुनव्वर' के पिता 'उफ़क़' एक कोटि के शायर थे। वे एक अदीब भी थे। मुनव्वर ८ जुलाई १८९७ को नौबस्ता महल्ले में पैदा हुए। वे सक्सेना कायस्थ थे। इनके बड़े भाई बाबू राय शंकर प्रसाद थे जिसकी रुचि पत्रकारिता और शेर-व-शायरी में थी। शिक्षा के बाद वह लखनऊ के 'अवध' अखवार के सम्पादकीय मण्डल में हो गये और अपना समाचार पत्र 'तहरीक' भी प्रकाशित करने लगे। अकस्मात फरवरी १९१३ में प्लेग से उनकी मृत्यु हो गई। 'उफ़क़' को मदिरा बड़ी प्रिय थी। इसलिए उनका भी ४० वर्ष की आयु में देहान्त हो गया। उस समय 'मुनव्वर' की आयु केवल १६ वर्ष की थी।

पिता के मरने के बाद 'मुनव्वर' अवध अखवार के सम्वाददाता नियुक्त हो गये और फिर प्रयत्न करके रेलवे एकाउन्ट आफिस में अस्थाई तौर से नौकरी कर ली। इस समय इनको केवल १८ रुपये मासिक

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh


वेतन मिलता था। इसी नौकरी को करते हुए उन्होंने १९१९ में हाई स्कूल की परीक्षा भी पास कर ली। जिससे उनकी उन्नति का मार्ग खुल गया परन्तु उन्होंने अपने परिश्रम और लगन से अपनी योग्यता काफी बढ़ा ली, फारसी और संस्कृत में भी इतनी अच्छी योग्यता पैदा कर ली कि वह इन भाषाओं में अनुबाद कार्य सरलतापूर्वक करने लगे।

'मुनव्वर' जीवन पर्यन्त रेलवे विभाग से सम्बन्धित रहे और तबादले के कारण लाहौर, लखनऊ, दिल्ली में रहे। अन्तिम बार वह अक्तूबर १९२७ ई० में दिल्ली आये और उसी के होकर रहे। यहीं से उन्होंने १९५७ ई० में नौकरी से अबकाश प्राप्त किया।

उन्हें शेर-व-शायरी में प्रारम्भ से ही दिलचस्पी थी शुरू-शुरू में उनके कलाम उनके भाई के पत्र 'तफ़रीह' और अवध अखबार में छपते रहे। इसके वाद देश की अन्य पत्र-पत्रिकाओं में भी उनके लेख और कबिताएँ छपने लगीं। इनके चाचा मु० राम सहाय 'तमन्ना' 'दरबार' नामक एक पत्रिका प्रकाशित करते थे। जिसमें गद्य और पद्य दोनों होते थे। 'तमन्ना' लाँगमैन्स ग्रीन एण्ड सन्स के यहां नौकर थे इसलिए यह प्रायः बाहर ही रहते थे और इनकी पत्रिका की देख-भाल उनके छोटे पुत्र डा० गौरी सहाय और 'मुनव्वर' के सुपुर्द थी। गद्य का भाग गौरी सहाय और पद्य भाग मुनव्बर देखते थे।

ज़व 'मुनव्वर' दिल्ली में रहने लगे तो उनके एक मित्र शिव नारायण भटनागर 'वली' जो दिल्लो के प्रसिद्ध उर्दू दैनिक 'तेज' के सम्पादक थे, के अनुरोध पर यह नियमित रूप से तेज में अपना कलाम देने लगे।

दिल्ली में मुनव्वर, अमरनाथ साहिर के सम्पर्क में आये और उनके साहित्य समारोहों में सम्मिलित होने लगे। १९३८ में उन्होंने फारसी के साथ साथ उर्दू में भी लिखना प्रारम्भ किया। उर्दू शाएरी में यह पहले तो अपने चाचा राम सहाय 'तमन्ना' से बिचार बिमर्श करते थे मगर बाद मे फिर वह मुन्शी नौबत राय "नज़र" से सलाह लेने लगे। जब फारसी का शौक हुआ तो राय सिद्धनाथ वली 'फिराकी" के शिष्य बन गये। "मुनव्वर" का फारसी कलाम "तवाफे अजम" के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



नाम से संकलित किया है जो अभी अप्रकाशित है। कुछ कलाम हिन्दी में भी है। मुनव्वर को हिन्दी, उर्दू, फारसी ओर संस्कृत सभी भाषाओं का अच्छा ज्ञान था। आपने विभिन्न भाषाओं के ग्रन्थों का उर्दू में अनुवाद करके उर्दू साहित्य की श्रीवृद्धि की है। यह बात निर्विवाद रूप से कही जा सकती है कि इस क्षेत्र में कोई उनका प्रतिद्वन्दी नहीं और न हो सकता है।

१९१८ ई० में उनकी शादी मुँशी लक्ष्मन प्रसाद "रुद्र" की पुत्री चन्द्रकला देवी से हुईथी। उन्हें भी शेर-व-शायरी का शौक पैत्रिक सम्पति के रूप में प्राप्त हुआ था। 'शर्म" उनका उप नाम था।

उन्होंने बहुत लिखा अधिक कार्य करने के कारण उनका स्वास्थ्य खराब होने लगा। हिचकियों की बीमारी तथा मधुमेह जैसे भंयकर रोगों ने उनका सारा शरीर घुला कर रख दिया। अंतिम दिनों में ईनकी ज्योति भी क्षीण हो गई थी। १ मई १९७० को प्रातःकाल दिल्ली में उनका निधन हो गया।

## प्रकाशित पुस्तकें

१—नज़रे अरब (रुबाइयों का सकलन) १९२९,
२—काएना दिल (नज्मों का संकलन) १९३६,
३—काएनात दिल (नज्मों का संकलन) १९५०,
४ - नवाए कुफ्र (गज़लों का सकलन) १९६१,
५ – अदाए कुफ्र (गजलों का सकलन) १९६२
६ दादा नेहरू (जीवनी पद्य में) १९६१,

## अप्रकाशित पुस्तकें

१–सोज़े वतन (कौमी नज्मों का संकलन)। २ जिगर हाय लख्त (नज्मों का संकलन)। ३ रेजऐ गुल (रुबाइयों का संकलन)। ४–तारसुराते मुनव्वर (नज्मों का सकलन)। ५–चिरागे दैर ६–सनम खाना ७ मेहरे मुनव्वर (मे सभी गज़लों के संकलन है) ७-ज़ाफराने ज़ार (हास्यरस) ९-शगुफ्ता क़सीदे १० शेरी खाके ११-खून के आँसू (नौहा) (हिन्दी कविताओं का संकलन) १२ तवाफे अजम (फारसी कलाम का संकलन) १३–मारूजा नसरी (मज़ामीन का संकलन)।

CC-0. Agamnigam Digital Preseyation Foundation, Chandigarh


## प्रकाशित

(१) रामायण बाल्मीकी गद्य में १९३१
(२) भागवतगीता नसीमे हरफाँ (कविता में) १९३३, १९५५, ६१
(३) कुमार सम्भव (पद्य) १९५३
(४) धर्म पद्य या सच्ची राह १९५४ (५) दुर्गा सप्तमी (पद्य) १९५५
(६) विजदाने हाफ़िज(मन्जूम) १९५६ (७) गजेन्द्र मोक्ष मन्जूम १९५६
(८) अवधूत का तराना (पद्य) (९) मुद्राराक्षस (ड्रामा) ३९५८
(१०) रूहानी मकालमा (अध्यात्मिक बातचीत) १९६० (११) केलिन ने कहा (गद्य)
(११) ज़र्रे से आफ़ताब (१२) सागर संगीत गद्य १९६२ ।
(१४) गीतांजलि गद्य १९६३ (१५) शकुन्तला (गद्य व पद्य) १९६३
(१६) गीत गोविन्द (कविता) १९६४, (१७) समुद्री जवाब और दूसरे नादिर अफ़साने गद्य (१८) फाउस्ट (पद्य) १९६९
(१९) आर्य अभियोदय १९६९ (२०) सोज़ें इक़बाल (पद्य) १९७०

## अप्रकाशित

(१) चार दूत, (संस्कृत नाटक) (२) सहबाये दवाम (उमर खय्याम) रूबाइयां ।
(३) तावीर (पद्य) (४) कुरान शरीफ की कुछ सूरतों का पद्य में अनुवाद (५) वफक़ारे बुलन्द । सुप्रसिद्ध व्यक्तियों की वाणियां ।
(६) इहामाते ईरानी /७/ योग सार /जैन धर्म की पवित्र पुस्तिका का अनुवाद । (८) इलहामाते मग़रिब (इन्जील के कुछ भागों का पद्यानुवाद)
(९) नालए बेकस (तुलसीदास की विनय पत्रिका का पद्यानुवाद) ।
(१०) मालविका गण मित्र (कालीदास के नाटकों का अनुवाद) ।
(११) मालती माधब (भवभूति के नाटकों का तर्जुमा) ।
(१२) मेरी याददाश्तें (गद्य) आत्म कथा ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



## कलाम

होगा अब इससे और सिवा क्या करम तुरा,
है खुशनसीब जिसको मयस्सर है ग़म तुरा।
होता है कुछ अजीब ही आलम गरीब का,
करते हैं जिक्र जब भी मुनव्वर से हम तुरा।
है कुछ अगर सलीक़ा है कुछ अगर क़रीना,
मरने की तरह मरना जीने की तरह जीना।

बुरा देख लेना भला देख लेना,
दिखाए जो अर्जों समां देख लेना।
यह दुनियां सलामत वह आँखें सलामत,
जहाँ उसकी हो इन्तिहा देख लेना।
नहीं बेसदा गो अभी साज़े हस्ती,
यह हो जायगा बेसदा देख लेना।

गुनहगारी की नियत को गुनहगारी नहीं कहते,
सफ़र के मकसद से होती है कब गर्दे सफर पैदा।

यह ज़िन्दगी का सफ़र भी है कुछ अजीब सफ़र,
क़दम क़दम पे मुकामात आये हैं क्या क्या।
यह आग दिल में भड़कती रहे हर वक्त,
न दोस्ती का मज़ा है न दुश्मनी का मज़ा।

चाँद सूरज है या सितारे हैं,
यह खदो ख़ाल सब तुम्हारे हैं।
इनकी तफ़सीर क्या करे कोई,
खामोश यह इशारे है।
सब्ज़ाये गुल ने करवटें लेकर,
नक्श कितने हसीं उभारे हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



ज़रा सम्भल के मुनव्वर है मरहला नाजुक,
खुदी के जोश में आकर खुदा न हो जाना।
तल्ख होने पे भी ग़मे दिल की दवा है तो सही।
ख्वाह मर मर के हो जीने का मज़ा है तो सही।

---

# ३८-मुंशी खुश्वक्तराय 'खुश्वक्त'

मुंशी खुश्वक्त राय साहब उर्फ राजा बेनी जी के पिता का नाम राजा लाल जी बहादुर था। "खुश्वक्त" आतिश और मीर वज़ीर अली के शागिर्द थे, कभी-कभी "मस्त" तखल्लुस भी कर लेते थे। १८५७ ई० के स्वतन्त्रता संग्राम के दस बारह वर्ष बाद स्वर्गबासी हुए। लखनऊ के प्रतिष्ठित व्यक्तियों में इनकी गणना होती थी।

### कलाम

गेसुओं को जो ले दाम वह गुलफाम आया।
बुलबुले दिल मेरा खुद उड़ के तहे दाम आया॥
तख्तो ताज, अलमो तब्ल शहन्शाहों का।
सब धरा रह गया जब मौत का पैग़ाम आया॥

---

अजब कमाल पे जोबन तेरा शबाब में है।
यह जोत नूर न मेह में न आफ्ताब में है॥
अदा जान लेती है जानी तुम्हारी।
क़यामत हुई है जवानी तुम्हारी॥
फ़िदा तुम पे मैं हूँ, तुम औरों को चाहो।
यह किस्मत मेरी, क़द्रदानी तुम्हारी॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


ज़हे "ख़ुशवक़्त" आतिश के फ़ैज़ोब करम से।
ज़बाँ ज़ाद हुई ख़ुशबयानी तुम्हारी।

---

## ३६-मुंशी रोशन लाल 'दाना'

मुंशी रोशन लाल के पिता का नाम मुंशी राय था। यह लखनऊ के रहने वाले तथा कायस्थ परिवार के थे। नवाब याशोर अली ख़ान बहादुर के शागिर्दों में से थे और १२७४ हिजरी (१८५७ ई०) तक जीवित थे।

### कलाम

आती है जो ज़ुल्फ़े गिरह गीर हाथ में।
सौदाइयो लपेट लो जन्जीर हाथ में॥
देखे वग़ैर चैन मुझे एक दम नहीं।
रहती है रात दिन तेरी तस्वीर हाथ में॥
आहन को मिस किया जो तो वह बन गया तिला।
ऐसी है मेरे यार की तासीर हाथ में॥

---

## ४०-पंडित जगमोहन नाथ रैना 'शौक़'

१८६३ ई० में इन्दौर में पैदा हुए। इनके पिता का नाम विशेश्वर नाथ रैना था। १८६० में प्रोवेशनरी डिप्टी कलेक्टर नियुक्त हुए और अवध के तेरह जिलों में बड़ी लोक प्रियता के साथ अपने कर्तव्य का पालन किया। उन्होंने १९२० में अवकाश प्राप्त किया। 'शौक़' अमीर मीनाई के शिष्य थे परन्तु उनके स्वर्गवास के बाद सैयद 'नूह' मछली शहरी से शायरी के सम्बन्ध में विचार विमर्श करते थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



### कलाम

क्या कहूँ क्यों उस बुते बेरहम का शैदा किया।
ऐ खुदा जो कुछ किया तूने बहुत अच्छा किया।।
आफ़रीं बेदाद गर, तूने सुलूक अच्छा किया।
दिल को मसला और फेंका और जो चाहा किया।
मैं तो उससे इक दिले मज़लूम ही मांगा किया।
कातिबे रोज़े अज़ल क्या जाने क्या लिखा किया।।
हज़रते दिल का भला हो, लीजिए फिर शौक ने।
बैठे-बैठे इक नया दर्दे जिगर पैदा किया।।

---

## ४१ मुंशी छेदी लाल काकौरवी 'तमन्ना'

मुंशी छेदी लाल काकोरवी 'तमन्ना' शिक्षा विभाग से सम्बन्धित रहे और मौलाना सैयदा ताहिर अली फर्रुखाबादी के शिष्य थे। शैक्षिक योग्यता अच्छी थी और शेर व शाएरी में स्वाभाविक रुचि थी।

### कलाम

शवे फिराक़ में कहता है दर्द उठ उठ के।
यही मज़ा है हसीनों की आशनाई का।।

---

यह क्या सितम है कि आता नहीं तुम्हीं को रहम।
अजल भी रोती है बीमारे खस्ता जां के लिए।।

---

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

# ४२--गोपी नाथ 'अम्न'

गोपी नाथ "अम्न" का जन्म १८६६ ई० में लखनऊ के मोहल्ला गौस नगर मे हुआ था। इनके पिता का नाम महादेव प्रसाद था जो स्वयं शायर थे और तीनों भाषाओं में शायरी करते थे उर्दू और फारसी में उनका उप नाम "आसी" और हिन्दी में "महेश" था। यह राष्ट्रीय बिचारों के, और स्वाभिनी स्वाभाव के व्यक्ति थे। १८६६ ई० में कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन जो लखनऊ में हुआ था यह उसमें कांग्रेस के प्रतिनिधि थे।

"अम्न" ने १९१६ में लखनऊ अमीनाबाद से हाई स्कूल की परीक्षा पास की। उन दिनों अज़ीज़ लखनवी भी उसी स्कूल में उर्दू के अध्यापक थे उनके सान्निध्य में इनकी साहित्यक अभिरुचि और अधिक परिष्कृत हुई।

इन्ट्रेन्स हाई स्कूल पास करने के बाद "अम्न" ने लखनऊ म्युनिष्पिलटी में नौकरी कर ली और यहीं से मुख़्तारी की परीक्षा पास की। १९२० से उन्होंने राष्ट्रीय आन्दोलन में भी भाग लेना प्रारम्भ किया नौकरी छोड़ कर प्रेक्टिस प्रारम्भ की। वह अब अपने जीवन को पूर्णतयः राष्ट्रीय आन्दोलन के लिए समर्पित कर चुके थे। फलस्वरूप दो बार जेल की यातनायें भी सहीं।

१९३२ ई० में दिल्ली के प्रसिद्ध उर्दू अखबार 'तेज' के सम्पादकीय बिभाग में नौकरी कर ली १९४२ में पुनः डेढ़ बर्ष तक नजर वन्द रहे। इसके बाद केन्द्रीय सरकार में प्रेस अफ़सर व प्रसिद्ध उर्दू पत्र "आजकल" के सम्पादक रहे। जैसा कि बताया जा चुका है कि "अम्न" साहब राष्ट्रवादी और बिशुद्ध गांधीवादी रहे और राष्ट्रीय आन्दोलनों के संघर्ष भाग लेते रहे, जेल भी गये, मार भी खाई, पर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



अपने पथ पर अडिग रहे। उनकी यह राष्ट्रवादी विचारधारा उनकी शाएरी से स्पष्ट झलकती है। उनकी शाएरी में उद्दात भावनायें, समानता, स्वतंत्रता, क्रियाशीलता, शान्त और प्रेम का सन्देश मिलता है जो एक निराशावादी राष्ट्र के लोगों में स्फूर्ति का संचार करती है।

गोल मेज़ा कान्फ्रेन्स के अवसर पर वह कहते हैं :—

वह दे रहे हैं बज़ाहिर जो अखितयार मुझे।
गरज़ा यह है कि करें और ज़ेर वार मुझे।
यह और बात है खुलकर न कह सकूँ वर्ना।
नहीं है आपके वादों पे ऐतिवार मुझे।

———

सन् १९४२ में आन्दोलन के समय उनके ग़ज़ल का अन्दाज़ भी राष्ट्रीय था : -

फ़ितने बरस रहे है निगाहों से आपकी।
मैं खूब जानता हूँ जो यह देख भाल है।
अबरू पे दी, जबीं पे शिकन वेसवब नहीं।
मालूम है उन्हें जो हमारा सवाल है।

———

बन्दा परवर यूं तो होते हैं सितम औरों पर भी।
है मगर मख़सूस कुछ जोरो बफ़ा मेरे लिए।
हम जान रहे हैं तुम क्या हो तुम हमको जो चाहो समझो।
हमको अपनों से प्रेम सदा, तुमको ग़ैरों पर है गुरूर।
हम जाने क्या क्या झेलेंगे, हम अंगारों से खेलेंगे।
तुम शीतल रहने वाले हो, इन लपटों से बचो ज़रूर।

———

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



युरोपीय महायुद्ध के प्रलयकारी विनाश को देख कर शायर द्रवित हो उठता है और कहता है:—

जहां कल रंग रेलियाँ थी वहाँ है आज वीराना।
ज़माना लिख रहा है .खून के हरफ़ों में अफ़साना।
वहाना .खूने इन्सां दौरे मौजूदा का एक फ़न है।
तवाही ही तवाही, मशरिको मगरिब में क़दग़न है।
वहीं साईंस जिस पर अहले योरप नाज़ करते थे।
वही तहज़ीब खूनी, मग़रिबी दम जिसका भरते थे।
सरासर आज बे परदा सरापा आज नंगी है।
तमद्दुन क्या अदम् क्या सब फ़िज़ा जंगी ही जंगी है।
उठ ऐ हिन्दी ख़याले कुहन को ज़िन्दा कर दें।
प्याला प्रेम का उजड़ो हुई महफ़िल में भर दें।
सुना फिर साज़े मशरिक़ पर मुहब्बत की वही वातें।
कि दुनिया वाले फिर हिन्दोस्तां की रहीवरी माने।

———

महात्मा गांधी की शहादत, शीर्षक कविता।

शहीद कौन है इस शान का वफ़ा के लिए।
बता सके तो बताये कोई .खुदा के लिए।
थी ज़िन्दगी भी तेरी मौत भी .खुदा के लिए।
वुह और होंगे जो मरते हैं मासिवा के लिए।
यह नु.क्ता कौन समझता है आज दुनिया में।
बना था दर्द किसी दर्द आश्ना के लिए।

————

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



बदलेंगे यह अन्दाज़ बदल जायंगे यह तौर।
हाँ सब्रों व तहम्मुल से गुजारूँ कोई दिन और।

इस दौर में भी नाम, मुहब्बत का लिए जाओ।
मुस्तक़बिले रोशन के लिए काम किए जाओ।

७ जुलाई १९८३ को दिल्ली में "अमन" स्वर्गवासी हुए।

## ४३--राय सरब सिंह 'दीवाना'

"दीवाना" महाराज राम नरायन "मोजू", के सगे भांजे थे। शाहजहांबाद में उत्पन्न हुए थे किन्तु तरुण अवस्था में ही अपने मामा के यहां चले गए और वहाँ बहुत दिनों तक रहे। इसके बाद वह अधिकतर लख़नऊ और बनारस में रहे। लखनऊ निवास के समय उन्होंने फ़ारसी के प्रसिद्ध उस्ताद मिर्जा फ़ाख़र "मुकीं" को अपना उस्ताद बनाया जिससे फ़ारसी में शेर कहने का अच्छा अभ्यास हो गया। इन्हें फारसी शाएरी बहुत प्रिय थी। वैभव पूर्ण ढंग से जीवन यापन करते थे। व्यक्तित्व आकर्षक था। अपने घर पर मुशायरा बड़े ठाट बाट से करते थे। इनके सम्बन्ध में प्रसिद्ध तज़किरा निगार मुंशी देवी प्रसाद "बशाश" ने लिखा है।

:"उर्दू फारसी के प्रसिद्ध शाएरों में से थे। काव्यकला में अत्यन्त पारंगत थे अधिकतर उनका झुकाव फारसी शाएरी को ओर था। रेख़ता (उर्दू) के शेर भी कभी कभी कहते थे। पूर्व के अधिकतर शायरों ने शेर कहना उनसे सीखा है। जाफर अली "हसरत, और मीर हैदर अली "हैरान" जैसे प्रसिद्ध व्यक्ति भी उनके शिष्य थे।"।

एक अन्य प्रसिद्ध तज़किरा नवीस मोलवी इब्राहीम ख़ां "ख़लील" ने "दीवाना" के सम्बन्ध में अपने विचार इन शब्दों में प्रगट किये हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


"दीवाना" उपनाम, राय सरब सिंह नाम, रिश्तेदार महाराजा राम नरायन लाल "मौं.जूं", का था। बहुत ही अच्छा शाएर और मुग़लिया वेष भूषा का शौकीन था/दो, दीवान फ़ारसी भाषा में लिखा हैं और लखनऊ के अधिकतर शाएर उसके शिष्य हैं जिनमें मिर्ज़ा ज़ाफ़र अली "हसरत" और मीर हैदर अली "हैरान" का नाम उल्लेखनीय है। १२०४ हिजरी (१८८९ ई०) में स्वर्गवासी हुए। फ़ारसी में दस हजार से अधिक शेर कहे हैं।

काल चक्र से उनका दीवान नष्ट हो गया किसी तज़किरे में न तो उनका जीवन वृतांत मिलता है और न उनके कलाम का नमूना ही प्रार्याप्त रूप से उपलब्ध है। श्याम मोहन लाल'जिगर बरेलवी अन्य तज़किरा नवीसों से क्षुब्ध होकर दीवाना के सम्बन्ध में लिखते है।

"दीवाना" जैसे साहबे कमाल कम पैदा हुए हैं। लखनऊ जैसे उर्दू के केन्द्र में उस्ताद बल्कि जगत उस्ताद माने गये। बड़े बड़े शाएरों ने उनकी विद्वता से लाभ उठाया है। यदि आज उनका कलाम हमारे सामने होता तो इससे यह अनुमान लगाया जा सकता था कि अपने समय के इस अद्वितीय शाएर ने काव्य गगन से कैसे कैसे सितारे तोड़े और कौन-कौन से वह जवाहर बिखेरे हैं जिनके कारण से यह जगत उस्ताद हुआ। "हसरत" और "हैरान" जैसे शागिर्दों के तो दीवान के दीवान मौजूद हैं। लेकिन उनके उस्ताद का कलाम कहीं दिखलाई नहीं पड़ता। पुराने तज़किरों में नाम और दो एक शेर देखने में आ गए हैं।

## कलाम

जब न तब सुनिये तो करता है वुह एक़रार बग़ैर।
गुफ़तुगू हमसे उसे पर नहीं इन्कार बग़ैर
जान पर आ बनी हमदम मेरी खामोशी से।
बात कुछ बन नहीं आती है अब इज़हार बग़ैर।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



बज़्म में रात बहुत सादा व पुरफ़न थे वले।
गर्मिए बज़्म कहां अब बुते ऐयार बग़ैर।
देख बीमार को तेरे यह तबीबों ने कहा।
हो चुकी उसको शफ़ा शर्बते दीदार बग़ैर।
जिसकी खातिर के लिए यार सब अग़यार हुए।
क्योंकर दीवाना भला रखिए उस यार बग़ैर।

———

दिल है कि तेरे तेग़ के आगे से टल न जाय।
रुस्तम का कब जिगर है कि ज़ोहरा न पिघल जाय।
दिल सदा तड़पे है मेरा मुर्ग़े बिस्मिल की तरह।
या कि सीखी मुर्ग़ बिस्मिल ने मेरे दिल की तरह।

———

## रूबाई

वह यार कहां कि यार बाशी कीजिए-
वह वक्त कहां कि .खुश माशी कीजिए।
इक गोशे में बैठ कर "दीवाना" तन्हा-
अब ना.खुने ग़म दिल से ख़राशी कीजिए।

———

# ४४--राम लाल

श्री राम लाल वर्तमान समय के उर्दू लेखकों में एक कहनी कार के रूप में अत्याधिक यश अर्जन किया है। उर्दू लेखक के रूप में वह पाकिस्तान, इंग्लैंड, नार्वे, स्वीडन आदि देशों में साहित्यिक संस्थाओं के निमंत्रण पर उन देशों का भ्रमण किया है।

राम लाल का साहित्यिक जीवन 1943 से प्रारम्भ होता है। इनकी सबसे पहली कहानी "थूक" लाहौर स प्रकाशित उमर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



ख़्यूयाम नामक साप्ताहिक पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। अब तक लगभग दो दर्जन से अधिक कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। राम लाल जी उर्दू आन्दोलन के सक्रिय सदस्य हैं। इनकी जीवन गाथा इस प्रकार है।

इनका जन्म 3 मार्च, 1923 को मियावली नगर (पंजाब, पाकिस्तान) में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री लक्ष्मनदास छाबड़ा था। जो कि कपड़े की दुकान करते थे। वहीं राजाराम मोहन राय हाई स्कूल से 1938 में हाई स्कूल की परीक्षा पास की और नार्थ वेस्ट रेलवे में पांच वर्ष की ट्रेनिंग करने के पश्चात् रेलवे में कामर्शियल क्लर्क रूप में नौकरी प्रारम्भ की। 1947 में इनका परिवार लखनऊ आ गया था। तभी से यह लखनऊ में रह रहे हैं। अभी 31 मार्च, 1981 को नार्दन रेलवे हेडक्वार्टर से क्लेम इन्स्पेक्टर के पद से अवकाश ग्रहण करके राम सागर मिश्रा कालोनी में शान्ति निकेतन डी 2210 में रहकर साहित्य सेवा में तल्लीन है।

प्रकाशित कहानी संग्रह की सूची इस प्रकार है :—

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | आईने | 1945 | |
| 2. | इन्क़लाब आने तक | 1946 | |
| 3. | वह मुस्करा देगी | 1952 | |
| 4. | नई धरती पुराने गीत | 1958 | (पुरस्कृत) |
| 5. | गली गली | 1962 | (पुरस्कृत) |
| 6. | आवाज़ तो पहचानो | 1963 | (पुरस्कृत) |
| 7. | चिरागों का सफ़र | 1966 | |
| 8. | इन्तज़ार के कैदी | 1967 | |
| 9. | कल की बातें | 1967 | |
| 10. | उजड़े हुए लोग | 1973 | (पुरस्कृत) |
| 11. | गुज़रते लम्हों की याद | 1974 | (पुरस्कृत) |
| 12. | मासूम आंखों का भरम | 1977 | (पुरस्कृत) |
| 13. | कोहरा और मुस्कान | 1972 | (उपन्यास) |
| 14. | मुट्ठी भर धूप | 1972 | (उपन्यास) |

———

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

# ४५-चरन सरन "नाज़"

चरन सरन "नाज़" का जन्म 18 फरवरी, 1923 को प्रतापगढ़ जिले के प्रसिद्ध कस्बा मानकपुर में हुआ। एम०ए०एल०टी० तक शिक्षा प्राप्त की और एक इण्टरमीडिएट कालेज में लम्बे अर्से (समय) तक अंग्रेज़ी के अध्यापक रहे। उर्दू और फारसी का भी अच्छा ज्ञान है और इन भाषाओं की परीक्षायें भी पास की है। शायरी का शौक बचपन से ही था। इनके उर्दू कलाम का एक संकलन "नवाये शौक़" के नाम से प्रकाशित हो चुका है जिसको उत्तर प्रदेश उर्दू अकादमी ने पुरस्कृत भी किया है।

आजकल नाज़ साहब देहली में रहकर स्वतत्र लेखन कार्य कर रहे हैं।

नाज साहब शायर कम और दार्शनिक अधिक हैं अतः उनकी शायरी का रसास्वादन करने के लिए दार्शनिक पृष्ठभूमि की आवश्यकता है। इसमें सन्देह नहीं की उनका कलाम उच्चकोटि का है और शायरी के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण स्थान है।

## कलाम

ठहरो कि एजाज़े अना देख रहा हूँ
इक ज़र्रे में कुल अर्ज़ो समां देख रहा हूँ
गुम बसुअते कौनेन हुई मेरी खुदी में
क़तरे को भी दरिया से बड़ा देख रहा हूँ
हर हुस्न में झलके है मेरा अक्से अना नाज़
हर आँख में अपना ही नशा देख रहा हूँ

———

गूँज रही है हर तरफ नाज मेरी नवाये शौक़
बज्मेग़ना है कायनात साज़ मेरी नवाय शौक़
गूँज सुकूते शब की यह लय की यह थर-थराहटें

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



राज है गुफ्तगूये वक़्त राज़ मेरी नवाये शौक़
कितने महो नजूम के चर्ख़ पे जल उठे चिराग़
छेड़ गयी वजूद का साज़ मेरी नवाये शौक़।

---

## ४६-उमाशंकर चित्रवंशी 'हाज़िल' लखनवी

हाज़िल का जन्म लखनऊ के एक शिक्षित कायस्थ परिवार में 9 जनवरी, 1903 ई० को हुआ था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा इनके पिता की देख-रेख में हुई। इसके पश्चात् इन्होंने 1921 में स्कूल लीविंग, 1932 मे अंग्रेजी में एम०ए० तथा 1937 में एल०एल० बी० की परीक्षायें पास की। अपने विद्यार्थी जीवन काल में ही 1919 में डिवीजनल रेवर्लटिंग आफिस लखनऊ में नौकरी करना प्रारम्भ कर दिया था। इसके बाद 1932 में समथर के राजा राधाचरन के अंग्रेजी अध्यापक नियुक्त हुए और वहाँ 1934 तक रहे। जब वहाँ से अलग हुए तो वकालत प्रारम्भ की परन्तु श्रवण शक्ति कम हो जाने के कारण इसमें सफलता न मिल सकी और इसे भी छोड़ना पड़ा। इसी बीच 1938 में लखनऊ सचिवालय के उर्दू विभाग में जगह मिल गयी जो निरन्तर 23 वर्ष तक चलती रही। इन्होंने 8 जनवरी, 1961 को नौकरी से अवकाश ग्रहण किया।

'हाज़िल' मौलाना 'सफ़ी' लखनवी के शिष्य थे और उनका बड़ा आदर करते थे।

हाज़िल की गणना लखनऊ के अच्छे और स्व० आशु गज़लगो कवियों में होती है। स्वर्गीय प्रो० एहतिशाम हुसेन, स्व० सैय्यद मसूद हसन रिज़्वी, स्व० मजाज, डा० नूरुल हसन हाशमी आदि व्यक्ति उनकी मित्र मण्डली के सदस्य थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



वाह रे तहज़ीबे नव तूने तर.वक़्क़ी खूब की
बढ़ते बढ़ते हाइड्रोजन बम बनाकर रह गयी

उन्होंने स्त्री स्वतन्त्रता पर भी व्यंग किया है :—

लैला का परदा आतिशे फैशन से जल गया
इलज़ाम ताक झांक का अब रक़ब पर नहीं
अक्सर नुमाइशों में वह नाचे कुछ इस तरह
चिक आ गयी क़भी तो कभी नाभ टल गयी

———

यूँ बराबर के हक़ मिले है उसे
कोई ज़न फिर भी मर्द सी न हुई।
फ़ितरत ने काम बांट दिये है अलग-अलग
शायर जो शायरी न करे और क्या करे।

———

मुहब्बत नस्ले आदम की फक़त बीबी मियां तक हैं
फिर इसके बाद जोकुछ है खुदा जाने कहाँ तक हैं

———

ज़ुल्म ज़ालिम है यूँ ही मज़लूम के दिल के करीब
जब्र का पट्टा हो जैसे सब्र की सिल के करीब

———

कहो उनसे कह दो अमां तुम गद्हे हो
मगर यह तो होगा फक़त इस्तियारा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



सिड़ी हो न जाय सितम ढ़ाते-ढ़ाते
कभी तो करम भी किया कर खुदारा

———

घिस गई नोके ज़बा तक उनके गुन गाते हुए
अब तो हम तारीफ़ भी करते हैं हकलाते हुए

———

जब वतन का राग वह गाते चले गये
हम ताल देके पेट बजाते चले गये

———

मुहब्बत के दल-दल में फंस-फंस के आशिक
न इस पार निकले न उस पार निकले।

———

## ४७-कमला पति सहाय 'माहिर बिलग्रामी'

कमलापति सहाय माहिर का जन्म 2 दिसम्वर, 1922 को हरदोई जिले के कस्बा बिलग्राम में हुआ था। लखनऊ में बी० ए० एल० एल• बी० कीं शिक्षा प्राप्त की। सचिवालय नें सर्विस करने के पश्चात् अभी दो वर्ष पूर्व अवकाश ग्रहण किया है। लखनऊ में ही रहने के कारण विशेषकर मुन्ववर लखनवी तथा नवाब जाफ़र अली खाँ "असर" जैसे दिग्गज व्यक्तियों संपर्क में रहने का अवसर मिला और उससे लाभ उठाया। ९ या १० वर्ष की आयु से ही इन्होने शेर व शायरी प्रारम्भ कर दी थी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



1973 यू०पी० सरकार द्वारा इनकी पुस्तक "ख़न्दये गुल" पर इनाम भी प्राप्त हुआ।

सराय हसन डालीगंज में निवास स्थान है।

ग़ालिब का एक प्रसिद्ध शेर हैं।

और ले आयेंगे बाज़ार से गर टूट गया,
जामे जम से ये मरा जामे सफ़ाल अच्छा है

इस शेर का उत्तर माहिर साहब इन शब्दों में देते हैं

यह दिले पुर नूर मिट्टी का खिलौना तो नहीं
टूटने पर और ले आयें जिसे बाज़ार से

ग़ालिब का और प्रसिद्ध शेर जो इस प्रकार है :—

निकलना खुल्द से आदम का सुनते आये थे लेकिन
बहुत बे आबरू होकर तेरे कूचे से हम निकले

इस पर माहिर साहब कहते हैं :

हम उसकी धड़कन से मज़बूर होकर
खुदा जानता है जहाँ छोड़ आये।

---

## ४८-'फ़हम' मुंशी मोहन लाल

मुन्शी मोहन लाल के पिता का नाम लजपत राय था। वह सक्सेना कायस्थ तथा लखनऊ के नौवस्ता मुहल्ले के निवासी थे। 1866 ई० में पैदा हुए। मुंशी शकर दयालफ़रहत के शिष्य थे। इनके पिता नवाबी समय में दफ्तर निज़ामत में नौकरी करते थे। फ़हम उपन्यास लेखक के रूप में अधिक प्रसिद्ध हैं। लगभग 72 उपन्यासों के लेखक हैं। अवध अखबार, व हकीक़त में बराबर लेख लिखते रहे। आनन्द मोहनी, बज़ामें अकबरी ख्वातीनहिन्द, शेरो सुखन, फरिश्ता आदि इनकी अत्यन्त प्रसिद्ध कृतियाँ हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



## रूबाई

अहबाब से बढ़कर कोई प्यारा न हुआ-
रंज उनका किसी वक्त गवारा न हुआ
अफ्सोस ए फ़हम यह कि दस्तो पा से-
तुम सब के हुए कोई तुम्हारा न हुआ।

—————

क्यों कूचा-ब-कूचा ठोकरें खाता है-
क्यों आगे किसी के हाथ फैलाता है
चक्की की तरह फ़हम क़नात कर लें-
रज़्ज़ाक़ पत्थर को रिज़्क पहुँचाता है।

## गज़ल

फ़लक न कर अब जफ़ा शआरी निगाह कर मेरी ज़ोफवो ज़ारी।
जिसे हो अपनी ही ज़ीस्त भारी वो किस तरह वारे गम उठाये।
अगर हो सायल की वदनसीबी सबाल उसका सुने न कोई
अता कहाँ की सलाम को भी न हाथ अहले करम उठाये।

—————

# ४६--'फ़हीम' मास्टर प्रभूदयाल

मास्टर प्रभू दयाल पुत्र मुंशी गजाधर प्रसाद श्रीवास्तवकायस्थ, लखनऊ के मोहल्ला नगरियां ठाकुरगंज के निवासी थे। 1896 ई० में जन्म लिया। ख़ंबर लखनवी के शिष्य थे। अंग्रेजी, फारसी, उर्दू पर अच्छा अधिकार था। श्री कृष्ण जन्म नायक पुस्तक के लेखक हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



ज़हे नसीब कि दर का तेरे गदा हूँ मैं-
फ़कीर कौन कहे मुझको बादशाह हूँ मैं

———

ज़ेरे ज़मी है दोनों का अहवाल एक सा-
क्या बेनवा फ़कीर है क्या ताजदार है

———

काबये दिल से मेरे क्या निस्बते दैरोहरम-
है तफ़ावत अब्द और माबूद की तामीर में

———

निकलना उनकी मुट्ठी से बहुत मुश्किल समझते हैं-
हम अपना दिल समझते हैं वह अपना दिल समझते हैं।

———

जवानी क्या गयी दिल से उमंगे भी हुई रुख़सत-
हम अपने दिल को उजड़ी हुई महफ़िल समझते हैं।

———

उम्मीद क्या फिर आये गुज़री हुई जवानी-
वापस न तीर आया छुटकर कभी कमाँ से

———

डूबने वाले को तिनके का सहारा है बहुत-
मेरे दिल को हो गयी तसकीं तुम्हारी याद से

———

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



ऐशो ग़म से कोई जा खाली नहीं है ए फ़हीम-
बाग मे हंसते हैं गुल शबनम को गिरियां देखकर

———

## ५०--'मख़मूर' चौधरी मुन्नू लाल

चौधरी मुन्नू लाल के पिता का नाम चौधरी लाल बिहारी था। यह श्रीवास्तव कायस्थ थे और सीतापुर ज़िले के क़स्वा मछरहटा के रहने वाले थे। 1910 विक्रमी सम्बत में पैदा हुए थे। किसी के शिष्य नहीं थे। ठाकुर मन्नू सिंह जमींदार अनूगी तहसील मिश्रिख ज़िला सीतापुर के यहां अन्तिम समय तक नौकर रहे। 1931 ई० में स्वर्गबास हुआ।

हम नहीं मख़मूर ऐसे जो लुटा दें घर का घर
मयकशी करते हैं लेकिन मद्दे फ़ाज़िल देखकर

———

शक्ल भी उतरी हुई है नशा भी उतरा हुआ
शब को तुम मख़मूर शायद उनकी महफ़िल में रहे

———

सिदक़े दिल से हम मुक़ी मे आस्ताने यार हैं
हश्र तक उठकर कही इस दर से जा सकते नहीं

———

आज मयख़ाने में देखा शेख जी को सरनगूँ
सामने मख़मूर के वह सर उठा सकते नहीं॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



आता है छन के शर्बते दी दार आपका
बहरे खुदा न रुख़ से दुपट्टा उतारिये।

----

# ५१ मदारी लाल

मुंशी मदारी लाल कायस्थ, लखनऊ के निवासी थे। प्रसिद्ध पुस्तक 'इन्द्र सभा' को नज़्मे सुलेमाँ के नाम से लिखा है।

----

जब से वह ले गया मेरे दिल को निकाल कर-
छाती पकड़ के रह गयी मैं कहके हाय दिल
क्या-क्या दिखाय देखिये आगे मदारी लाल-
काबू में हो गया है यह अब तो बराय दिल
उसको तो अपने हाथ से खोया है ए नसीब-
बनकर फ़कीर जिसके लिए छोड़ घर चले

----

# ५२-'सबूर'-कुँवर गोपाल सहाय

कुँवर गोपाल सहाय नाम था राजा जिया लाल गुलशन के पुत्र थे 1821 ई० में जन्म हुआ। ख्वाला हैदर अली आतिश के शिष्य थे और अवध के नवाब के यहाँ फौज के बखशी पद पर कार्यरत थे। अंग्रेजी शासनकाल में नांयब तहसीलदारी के पद पर थे और जीवन के अन्तिम दौर में रियासत गोपालपुर के नायब हुए। फारसी के अच्छे काव्यकार थे। 1901 में स्वर्गवास हुआ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



जब न असबाते दहन ठहरा यही साबित हुआ—
बात जो है यार की वह गैर की आवाज़ है।
माले दुनियाये दिली की मैं नहीं रखता हवस·
वन्द यां रोज़े अज़ल से बाबेहिसो आज़ है।
रिज़्के मुतलक़ की उसरत में न भूलें आदमी—
बन्द है गर एक दर तो दूसरा दरवाज़ है।

## ५३–'साहब'–मुंशी साहब राय

मुंशी साहब राय श्रीवास्त कायस्थ तथा लखनऊ के निवासी थे। नवाव आसिफुद्दौला के समय के शायर थे। तारीख गोई में इनकी वराबरी करने वाला उस समय कोई न था। एक बार नवाब आसिफुद्दौला ऐशबाग के फाटक से जा रहे थे देखा कि फाटक पर जो मिट्टी का शेर है, उसके मुंह में तोते ने अपना घोसला बना लिया हैं। इस पर नवाब साहब ने मुस्करा कर साहब राय की तरफ देखा तो उन्होंने हाथ बाँधकर अर्ज़ किया।

कुर्बान शह के सदक़े क्या अदल का निशां हैं
जो शेर के दहन में तोते का आशियां है

यह सुनकर नवाब साहब बहुत प्रसन्न हुए-और खूब पुरस्कृत किया।

---

## ५४–'सुबह' मुंशी शंकर प्रसाद

मुंशी शंकर प्रसाद श्रीवास्तव कायस्थ, बिलग्राम जिला हरदोई रहने वाले थे। मौलाना क़द्र बिलग्रामी के शिष्य थे। 1876 ई० में उर्दू मिडिल स्कूल साँडी में हेडमास्टर थे। अच्छी योग्यता थी मुंशी हफ़ीज़ उल्ला खाँ हफीज़ इनके शिष्य थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


न तो आरजू मुझे नाम की, न तो हौसला है निशान का
न है शौक़ कन्दये क़ब्र का न लहद के ऊँचे मकान का
मुझे देख ले जो कहीं ज़रा है यह आदमी की मजाल क्या,
तेरी बारगांह में ऐ खुदा नहीं दख़ल कुछ भी गुमान का
मेरे मरने की जो खबर सुनी तो यह आये कहते जनाज़े पर
कि यह सुब्ह क्या जवान था मुझे ग़म है ऐसे जवान का।

---

## ५५–'ज़ब्त' चौधरी राम सरुप

चौधरी राम सरुप के पिता का नाम चौधरी बाबू राम 'शैदा' था। यह श्रीवास्तव कायस्थ और सीतापुर के मछरेहटा मुहल्ले के रहने वाले थे। क़ैस मोहानवी के शिष्य थे। 1899 ई० में जन्म हुआ। गवर्मेन्ट हाई स्कूल सीतापुर में शिक्षा पाई। सीतापुर की कचहरी में नौकर रहे। नवाये ज़ब्त सकलन १९७८ में प्रकाशित हुआ। 26 फरवरी 1981 को स्वर्गवासी हुए।

चमकेगा इस तरह मेरा रोज़े हिसाब दाग़–
खायेगा जिसको देख के यह आफ़ताब दाग़
दिल की लगी बुझाने को काफ़ी है इतनी आब–
क्या क्या झलक रहे हैं मिसाले हुबाबे दाग़
दिल है किसी तस्ववरे पैहम से जलवा जार–
है माहताब दाग़ कभीं आफ़ताब दाग़
सुब्हे शबे बिसाल का तारा कहूँ इसे–
या दे गया है मुझ को यह मेरा शबाब दाग़
ग़ुन्चे को इक शगूफा से गुलज़ार कर दिया -
अपने तो दिल में हैं पड़े बेहिसाब दाग़

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



चैन इक घड़ी नहीं है मुझे ज़ब्त क्या करूं
मिट जाय दिल से दूर हो खानाखराब दाग़

———

### बहार

फूलो नहीं समाती खुशी से हज़ार अब
है नग़मा ज़ान कि आई है फ़स्ले बहार अब
गुंचे चटख के कहते हैं यह बार-बार अब
फ़ैज़ो बहार से गुलेरंगी है खार अब
दमाने कोह दश्त भी लाला ज़ार अब

———

## ५६—'जिया' बाबू हरीश चन्द्र

बाबू हरीशचन्द्र के पिता का नाम मुन्शी राम किशोर था। यह श्रीवास्तव कायस्थ तथा देवानन्दपुर रायबरेली के रहने वाले थे। बिस्मल इलहाबादी के शिष्य थे। 8 अप्रैल, 1907 कोपैदा हुए रायबरेली में वकालत करने थे।

हसरतें हैं, मैं हूँ, दिल ही दिल में तेरी याद है
आ गया खिलवत गर्मीये मे लुत्फ़े महफ़िल मुझे
क्यों तड़प जायें न सुनकर सामई मेरे कलाम
ए ज़िया हासिल है फ़ैज़े हसरते बिस्मिल मुझे।

———

पूछते क्या हाल हो मुझ खानुमा बर्बाद का
मशग़ला है आह का या शगल है फरियाद का
वह क़यामत का समाँ मेरी नज़र में क्यों न हो
आह करना और मिट जाना दिले नाशाद का

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



# ५७--शैदा चौधरी बाबूराम

चौधरी बाबूराम के पिता का नाम चौधरी लाल बिहारी था जो श्रीवास्तव कायस्थ थे। यह सीतापुर जिले के मछरहटा कस्बे में 185 ई० में पैदा हुए थें। शेरो शायारी का शौक बचपन से ही था। फारसी के सभी महत्वपूर्ण ग्रन्थ खूब पढ़े। 25 वर्ष के आयु में पिता का स्वर्गवास हो गया लापरवाही के कारण जमींदारी जाती रही और कुछ रेहन हो गयी तो छावनी सीतापुर में खत्त नवीसी करने लगे परन्तु शेर व शायरी का अभ्यास बराबर जारी रहा। इनके लिखे दो दीवान नष्ट हो गये। उम्र के आखिरी दौर में एक मुसद्दस "चिरागें मारफत" के नाम से लिखीं जो 1923 में प्रकाशित हुई। आंखों की ज्योति व दिमाग की कमजोरी ने पढ़ने लिखने से बिवश कर दिया। 1926 में 75 वर्ष की आयु में स्वर्गबासी हुए। इनकी शायरी सूफी विचारधारा से प्रभावित है।

जब वह परदा रुखे अनवर से उठा देते हैं-
जलवये तूर सरेबाम दिखा देते हैं
हिज्र में अब्र की सूरत जो रुला देते हैं-
वस्ल में वर्क की मानिन्द हंसा देते हैं
बिगड़ी हालत का बनाना उन्हें दुश्वार नहीं
मुझको जुज़ उनके मदद गैर की दरकार नहीं

———

क्या करू सैरे चमन क्या गुले खदां देखूं-
बूये गुल सूंघूं मैं क्या रंगे गुलिस्तां देखूं।
चश्में मुश्ताक से क्या रुये हसीनॉ देखूं-
किस लिए मिस्र जा कर महेकनां देखूं।
कोई जुज़ उसके नहीं है मुझे मंजूरे नज़र
हुस्न खूबी में न देखा कोई उससे बरतर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



उसका दिवाना हूँ दीवानये दुनियां मैं नहीं-
हुस्ने फ़ानी के लिए महवे तमशा मैं नहीं
कुँजे वहदत से निकल कर कहीं जाता मैं नहीं-
दश्ते पैमाई का दिलदादा व शैदा मैं नहीं
जिसको आज़ाद किया उसने वह कब होगा असीर-
लोग करते हैं मेरे क़ैद की नाहक तदबीर

———

फ़स्ले गुल आप बढ़ें काश मुरा जोशे-जुनू-
इस क़द्र आवले पा से मेरे टपके खूँ
दामने दश्त को हमरंगे गुलिस्ताँ कर दूं-
उम्र भर बाग़ में जाने का कभी नाम न लूं।
रू कशे गुल हूँ तेरा बुलबुले शैदा हूँ मैं
रूखे रंगी का तेरे महवे तमाशा हूँ मैं।

———

किसने परदे से रूखे रोशन नुमायां कर दिया-
ज़र्रेये ख़ाके ज़मीं को मेहरे ताबां कर दिया

———

इकसां हैं मुझे गुलशने तौहीद में दोनों-
गुल दोस्त अगर होगा अदू खार न होगा ?

———

तू बे नियाज है तेरे सब हैं नियाज़मन्द-
इस नाज़ इस अदा का कोई नाज़नी नहीं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



# ५८--शोख़ मुंशी बनवारी लाल

मुंशी बनवारी लाल, पिता का नाम मुंशी किशन नरायन 'शफ़ीक', सक्सेना कायस्थ नौबस्ता, लखनऊ के निवासी थे। 1888 ई० में उत्पन्न हुए। (कवि सम्राट) मुंशी द्वारिका प्रसाद उफ़क के शिष्य थे। क़सीदा लिखने में निपुण थे। 11 फरवरी 1932 को शाह अफगानिस्तान ने एक क़सीदा के संबध में एक सोने की घड़ी, एक जड़ाऊ तलवार तथा एक पार्कर क़लम प्रदान किया। इसी तरह महाराजा बनारस ने भी अपने राज्याभिषेक के अवसर पर अपने कर कमलों द्वारा तीन सौ रुपया नकद इनाम दिया था। इनकी रुबाइयों का एक संकलन प्रकाशित हो चुका है।

दिल को सुकून हो कैसे इस हाँ पे इस नहीं पर-
कुछ कुछ है मुस्कराहट कुछ-कुछ शिकन जबीं पर
जूलीदा गुफ्तगू का दुश्वार था सुलझना-
कल बात कुछ हुई थी उलझी कहीं कहीं पर

———

जो गुलकदये दहर को मयखाना बना दें-
मुमकिन है कि हर फूल को पैमाना बना दें
मय के पीने से नहीं होता है कोई भी गुनाह-
शर्त इतनी है कि बढ़ जाय न पैमाने से

———

चश्म मयगूं ने किया सरमस्त मुझको इसतरह -
क्यों न इतराई हुई मय जामों मीना में रहे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



# ५९–'शौक़' शिव चरन लाल

मु० शिव चरन लाल निगम कायस्थ, कस्बा ज़ैदपुर जिला बाराबंकी के निवासी थे "द्रोपदी चरित्र", और "शाने अयोध्या", नामक पुस्तकें लिखी हैं। फैज़ाबाद में रेवन्यू एजेण्ट थे।

ऐ शौक कर सके कोई क्या श्याम की सना-
मुमकिन नहीं ज़बानों कलम से जो हो अदा
रखा है अपने रहम से अहबाब की हया-
पैदा नहीं है उनकी नवाज़िश की इन्तिहा
मुझको उसी की रहम पर तकिया मुदाम है
मेरा तो दस्तगीर वही एक श्याम है।

————

# ६०–'शगुफ़्ता' मुन्शी खैराती लाल

मुन्शी खैराती लाल पुत्र मुंशी तोता राम, सक्सेना कायस्थ लखनऊ निवासी एवं नसीम देहलवी के शिष्य थे। शायरी की कला एवं सैन्य शिक्षा में निपुण थे। 88 वर्ष की आयु से 3116 हिज़री 1896 में इनका देहान्त हुआ। इनकी कविताओं का संकलन "दफ्तरे मगरफ़" के नाम से प्रकाशित हुआ। इनके शिष्यों की भी एक मण्डली थी।

वह लिखते हैं मज़ामीन शरर अंग्रेज़ नामा में –
कि शोला हर ज़मां उठते हैं बाज़ुए कबूतर से

————

नीम जां हूँ ज़िन्दगी दूदे चिरागें कुश्ता है–
मेरी हस्ती सूरते बूवे चिरागें कुश्ता है

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



है सबाते जि़न्दगी नक़शे तसव्वर से रकीक-
बूद अपनी बूद नाबूदे चिराग़े कुश्ता है

— — ——

खश्क़ले नाखुने अंगुश्त सर कटाने से-
हयात मिलती है जब इन्तेक़ाल होता है
सरश्के चश्म दिखती है गर्मियां अपनी-
कमी पे जब ग़र्क़ इनफ़आल होता है

—— —

साफ क्या हो से हबते ज़ाहिर से बातिन का गुबार-
मुंह नज़र आता नहीं आईनये तस्वीर में

— ———

न शर्माओं आँखे मिलाकर तो देखो-
मुलाकात है हम से तुम से कभी की।

## ६१--शफ़क़ मुंशी लालता प्रसाद

मुन्शी लालता प्रसाद के पिता का नाम मुन्शी बेचे लाल था। इनका सम्बन्ध सक्सेना कायस्थ परिवार से था। यह लखनऊ के निवासी थे। मुंशी कुंवर जी मदहोश आगा अली 'शम्स' ब मुंशी शंकर दयाल 'फरहत आदि इनके उस्ताद थे। इनकी शायरी में नवीनता थी और तारीख गोई में बहुत प्रसिद्ध थे। अपने उस्तादों से अर्जित ज्ञान को निम्नांकित शेर में स्वीकारा है :--

क़द्रे नाचीज़ बे बेहक़ीकत है-
फ़ैज़े मदहोश ब शम्सो फरहत है

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


क़िस्सा चहार दुरवेश को नज़्म किया है जिसका नाम "बहारे शफ़क" है। 55 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हुआ।

---

इसलिए खाक पे बैठता हूं – कि उठाकर वह नज़र देखें तो
फिक्र क्यों करते हैं वह दुनियां में -- पहले अस्ल अपनी बशर देखें तो

---

सिर फिरा नहीं मेरा जो मैं बांधू दस्तार-
एक मौजूद तो है गुम्बदे गरदूं सर पर

---

शिकवों से गड़े मुर्दे उखड़ते शबेवस्ल-
है हश्र का हंगामा क़यामत की घड़ी है

---

सनम के काबये रुख पर जो तिल है चूम लें ज़ाहिद-
कि बोसा संगे अस्वद का भी एक फर्ज़ मुस्लमां है

---

वह मेहरबां जो हो तो किसी का खतर नहीं-
आज़ारे रोजगार से कुछ उस को डर नहीं
दरिया है मुस्तफ़ीद उसके नवाल से-
खुरशीद ज़ाबागर हैं उसके जलाल से।

---

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



# ६२-शरारा-बाबू देवी दयाल

बाबू देवी दयाल के पिता का नाम मुंशी गजाधर प्रसाद था। यह श्रीबास्तव कायस्थ थे और मोहल्ला नगरियां ठाकुरगंज लखनऊ के रहने वाले। 1885 में बाराबंकी जिले के कुर्सी ग्राम में पैदा हुए थे। सीतापुर की कलेक्ट्री में नौकर थे। शायरी का शौक़ था। उस्तादों का कलाम पढ़ा करते थे। १९१३ ई० में स्वर्गवासी हुए।

जो गर्म आहें कभी हम आशिके नाशाद करते हैं-
फ़लक जलता है अहले अर्श भी फ़रियाद करते हैं।

---------

ज़बों से शोर करते-करते जब थकते हैं महबस में
तेरे क़ैदी लबे ज़न्जीर से फरियाद करते हैं
तेरे हर बार पर दिल से सदाये मरहबा निकली
दहाने ज़ख्म भी शोरे मुबारक बाद करते हैं।

---------

हमारे नज़ा के आलम में वह जो आ जाते-
ज़बाने हाल से कुछ उनसे गुफ्तगू करते
मिसाले अश्क गिराते न आप नज़रों से-
निगाहे लुत्फ़ से मेरी जो आबरू करते

# ६३-'शोला' प० अमरनाथ बख्शी

प० अमर नाथ शोला के पिता का नाम पंडित दाता राम था। काश्मीरी ब्राह्मण तथा लखनऊ के निवासी थे। नवाब सुभान अली कम्बोह की सरकार से सम्बन्धित थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



ताक़त है क्या जो मैं कहूँ मुझ पर सितम हुआ-
हाथों से तेरे जो हुआ ज़ालिम वह कम हुआ।
मैं शाहे मुल्के इश्क़ हूँ मरने के बाद भी
इस दबदबा से राहिये मुल्के अदम हुआ।
ताबूत मेरा तख्त हुआ चत्र सायबां-
और अस्क व आह व नाला खीलो खदम हुआ।

-----

अल्लाह ने जिस दम गुले सैराब बनाया-
बुलबुल को भी सरगर्म तप व ताब बनाया।
दरियाये मुहब्बत में डुबाने को दिलों के-
चाहे ज़कने यार को गिरदाब बनाया।

-----

## ६४–'शायक' लाला फतेहचंद्र

लाला फतेहचन्द्र के पिता का नाम दस्ती राम था। वह श्रीवास्तव कायस्थ थे। शेख इमाम बखश नासिख के शिष्य थे तथा लखनऊ के निवासी थे। अच्छे शायर थे क्योंकि उस्ताद के बाद उनके शिष्यों के कलाम की दुरुस्ती यही करते थे इनका भी दीवान तैयार हो चुका था।

-----

उस परीज़ाद की जादू है मुकर्रर आंखें-
सैकड़ो जीं गये उससे मिलाकर आंखें?
ऐब मरदुम की जिसे देखने की आदत हो-
है उस इंसान से हैवान की बेहतर आंखें।
खौफ़ यह है कहीं चुभ जाय न खारे मिज़गां-
क्या बिछाऊं मैं तहें पाये समनबर आंखें।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



मेरा पहलू फिराक़े यार में है खानये मातम–
बजाय यार हैं बैठे मेरे गम ख्वार पहलू में
मेहंदी मलकर कौन निकला चाँदनी की सैर को
सुर्ख धब्बे पड़ गये हैं चादरे महताब में

———

## ६५-शायक़ बाबू अवध बिहारी लाल

बाबू अबध बिहारीं लाल के पिता का नाम बाबू हनुमान प्रसाद खत्री था लखनऊ के रहने बाले तथा "मीर" लखनबी के शिष्य थे। 1871 में पैदा हुए थे बर्नाक्युलर मिडिल की परीक्षा पास कर किताबों को दुकान चौक खोली थी कुछ दिन रेलबे में नौंकरी भी की। अन्त में क़ैसरबाग़ लखनऊ में रहने लगे। यह उर्दू नपढ़ सकते थे न लिख सकते थे गज़ल हिन्दी में लिखते थे।

लगा खुदांग दो शोबा है तीरे मिजगां का–
वगल में दिल भी है ज़खमी मेरे जिगर की तरह

———

शादी की अब उम्मीद है पीराना सरी में
झड़ते हैं मेरे फूल चिरागे सहरो में

———

गर बुलंदी पर सितारा हो मेरी तक़दीर का
बाम पर नज़्ज़ारा हो उस माहे पुर तनवीर का।

———

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



## ६६–'शाद' मुंशी काली प्रसाद

मुंशी काली प्रसाद संडीला (जिला हरदोई) के निवासी तथा कायस्थ परिवार से सम्बन्धित थे। अफज़ल लखनवी के शिष्य तथा राजा अलताफ़ हुसेन हाशमी के यहाँ नौकर थे।

बेदस्तो पा को ग़ैब से देता है रिज़्क़-
परवरदिगार जान फ़िदा तेरी शान पर
खाक़े लहद न हो किसी खाना खराब की-
छाया है कुछ गुबार सा आज आसमान पर
ईद में ईद हुई ऐश का सामां देखा-
देख कर चांद जो मुंह आपको ए जाँन देखा
जबां से क्या कहूँ सूरते सवाल है मेरी-
सुकूत ही से कुछ इज़हारे हाल होता है।

---

## ६७–'शाद'–लाला जगन्नाथ प्रसाद

लाला जगन्नाथ प्रसाद वल्द होशयारी लाल अग्रवाल कस्वा बिसवां ज़िला सीतापुर के रहने वाले थे। "जिगर" बिस्वानी के शिष्य थे। ज़मींदार और महाजन परिवार में जन्मे थे पर देश के स्वतंत्रता आन्दोलन में इण्टर की पढ़ाई छोड़कर भाग लिया और कई बार जेल गये। अधिकतर राजनीतिक शेर कहें है।

बाग़े जहां में सूरते शाखे शिकस्ता हूँ-
यकसाँ है इस चमन में बहारो खिज़ाँ मुझे
ए शाद मेरे दिल में मुहब्बत मुल्क की-
कहते है लोग कुश्तये हिन्दोस्तां मुझे

---

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



हमारे लिए सिर्फ हिन्दोस्तां है-हमारा वतन है हमारा मकां हैं
खुदा जाने क्यों इस क़दर बदगुमां-मेरी ताक में रात दिन बागबां है
यह खूने शहीदां की गुलकारियां हैं-कि जिलयान वालाबना गुलसितां है।

---

नज़ार काबिशहाय गुलचीं हो गई शाने वतन
कैसी इबरत खेज़ है सैरे गुलिस्ताने वतन
मर के मिलता है वफ़ादारों को लुत्फे जिन्दगी-
ज़िन्दये जावेद होते हैं शहीदाने वतन

---

मुवाफ़िक हो हवायें फिर वही दौरे जहां आये-
नज़र फूला फला मुझको मेरा हिन्दुस्तां आये

---

तेरे अबरू को क्या समझे, निगह को तेरी क्या जाना
उसे तेगे अजल समझे इसे तीरे क़ज़ा जाना।

---

## ६८--'सुखन' मुंशी दयाल

मुंशी राम दयाल के पिता का नाम प्रेमसुख था। वह लखनऊ निवासी थे। और अत्यन्त योग्य एव बुद्धिमान व्यक्ति थे। फारसी पर अधिकार रखते थे। फारसी के प्रसिद्ध क़सीदाकार, अनवरी और खाक़ानी के जवाब में जो क़सीदे कहे हैं उनका कोई जबाब नहीं है। इनके पिता घड़ी साज़ी का काम करते थे। परन्तु इन्होंने शायरी के क्षेत्र में यश अर्जित किया। खेद है कि तरुण अवस्था में ही उनका स्वर्गवास हो गया था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



ख़ुदा के वास्ते सुन ए सनम गिला दिल का
तेरी आंखों ने लूटा क़ाफ़िला दिल का
मरीज़े इश्क़े सनम हूं शफ़ा न होगी मुझे
दिखाऊँ क्या तुझे जर्राह आबला दिल का
निगाहे यार से बचना है ए "सुख़न" दुश्वार
पड़ा है दुश्मने जां से मुक़ाबला दिल का

———

## ६६—सरशार—प० रतन नाथ

पं० रतन नाथ के पिता का नाम प० बैजनाथ था। काश्मीरी ब्राह्मण और मुन्शी मुज़फ्फर अली असीर, अवध के नवाब मोहम्मद अली के शासनकाल में पैदा हुए थे। फ़ारसी की शिक्षा घर पर हुई। कैंनिग कालेज में पढे पर शिक्षा पूरी न हो सकी। अर्थिक कठिनाइयों के कारण लखीमपुर खीरी में अध्यापक हो गये। गद्य लेखन की प्रतिभा प्रकृति प्रदत्त थी। शायरी का शौक भी बचपन से था। नौकरी छोड़कर लखनऊ आ गये और यहां के उर्दू पत्रों में लेख लिखना प्रारम्भ किया। इसके कुछ ही दिनों के बाद अपनी सशक्त लेखनी के कारण अवध अख़बार के सम्पादक नियुक्त हो गये। "फ़सानये आज़ाद" सैरे कुहसार, जाने सरशार, खुदाई फौज़दार, हम्शो, पी कहां, बिछुड़ी दुल्हन, अलिफ लैला सरशार की अमर कृतियां हैं। शायरी और गद्य दोनों क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा दिखाकर यह विभूति 1903 में हैदराबाद) से सदैव-सदैव के लिए विलीन हो गयी। इनकी मृत्यु पर किसी शायर ने यह रुबाई कही थी।

———

सरशारे फ़सीह ब नुकता परवर न रहा
सरमाये नाज़ अहले जौहर न रहा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


एजाज़ो क़लम के जिसके सब क़ायल थे-
वह नस्र का उर्दू का पयम्बर न रहा

————

झलका-झलका सुपौदिये सुबह हल्का-हल्का सुपैदीये सुबह
तारे छुपते हैं झिलमिलाकर-है नूर सा जलवागर फ़लक पर
भीनी-भीनी महक गुलों की और नग़मा जनी वह बुलबुलों की
ए साक़ी महलका बदेहमय-ए मर्दे खुदा अब ख्वाब ताके
चकतै सेहरा और खुन्क हुआ है-बे मय सब किरकिरा मज़ा है

————

इक चुल्लू के देने में यह तकरार-उठो जागों सेहर हुई यार
दरिया की तरफ चले नहाने-गुट परियों के जानान खाने
मुरगाने चमन च नुक्ता दानीं चूं बरहमनाने वेद ख्वानी
नौबत रंगत जमा रही है शहनाई मज़ा दिखा रही है।
बजते हैं खुशी के शादयाने-क्या दिन दिखाये हैं खुदा ने।

————

## ७० 'सफा मुंशी' मुन्नू लाल

मुन्शी मुन्नू लाल के पिता का नाम राय पूरन चन्द था। सक्सेना कायस्थ और लखनऊ के नौबस्ता मोहल्ले के निवासी थे। मीर तकी "मीर" के शिष्य थे। शाही शासन में अखबार नवीस थे और महाराज झाउमल नायब के दामाद थे। फ़ारसी और अरबी के आलिम थे। उर्दू फारसी में दीवान उपलब्ध हैं।

इनका यह शेर शायरी के संसार में अत्यन्त प्रसिद्ध है।

चर्ख को कब यह सलीक़ा है सितमगारी का-
कोई माशूक है इस परदये जनगारी में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



क्या हँसी आती है मुझको हज़रते इंसान पर–
फेलेबद तो ख़ुद करें लानत करे शैतान पर

———

खूबसूरत जो बहुत हूर को समझा है सफ़ा–
तूने देखा नहीं उस रश्के परी का मुँह क्या।

———

जब दाग़ देखता हूँ सीने में जाय दिल–
बे अख़्तियार मुंह से निकलता है हाय दिल
क्योंकर न उनसे बान डरे दिल को खौफ़ हो–
वह चश्म व ज़ुल्फ आफ़ते जां है बलाये
हम तंग है बहुत तपिशे दिल के हाल से–
वह हाथ रखे दिल पे तो आराम पाये दिल।

———

## ७१–'ज़ब्त' मुंशी मन मोहन लाल

मुन्शी मन मोहन लाल के पिता का नाम मुन्शी बाला प्रसाद था यह श्रीवास्तव कायस्थ थे। ग्राम सफ़ीपुर जिला-उन्नाव के निवासी थे सम्वत् 1940 बिक्रमी को पैदा हुए थे। मुन्शी रावेलाल "मस्त" सफ़ीपुरी के शिष्य थे : ग़ज़ल कहने में कुशल थे।

मुजरिमाने इश्क़ को क़ातिल सुबुक दोशी कहाँ
वारे सर जाता रहा तो बारे अहसां हो गया

ज़ख़म ने लुत्फ़े नमक पाशी न पाया था हनोज़
वाह री क़िसमत वहां खाली नमकदां हो गया

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



काबाओ दैर का ज़ाहिद हमें क्या होश रहे–
दोनों आलम गमे उल्फ़त में फरामोश रहे
सदक़े उस लुत्फ के यह दर गुज़र अल्ला-अल्ला–
हम खताकार रहे और खतापोश रहे
मयकदे जाते हैं इस वक्त न छेड़ ए वायज़–
आके फिर वायज़ भी सुन लेंगे अगर होश रहे

—— ——

बादये इश्क का हूँ मतबाला-जो न उतरे कभी मस्ती है
आदमी सब कुछ और कुछ भी नहीं उसकी हस्ती अज़ीब हस्ती है

——— —

## ७२--'ज़ख्मी' राजा रतन सिंह

राज़ा रतन सिंह ज़ख्मी, सक्सेना कायस्थ और लखनऊ के बाशिन्दे थे उनके पिता का नाम राजा बालक राम था जो महाराजा झाउमल के नायब थे और खुद भी शायर थे। सबूरी उप नाम था रतन सिंह ज़ाखमी 23 मुहर्रम 1197 हि०(1782 ई०) को लखनऊ में पैदा हुए थे। अरबी, फारसी और अंग्रजी तीनों भाषायें पढ़ीं। मिर्जा मोहम्मद हुसेन "कतील" के शागिर्द थे। संपूर्ण भारत की यात्रा की थी। नवाब नसीर उद्दीन हैदर के उस्ताद नियुक्त हुए उसके बाद दरोग़ा पद पाया। उन्नति करते-करते मीर मुन्शी जैसे महत्वपूर्ण पद पर पहुँच गये थे। फखरूद्दीन और दबीरूल मुल्क के खिताब से सम्मानित किया गया था।

फ़ारसी में लगभग आधी दर्जन महत्वपूर्ण पुस्तकें लिखी है। कभी-कभी उर्दू में शायरी करते थे। 65 वर्ष की आयु में 1856 में स्वर्गबासी हुए।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



ज़र बाफ़ आज उनको मुयस्सर है ए फ़लक-
कल तक न जिनको आता बुनना निवाड़ का
आंसुओं से हुई सरसब्ज मेरी किश्ते मुराद-
अब्र क्या चीज़ है और बारिशे बारां क्या है
जुज़ तेरे दर के यह सब हेच है जाऊ मैं कहां
बज़्मे ज़ोहाद है क्या महफ़िले रिंदां क्या है।

---

# ७३-'रेहां' दीवान दया कृष्ण

दीवान दया कृष्ण पुत्र मुन्शी गंगा बखश, श्रीवास्तब कायस्थ तथा लखनऊ के निवासी थे। मुन्शी मौजी राम 'मौजी' के शिष्य थे। शाही शासन में बखशीउल मुल्क राजा उलफ़त राय के दीवान थे और अंग्रेज़ी शासन में प० शिब नरायन लाल बकील के दीवान हुए। रसिक प्रवृति के व्यक्ति थे। कलाम में रंगीनी थी प्रायः महफ़िलों में इनकी गज़लें गायी जाती हैं। बागे रेहां के नाम से इनका दीवान प्रकाशित हुआ था। जो चार सौ पृष्ठों से अधिक पर आधारित है।

रेहां स्वयं अपनी गज़ल की प्रसिद्ध और लोकप्रियता के बारे में कहते हैं:—

उर्दू को सुनके भूल गये अपनी फ़ारसी-
रेहाँ की जब गज़ल तरफ़े इसफ़हां गयी।

## कलाम

---

जलवा तमाम रात है माहे तमाम का-
जायेगा बक़्त सुबह यह मेहमान शाम का

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



फ़ज़ले खुदा से तुम भी सरापा बहार हो-
ताउस को दिखाओ तमाशा ख़िराम का

× × ×

ग़ैरों में बैठ बैठ के सदमा बढ़ा दिया-
जला-जला के कलेजा पका दिया
ए ज़ुल्फे यार दिल भी रहे तेरे साथ कैद-
मुझको उसी ने दामे बला में फसां दिया
क्यों ए ज़बान कितने सितम यार ने किये-
फिर नाम ले के तूने मेरा दिल दुखा दिया
नाहक सबाल है कसो नाकस के सामने-
रोज़ी भी देगा जिसने दहने गदा दिया।

————

अब सब ये कहने आते हैं उल्फत को छोड़दो-
मान हुआ न पहले कोई मेहर बां मुझे
जो बात आदमी न सुने क्यों सुनाइये-
नासेह नहीं पसन्द तेरी दास्तां मुझे
इतनी कड़ी तो ज़ोफ में झेली न जायगी-
हूँ नातवां पिनहाते क्यों हो बेड़ियां मुझे

————

एक आशिक का है दिल सात है ख़्वाहाँ उसके-
ख़ालो खत, चश्मों दहन, लब, रुख़ सारो गेसू
देख के क्यों न डरे यार दमें आराईश-
साँप बन जाते हैं आइना के अन्दर गेसू

तेरा ही नूरे पाक था कुछ पेशतर न था-
न आसमां व हफ्त जमीं का असर न था

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


क्या एतबार ए दिल, दुनिया की दोस्ती का-
झूठा है कारखाना, कोई नहीं किसी का

—————

किस दश्ते बला खेज़ में लाई मुझे वहशत
पानी का सहारा है न साया है शजर का

—————

## ७४ – 'तबस्सुम' मुन्शी सूरज बली

मुन्शी सूरज बली, सक्सेना कायस्थ परिवार से सम्बन्धित थे और लखनऊ के मोहल्ला नौबस्ता के रहने वाले खैराती लाल "शगुफ्ता" के शिष्य थे सुलेखक थे और नवल किशोर प्रेस में कातिब थे। "शगुफ्ता" के भतीजे थे।

### कलाम

हम तो क्या हैं नज़रे दिल आ आ के देंगे सैकड़ों
आप तो कुछ दिल के लेने का हुनर पैदा करें
क्या लगामे यार बे परवा से अपने दिल को हम
फ़ायदा क्या है जाने शीरीं का ज़रर पैदा करें

—————

## ७५ 'तजल्ली' लल्ले जी

लल्ले जी सक्सेना कायस्थ, लखनऊ के रहने वाले मुन्शी मेंडू लाल "ज़ार" लखनवी के शिष्य थे।

मु.ख्तार है वह चाहे मुझे देखे न देखे-
आँख अपनी तो उस रौनक़े महफ़िल से लगी है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



बेनमक उनके न होने से है रूये माहताब-
सच अगर कहिए तो हैं हुस्न का जेबर गेसू
जान बचने की नहीं हैं बह बला के काले-
छूना मशशाता ज़रा .खूब समझ कर गेसू।

----

## ७६-'रौनक़' लाला राम सहाय

लाला राम सहाय पिता का नाम हकीम मुन्ना लाल, सक्सेना कायस्थ तथा लखनऊ के निवासी थे। राजा झाउमल्ल के रिश्तेदार तथा नासिख लखनवी के शिष्य थे। अच्छा शेर कहते थे। 1864 में स्वर्गवासी हुए।

बेसबाती गुल की जब ज़ाहिर थी बाग़े दहर में-
दो घड़ी के बास्ते बदनाम क्यो गुलचीं हुआ

----

पानी अर्क़ शर्म से होकर न बहें क्यो-
देखे जो सहाब अश्क फ़शानी मेरे दिल की
अब कोई नहीं कहता है फ़रहाद का किस्सा-
रौनक़ है बह मशहूर कहानी मेरे दिल की

----

## ७७-'रौनक' मास्टर लक्ष्मी नरायन

मास्टर लक्ष्मी नरायन पिता का नाम बाबूलाल कृष्ण धवन था। लखनऊ के निवासी थे। जुबली हाई स्कूल में सेकेण्ड मास्टर थे। उर्दू, फ़ारसी, अंग्रेज़ी में अच्छी योग्यता थी। १८७४ ई० में स्वर्गवासी हुए।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


पता क्या पूछते हो दिलसितां का वह बाशिंदा है मुल्के ला मकां का

———

वाह कब साक़ी को मेरा ध्यान आया हैफ़ है–
जबकि मेरी उम्र का लबरेज़ पैमाना हुआ

———

तंग आकर ज़ाने दुनियां से अदम को जो गया–
नाम उसने न लिया लौट के घर आने का

———

नेकों की ऐब ज़ोई है बाइसे फज़ीहत–
मुंह पर पड़ेगा उड़कर आसमां पे थूका

———

ज़रा ख़त न हम को मिला जिन्दगी–गुज़ार सब ज़माना गया जिन्दगी का

———

## ७८–'राय'–राय शिव सहाय

राय शिव सहाय के पिता का नाम शिव सिंह शीक़ था। यह भाट जाति के थे तथा लखनऊ के निवासी थे। फ़ारसी और उर्दू की अच्छी योग्यता थी। रसिक तथा बिनोद प्रिय स्वभाव के थे।

### कलाम

देखिये शोख़ी कि बज़्मे ग़ैर में कहने लगा–
राय साहब बैठिये बन्दे का घर यही तो है

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



# ७९–'रहमत'–पं० गंगा प्रसाद

पं० गंगा प्रसाद पिता का नाम पं० मोतीं लाल काश्मीरी ब्राह्मण तथा लखनऊ के निवासी थे। सैय्यद आगा हुसेन अमानत के शिष्य थे। 1269 हिजरी में जीवित थे।

## कलाम

हम रिन्द किस तरह न दुआ दें उठा के हाथ–
देतां है जाम पीने को साक़ी बढ़ा के हाथ।
आँखों से अपनी पंजये खुर्शीद गिर गया–
जिस रोज नज़र आ गये उस महलक़ा के हाथ।
"रहमत" खुशी से पांव न फैलाऊँ किस तरह–
देखूं गले में अपने जो उस महलक़ा के हाथ।

———

# ८०–'रिन्द'लाला खेम नरायन

लाला खेम नरायन खत्रीं दिल्ली के निबासी थे और लाला लक्ष्मी नरायन के भतीजे थे। महाराजा टिकैतराय जो अवध के नवाब के वज़ीर थे इनसे इनकी मित्रता थी। आखरी उम्र में कलकत्ता चले गये और हुगली में बस गये। फ़ारसी में शायरी करते थे।

नालये तम्बूर व चंग-ए-अहले ग़फलत तुम सुनो–
गोशज़द होती है हरदम यह नसीहत साज़ से
है सज़ा उसको कि रोज़ो शब न पाये गोशमाल–
राज़े दिल पे परदा जो कह दे बुलन्द आवाज़ से

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



## ८१-'दरिया'-रतन नाथ ब.ख्शी

पं० रतन नाथ ब.ख्शीं पुत्र अमर नाथ शोला, काश्मीरी ब्राह्मण लखनऊ निवासी नातिक़ बिलग्रामी और मीर औसत अली "रश्क" के शिष्य थे। फ़ारसी भाषा के विद्वान और अच्छे साहित्यकार थे।

---

है गोशे गुल की या कि चिराग़े क़मर को लौ-
अल्लाह जाने दिल को लगी है किधर की लौ
दरिया दिलों से डरते हैं रोशन ज़मीर भी-
थर्राये क्यों न पानी में शम्सौ क़मर की लौ
दुज़्दाने ज़.ख्म पानी चुराते हैं क्यों अबस-
गुल होवेगी न आतिशे दाग़े जिगर की लौ
खींचूं जो आह सर्द तो ठंडे हों दोज़खी-
दरिया के आगे पानी है नारे सकत की लौ

---

## ८२--राजा-दिगविजय सिंह

महाराजा दिगविजय सिंह बलरामपुर रियासत के राजा थे। इनके पिता का नाम महाराजा अर्जुन सिंह था। राय जवाहर सिंह के शिष्य थे। राय साहब जीवन पर्यन्त बड़े आदर और सम्मान के साथ बलरामपुर में रहे। राज़ा साहब का कलाम साफ़ और स्पष्ट था। इनका एक दीवान भी प्रकाशित हो चुका था। 1884 में स्वर्गवास हुआ।

### कलाम

अपनी नज़र भी निशाने को लगी है-
आईना में न देखो मुंह बारम्बार अपना

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हुस्न से इश्क़ न जिसको वह इन्सा कैसा
मुनकिरे .कुदरत, हक़ साहबे इमां कैसा

---

तेरी सूरत देखकर लैला को आएगा हिजाब
मेरी सूरत देखकर मजनूं बहुत पछतायेगा

---

न जानिबेने को कुछ वस्ल में मिली लज़्ज़त-
हमें लिहाज़ रहा यार को हिजाब रहा
ख्वाबे मख़मल जिन गुल अन्दाजों में फर्शे खार था-
मौत ने तुरबत में उनको खाक़े बिस्तर कर दिया

---

लगा के नख़ले मुहब्बत न कोई पायेगा फल-
मिसाले सरो यह होता बेसमर पैदा
इश्क में तेरे हुआ है ऐ सनम-
एक मज़हब क़ाफिरो दीनदार का।

---

## ८३-'.ख्याली'-मुंशी .ख्याली राम

मुन्शी ख्याली राम .ख्याली राम '.ख्याली,' सक्सेना कायस्थ थे। लखनऊ के नौबस्ता मोहल्ले के रहने वाले थे और मौलवी अहसान उल्ला मुमताज़ के शागिर्द थे। अत्यन्त कुशाग्र बुद्धि के व्यक्ति थे। फ़ारसी गद्य और पद्य दोनों पर असाधारण अधिकार था। अमीर .खुसरू की अत्यन्त कठिन पुस्तक एजाज़ खुसरूई की इन्होंने टीका लिखी जो नवल किशोर प्रेस लखनऊ से प्रकाशित हुई। यही इनकी विद्वता का परिचायक है। डा० अब्दुला ने अपनी थीसिस में इन्हें सौ पुस्तकों

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


का लेखक बताया है पर मेरी विस्तृत खोज के बावजूद और पुस्तकें उपलब्ध नहीं हो पाई । यह तुर्की भाषा के भी अच्छे जानकार थे । वाजिद अली शाह के यहां नौकर थे। 1882 में इनका स्वर्गवास हुआ ।

### कलाम

दामने सेहरा को भी जुनूं साबित न छोड़-
चाक करना चाहिए मेरे गरेबां की तरह
मुश्कबारी बाग़ आलम में कहां से लायेगा-
वल अबस करता है सुम्बुल ज़ोल्फे पेचां की तरह

———

है इसी तरह तबां, में फ़र्क इन्सान के-
मु.ख्तलिफ़ जैसे हो फ़र्दे बशर की सूरत।
कर दिया बारे रिज़ाबा ने उसे दरहम बरहम-
वस्ल बुलबुल की कभी गुल ने अगर की सूरत।

———

## ८४-'चमन'-मुंशी शादी लाल

मुन्शी शादी लाल सक्सेना कायस्थ तथा लखनऊ के निवासी थे मुन्शी राम सहाय रौनक़ के भतीजे थे। उर्दू, फ़ारसी के उस्ताद ओर दोनों भाषाओं में शायरी करते थे।

सरे नामे सनम नामे ख़ुदा है-इलाही ज़ान कां रुतबा बड़ा है।

भाषा परिमार्जित और प्रवाहमयी थी। अलिफ़ लैला चतुर्थ भाग को उर्दू नज़्म में प्रस्तुत किया था जो 1865 ई० में प्रकाशित हुई थी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



## साक़ी नामा

किधर है साक़िये मयकश किधर है–तबियत कुछ हमारी जोश पर है
खुशी से तेरी साक़ी है हमें काम–न देना दूसरा दे एक ही जाम
होश ने बेतरह है मुझको घेरा–फिर ए साक़ी में हूँ मुश्ताक़ तेरा
हज़ारों को पिलाय सैकड़ों जाम–रखकर ऐसे दौर मे हमको नाकाम
झलक साग़र को दिखलाता है साक़ो हमें फिर जोश में लाता है साक़ी।
इरादे लुत्फ़ के रखता नहीं गर
तबियत क्यों है मायल फिर हंसी पर

# ८५–'चमन'–मुंशी 'रंग' लाल

मुन्शी रंग लाल लखनऊ के निबासी और ज़ात के कायस्थ थे। मुन्शी राम सहाय रौनक़ के शिष्य थे। सिंघासन बत्तीसी का उर्दू नज़्म मे अनुवाद किया जो बड़ी रोचक है।

इलाही ही सब्ज़ कर मेरे सुखुन को–
बहारे बेखिज़ा दे इस चमन को
मेरे ख़ामा को दे तूती की मिनक़ार–
रहे ताशुक्र मे तेरे शक्करबार
ज़बां गुलबागे बहदत से हो यकसर–
बरंगे अन्दलीबे नग़मा परवर
तेरी निकहत से ही गुल में है खुशबू–
तेरी कुदरत से है बुलबुल सुख़नगो

———

# ८६–'तमन्ना'–मुंशी मुन्नू लाल

मुन्शी मुन्नू लाल के पिता का नाम मुन्शी महेश नरायन था। यह पहले कानपुर में रहते थे परन्तु संडीला हरदोई में रहने लगे थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



श्रीवास्तव (खरे) कायस्थ थे। 1856 ई० में पैदा हुए थे। जब यह एक ही वर्ष के थे तो इनके पिता का स्वर्गवास हो गया था। नाना और नानी ने इनका पालन पोषण किया। 1886 में मिडिल की परीक्षा पास कर नौकरी प्रारम्भ की 1919 में लखनऊ के ख़ज़ाने में क्लर्क रहे और वहीं से पेंशन प्राप्त की। राजा दुर्गा प्रसाद मेहर (संडीला) इनके मामा थे। इनकी कविताओं का एक संकलन 'गुलशने तमन्ना' के नाम से प्रकाशित हो चुका है। 1930 में इनका स्वर्गवास हुआ।

तसव्वर में वह बुत पेशे नज़र है–किसी की रूबरू सूरत खड़ी है
मना हमने लिया रूठे हुए को–यही इक बात हमसे बन पड़ी है

---

कब तक यह रहेगा ज़ो ज़ालिम–आखिर कोई हद भी है सितम की
पूछो उस शोख बेवफ़ा से क्यों रस्मे वफ़ा यहाँ के कम की
बालों ने न दी ज़रा भी फ़ुर्सत–बदली जो तेरी निगाह करम की

---

देखो तो आके दाग दिले दाग़दार के–
सब भूल जायें तुमको तमाशे बहार के
कोशिश के आगे दो ही कदम कूए यार है–
ऐ दिल न बैठना कहीं हिम्मत को हार के

---

## ८७–'तकदीर'–बाबू बिन्देश्वरी प्रसाद

बाबू बिन्देश्वरी प्रसाद के पिता का नाम मु० शिव रतन लाल था। लखनऊ के रहने वाले थे परन्तु गोण्डा में बस गये थे। 1885 में पैदा हुए थे। शायरी में किसी के शागिर्द नहीं बने। 1908 से गोण्डा में वकालत कर रहे थे। 1924 में यू० पी० काउन्सिल के मेम्बर हुए।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



## कलाम

उम्मीद जोशे जवानी इब्तिदाये नाज़ है-
अब बहारे हुस्न का कुछ और ही अंदाज़ है
हर गुले गुलज़ारे हस्ती पैकरे सदराज़ है-
ज़र्रा ज़र्रा दौलते असरार से मुमताज़ है
चुप रहें हम फिर भी हाले दिल न पोशीदा रहा-
खामशी गोया ज़बाने हाल की आवाज़ है
जुस्तजूए यार में अब वह मज़े आने लगे-
जिन पर ए तक़दीर नाकामी को अब तक नाज़ है।

---

ज़िन्दगी को हम खुमार नश्शये हस्ती कहें—
या यह समझें एक दौरे साग़रे मय नोश है
कर दिया इक उम्र के हिस्से को दम भर में तमाम—
और कहते हैं निगाहे नाज़ तो खामोश है।
वस्ल की शब गुज़र गई दम में-रात क्या रात भर नहीं होती
जलवये नाज़ देखने वाली-ऐसी वैसी नज़र नहीं होती
इन्तिहा ये-ग़म भी इक सामाने राहत है ज़रूर
मौत आ जाय तो वे फ़िक्री से सोया कीजिए।

---

## ८८—'पैकर' मास्टर राम स्वरुप

मास्टर राम स्वरूप के पिता का नाम मुन्शी भगवान दयाल था। यह श्रीवास्तव कायस्थ थे और सीतापुर जिले के बिसवां कस्बे के निवासी थे। 1898 ई० में पैदा हुए थे। जिगर बिस्वानी के शागिर्द थे। जय दयाल हाई स्कूल बिसवां में अध्यापक थे। शेर व शायरी से लगाव था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



### कलाम

अज़ल के रोज से तू ए जुनूने फ़ितना सामां था
मगर तुझसे भी पहले चाक-चाक अपना गरेबां था
सरेशाम आप निकले थे जहाँ अठखेलियां करते
वह घर थे मरने वालों के वहीं गोरे ग़रीबां था

## ८६—'तायब' खुन्नू लाल

मुन्शी खुन्नू लाल के पिता का नाम मुन्शी झाउलाल था। सक्सेना कायस्थ थे और लखनऊ के रहने वाले थे। मुन्शी शिव प्रसाद बहवी के शिष्य थे। 1868 में पैदा हुए थे। शायरी वंश परम्परा से चली आ रही थी। मतबये बहार नामक छापाखाना के स्वामी थे। कई पुस्तकें लिखी हैं। गद्फरूर पर भी अच्छा अधिकार था हिन्दी में भी शायरी करते थे और उसकी प्रशंसा होती थीं।

### रूबाई

जब गुनाहों पर नज़र जाती है तौब तौबा—
जिस्म क्या रूह भी थर्राती है तौबा-तौबा
मुझसा तायब भी गुनहगार न होगा न हुआ—
तौबा करते हुए शर्म आती है तौबा-तौबा

यहाँ मश्के तस्वीर हर घड़ी है किसके सामने सूरत खड़ी है
दिया बहिश्त में भी इक़बाल ने साथ-कि जन्जीर जुनूं कदमों में पड़ी है

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



मुरा दर्द दिल क्या बयां हो रहा है-
जो हर सिम्त शोरो फ़ुगां हो रहा है
यह निकला नहीं मेहर सुबह, शबे ग़म-
मुरा दागे पिन्हाँ अयाँ हो रहा है

———

चलता है कहकशां का असा-लेके रात को-
अब नातवां बहुत फ़लके पीर हो गया
अय्याम ज़ीस्त करते है इन्सा के क्या ही जल्द-
कोदक हूआ जवान हुआ पीर हो गया

———

## ९० – 'बहार' मुन्शी बांके बिहारी लाल

मुन्शी बांके बिहारी लाल पिता का नाम मुन्शी छबीले राम था। यह सक्सेना कायस्थ थे। इनके पिता दिल्ली में बकालत करते थे और मुन्शी बांके बिहारी लाल लखीमपुर खीरी की कलेक्ट्री में अंग्रेजी क्लर्क थे और 50 रु० मासिक वेतन पाते थे। यह धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। रामायण बहार इनकी रचना है जो 1880 ई० में प्रकाशित हुई थी 1891 ई० में इनका देहान्त हुआ।

कहा सबने किसी पर क्या निहां है-
जो बन में माजरा गुज़ारा अयां है
उड़ा सीता को रावन ले गया था-
हिसारे ज़र में पोशीदा किया था
क़रीबे कोह पनपापुर है एक-
वहीं के खिर्स मेमून हैं यह सब नेक
है जानिबे रास्त सुग्रीव आली-
उसी की फौज ने लंका फतेह की

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


सूये चप ख़िरस दाना है क़वी तन—
मुशीरे राम था रन में वह पुर फ़न
बसद शाँ है जो पेशेराम मैंमूं—
हनुमान नाम कूबत में है अफ़ज़ूं
जो फांदा सिन्ध लंका को जलाया—
कहीं जाकर खबर सीता की लाया
शुमाली कोह को लाया उठाकर—
सजीबन दी लखन को उसने लाकर
लखन और राम ने दिल में जगह दी
है उसका मर्तबा ख़िदमत से आली।

———

# ९१--'बेताब'--बाबू सुखदेव प्रसाद

बाबू सुखदेव प्रसाद के पिता का नाम श्याम सुन्दर लाल बर्क़ था। 1900 ई० में इनका जन्म हुआ। शबाब सीता पुरी के शागिर्द थे 1918 में हाई स्कूल की परीक्षा पास करके सीतापुर कलेक्ट्री में क्लर्क रहे।

चाहिए उसके लिए तारे निगाहे बुलबुल—
वर्ना फिर होगा रफ़ूगुल का गरेबां क्योंकर
जब तबियत आपकी दर्द आश्ना हो जायेगी—
दिल में पैदा खुद बखुद खूये वफ़ा हो जायेगी
क्या ताजुब वह नक़ाबे रुख़ उठा देते अभी—
डर रहे हैं यह कि बरगश्ता हया हो जायेगी
हो गया है इन दिनों सौदाय तक़वा शेख को—
अब्र आ जाय तो नियत क्या से क्या हो जायेगी।

———

# ९२--बख़्शी--बख़्शी राम

मुन्शी बख़्शी राम के पिता का नाम राय इन्द्रजीत था। वह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



श्रीवास्तव (खरे) कायस्थ थे और बाराबंकी जिले के प्रसिद्ध कस्बे दरियाबाद के रहने वाले थे, परन्तु बाद में लखनऊ के गणेशगंज मोहल्ले में रहने वाले थे इनके पिता वाजिद अली शाह खि़लअत खाना के दीवान थे और कुसम्भा गांव के जमींदार भी थे। श्री बख़्शी राम नवल किशोर प्रेस के एजेण्ट भी थे और उसके बाद कानपुर में स्टार प्रेस के मैनेज़र भी रहे। फ़ारसी और उर्दू में शायरी करते थे। सुदामा चरित्र फ़ारसी भाषा में और दीवान रियाज़े बे ख़ज़ाँ उर्दू भाषा में लिखा है। 30 अक्टूबर, 1918 को 74 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हुआ।

## कलाम

बह यारे गुल अज़ार हमारा कहां नहीं-
आता है हर निगाह में वह जा बजा नहीं
ले जाऊँ किस तरफ दिले मुज़तर उठाके मैं-
यह कौन सो ज़मी है जहां आसमां नहीं
नैरगीये जहां के बजुज़ ज़ाते किब्रया-
बख्शी समझ तू कोई किसी का यहाँ नहीं

———-—.

मिलें वह ग़ैर से हमको बग़ैर उनके न चैन-
समझ में कुछ नहीं आता है मामला क्या है।

———

पहुँचा दे उस गली में मुझे तू ही जज़्बे शौक़-
शौक़-रहबर कोई नहीं है दिले बेक़रार का

———

# ६३–'बज्म' पं० अम्बिका प्रसाद

पं० अम्बिका प्रसाद के पिता का नाम पं० गुरू दयाल बकील

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


था। यह दीक्षित ब्राह्मण थे। क़द्र बिलग्रामी के शिष्य थे। अंग्रेज़ी में एम० ए० थे। कुछ समय तक जबलपुर में प्रोफेसर रहे। 1897 ई० में जुबली हाई स्कूल लखनऊ में सेकण्ड मास्टर रहे। शिक्षा विभाग के डायरेक्टर से अनबन होने से शिक्षा बिभाग की नौकरी छोड़कर पुलिस विभाग में इन्स्पेक्टर हो गये। साहित्यिक अभिरुचि के व्यक्ति थे।

सारी दुनिया है ग़रीबुल वतनों का मस्कन-
हाय किससे पूछूँ यह वतन किसका है
दिल में आशिक के उतर जाय जो नश्तर बनकर-
ऐसा नासेह के सिवा और सुखन किसका है

---

## ६४–'बिस्मिल' पं० सुन्दर लाल

पं० सुन्दर लाल शर्मा के पिता का नाम बख़शी टीका राम था। यह कश्मीरी ब्राह्मण थे और शेख़ इमाम बख़श नासिख के शिष्य थे। परमिट विभाग कानपुर में सरिश्तेदार थे। अपनी शायरी का एक दीवान तैयार किया था।

### कलाम

यह नहीं नाक़ूस ए तिफ्ले ब्रह्मन हाथ में
कर रहा है मुर्गे दिल अपना यह शेवन हाथ में
जो है वाबस्ता वह है क़ैदे अलायक से-
घरी देख तो आता नहीं सर सर का दामन हाथ में
गोरी गोरी उंगलियां यूं शब को आती हैं नज़र-
शमयें हैं काफ़ूर की गोया कि रोशन हाथ में
है यक़ीं वल्लाह ए 'बिस्मिल' फ़ड़क कर जी उठूं-
हाल आ जाय जो उनका बाद मुर्दन हाथ में।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



# ६५--'अनवर' पं० विशम्भर नाथ

पं० विशम्भर नाथ "अनवर" के पिता का नाम पं० केशव नाथ था। यह कश्मीरी ब्राह्मण थे और लखनऊ के निवासी थे।

## कलाम

देखे जो बाग़ में अर्क़ आलूदा रूये यार-
शबनम गुलों को आप खिजालत से तर करें

----

मुझ पर जो कुछ गुज़रती है रोशन है यार पर-
खुद हाल आश्ना है कोई क्या ख़बर करे

----

जुल्फ़ों की याद ने यह किया नातवां मुझे-
तारे नफ़स भी अब तो है वारे गिरां मुझे
मुद्दत से ग़मगुसार हैं हमदम हैं दोस्त हैं-
कब भूलते हैं नालाओ आहो फुगाँ मुझे

----

क्या क़सद करें उठकर घर से कहीं जाने को-
अब पहरों तरसते हैं हम आप में आने को

----

# ६६—'अन्जुम' महाबीर प्रसाद

बाबू महावीर प्रसाद के पिता का नाम मुन्शी मूलचन्द असर था। यह श्रीवास्तव कायस्थ और खैराबाद कस्बे में मोहल्ला भोलनपुर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



के रहने वाले थे। 1900 ई० में पैदा हुए। हकीम कौसर खैराबादी के शिष्य थे। फ़ारसी और उर्दू दोनों में शायरी करते थे चीफ कोर्ट लखनऊ में बकालत करते थे।

## कलाम

पहलू जो बदलती रही तक़दीर किसी की-
बन-बन के बिगड़ती रही तक़दीर किसी की
आइनये तौहीद है नैरंगे मुहब्बत हर दिल हो जाय-
खुदा ही खाक़ के पुतले को दे शऊर इतना

---

अदा शिनासे मुहब्बत हर दिल हो जाय-
खुदा ही खाक़ के पुतले को दे शऊर इतना

---

क़जाये उम्रे रवां का मुसाफ़िरखाना है-
जहाँ में रहते हैं जब तक कि आब व दाना है
अबस गुरूर है तौफ़ीक़े खैर पर ज़ाहिद
यह उसकी रहमत व बख़शिश का इक बहाना है
मुझे रियाज़त व ताअत पर एतमाद नहीं-
सरे नियाज़ है और तेरा आस्ताना है

---

मस्जिदो दैर में एक ही जल्वा अन्जुम-
लबे नाक़ूस से हक़-हक़ की सदा आती है

---

कोह व सेहरा में भटकने का चलन याद नहीं-
तेरा दीवाना हूँ मजनूँ नहीं फरहाद नहीं

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



संग व तारीक लहद में यह समझकर खुश हूँ—
आंख के सामने चरखें सितम ईजाद नहीं
ख्वाब में काश नज़र आये क़यामत उनको—
वह यह समझे हैं मेरे जुल्म को फरियाद नहीं।

———

## ६७--'इन्तज़ार' मुंशी पूरनचंद्र

मुन्शी पूरनचन्द के पिता का नाम मुन्शी सूरज बख्श बखशी था। यह श्रीवास्तव कायस्थ थे और जिला सीतापुर के खैराबाद कस्बे के रहने वाले थे। मुंशी खुन्नू लाल तायबके शिष्य थे। 1936 विक्रमी को जन्में। कई पुस्तकें लिखीं जिसमें इन्तज़ार, चश्मये इन्तज़ार, किस्सा तोता मैना प्रसिद्ध है। खैराबाद म्युनिस्पिल बोर्ड में अहलमद थे। 1929 ई० में स्वर्गवास हुआ।

पलटा न कोई जितने वहाँ नामा बर गये—
क्या जाने मिस्ले बादे सबा वह किधर गये
बिस्मिल किया किसी को, हुआ नीम जां कोई—
क्या क्या वह काम इक इशारे में कर गये।

———

## ६८--असद—मुंशी गिरधारी लाल

मुन्शी गिरधारी लाल के पिता का नाम मुन्शी रामदयाल था। यह श्रीवास्तव (खरे) कायस्थ थे। उन्नाव जिले के इंडिया गांव के रहने वाले थे। लखनऊ की कलेक्ट्री में अहलमद थे। 1921 विक्रमी में सुदामा चरित्र नामक पुस्तक उर्दू नज़्म में लिखी।

सुदामा था हक़ीक़त में ब्रह्मन-वरगे गुल जहां मे पाक दामन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



गुलिस्ताने क़िनाअत का था वह गुल-बहारे गुलशने सब्र व तवक्कुल
सरापा शक्ल सोज़न था वह उरियाँ-तालुक़ से जहां के पाक दामां
यहां तक पैरहन से था सुबुकसार-कि रखता था एक तार ज़ुन्नार।

---

## ९९-'अदीब' बाबू गुरु सरन लाल

इनके पिता का नाम बाबू महादेब प्रसाद आसी था। यह श्रीवास्तब कायस्थ थे और लखनऊ के रहने वाले थे। 1903 ई० में पैदा हुए। मौलाना अज़ीज़ के शागिर्द थे। लखनऊ युनिवर्सिटी से बी०|ए० पास किया और लालबाग हाई स्कूल में अध्यापक रहे। लाला श्रीराम द्वारा लिखित उर्दू की प्रसिद्ध पुस्तक खुम खानये जावेद के लेखन में उनको सहयोग दिया। उर्दू गद्य और पद्य दोनों लिखने में सिद्धहस्त थे।

### रूबाई

यह अहदे शबाब और यह मस्ती दिल की-
वीरां है अभी से आह बस्ती दिल की
लाज़िम है उसकी क़द्र करना सीखो-
नाचीज़ नहीं है "अदीब' हस्ती दिल की।

---

### ग़ज़ल

मंज़रे दहर कर दिया वक़्फ़े निगाहे नाज़ दोस्त-
देखिये किसको देखकर जलबये दिल नवाज़ दोस्त
शोक़ नहीं अगर मुरा दरखुरे बज़्मे नाज दोस्त-
क्योंकर यह नज़र मिली मुझे लायके इम्तियाज़े दोस्त

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



साये बशर है मुनहसर कशमकश हयात पर-
तलखीये रोज़गार है लुत्फ़े सितम तराज़ दोस्त
अक्से जमाल देखकर ख़ीरा हुई चश्मे दिल-
दस्ते तलब से छुट न जाय दामने इम्तियाज़ दोस्त
सर खुशे हुस्न हूँ मगर तंग नहीं है ज़रफ़े दिल-
अहले हवस यह क्या किया मेरी ज़बां दराज़ो दोस्त
बीमें खिज़ा से दूर हूँ मौसमे गुल से बेनियाज़-
मेरी नज़र को है नसीब नर्गिसे नीम बाज़ दोस्त
सूये हजाज़ जायें क्यों मंज़िले यार दिल में है-
काबा से है क़रीब तर काबये खाना साज़ दोस्त
शिकवये रोज़गार से और बढ़ेगा रन्ज अदीब-
महफ़िले दिल में छेड़िये किस्साये ग़म गुदाज़ दोस्त

———

हर ज़र्रा सहरा है एक राहे नुमा मेरा-
हर खारे बयाबां इक अंगुश्ते शहादत है
फ़ितरत का तकाज़ा है कुछ काम किए जाओ
माना कि वही होगा जो उसकी मशीयत है।
मालूम नहीं मुझको मैं क्या हूँ अदीब आखिर
दुनियां जिसे कहते हैं इक बन्दीये हैरत है।

———

## १००-'अख़गर' मुंशी विशवराज बहादुर

मुन्शी शिव राज बहादुर श्रीवास्तव, लखनऊ के मोहल्ला गनेशगंज के रहने वाले थे। सिद्धहस्त शायर थे फ़ारसी में भी शायरी करते थे। जीवन के अन्तिम दौर में नेत्रों की ज्योति जाती रही।

मुझ से रहता न कशीदा कभी दिलबर अपना-
हाथ बरगश्ता न होता जो मुक़द्दर अपना

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



दिल जिगर दोनों के टुकड़े किये तूने ज़ालिम -
इस तरह कोई मिटाता भला है घर अपना
उसने मिलने को लिखा है जो जवाबे ख़त में-
रक्स करता हुआ आता है कबूतर अपना
दिल यह कहता है कि खुर्शीद छुपा बदली में -
मुंह छुपाता है जों आंचल से वह दिलबर अपना
मुश्क पैदा हो अगर हलब में आइना पर
डाल दें अक्स मेरी जुल्फ़े मुअम्तर अपना
गर्दिशे वक़्त के शिकवे जो लिखे ख़त में-
फेर खाता हुआ जाता हुआ जाता हैं कबूतर अपना

———

## १०१–'अहसन'–श्याम सुन्दर कायस्थ

यह लखनऊ के निबासी तथा दया कृष्ण रेहाँ के शिष्य थे।

सर पर मश्शाता के हर वक़्त कज़ा खेलती है-
काली नागिन से नहीं यार के कमतर गेसू
यार की जुल्फ को तारीफ़ लिखे क्या अहसन"-
सुम्बले बाग़े जनां से भी है बेहतर गेसू।

———

## १०२–'असर--मु० मूलचन्द

मुन्शी मूल चन्द के पिता का नाम मुन्शी मेंडी लाल था। यह श्रीवास्तव कायस्थ थे और सीतापुर जिले के खैंगाबाद कस्बे के रहने वाले थे। फ़ारसी का अच्छा ज्ञान था और अधिकतर इसी भाषा में शायरी करते थे। एक उपन्यास चाके गरेबां भी लिखा है। 45 वर्ष की आयु में 1908 स्वर्गवास हुआ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



न हो जो दिल से फ़हमे हक़ीक़त-
वह पहुंचे कैसे क़सरे निहां तक
असर करना था उनके दिल पे एक आह-
किया क्या तूने जाकर आसमां तक
करें क्या ख़ूबीयें क़िस्मत का शिकवा-
रक़ीब अपना बना है राज़दां तक

---

## १०३-'अब्र' मुंशी शिव शंकर लाल

यह जिला हरदोई के बिलग्राम कस्बे के रहने वाले थे 'अशहर' लखनवी के शिष्य थे और डाक विभाग में नौकर थे ।

मदद ए ज़ब्ते गिरयां आबरू रेज़ी न हो जाय-
ढुलकने ही को आँसू चश्मेतर से मिस्ले शबनम है

---

जहां हम बैठ जायें हो वहां पर जश्न जमशेदी-
हमारे साग़रे गुल पर तसद्दुक़ सागरे जम है

---

हो जायेगी सहर जो बाक़ी हयात है-
भारी मगर मरीज़ पर फुरक़त की रात है।
टलते नहीं है क़ौल से जो कह दिया किया-
मरदों के दम के साथ ही मरदों की बात है
वह जिन्दगी भी चश्मे ज़दन में गुज़र गयी-
समझे थे जिसे हम कि बड़ी कायनात है।

---

## १०४-'आसिम' मास्टर छोटे लाल

मास्टर छोटे लाल "आसिम" के पिता का नाम मुन्शी बहादुर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



लाल श्रीवास्तव था। यह लखनऊ शहर के मुहल्ला नगरिया ठाकुरगंज में रहते थे। इनके छोटे भाई का नाम मुन्शी नन्हें लाल आजिज़ था जो कि नवाब बख्श साहब 'बलीग़' के शिष्य थे। अवध अख़बार में बहुत दिनों तक अनुवादक रहें। फ़ारसी और उर्दू तथा अंग्रेजी तीनों भाषाओं की अच्छी योग्यता थी। कुछ समय तक राजकीय अध्यापक रहे और निजी तौर पर अंग्रेजों को उर्दू का ट्यूशन भी पढ़ाते रहे।

### कलाम

वह है पुर सोज़ ग़म अंगेज़ ए दिल दस्तां मेरी-
मिसाले शम्मा महफ़िल जल उठी अक्सर ज़ुबां मेरी

---

दास्तां सुनते ही सय्याद ने की फ़िक्रे कफ़स-
मुझको फन्दे में फँसाया मेरी गोयायी ने-

---

अरे इक आह भी मुँह से निकलजाना कयामत है-
ज़रा सी बात में दुनिया बनेगी राज़दाँ मेरी।

---

हमारी हसरतों से ही हमारे दिल की ज़ीनत है-
बगरना इसकी वस्ती में अभी वीराना हो जाता।

---

## १०५-'आराम' मुन्शी मक्खन लाल

मुन्शी मक्खन लाल 'आराम' दिल्ली के रहने वाले थे। इन्शा के शिष्य थे। फ़ारसी भाषा पर भी अधिकार था। शाहज़ादा सुलेमान

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



शिकोह के दीवानखाने में मुन्शी थे। 1858 में इनका स्वर्गवास हुआ।

कलाम

आह अपनी ज़बान पर आई-या बला आसमान पर आई-
सरापा उसमें है कुदरत खुदा की-कहूँ क्या चीज़ है इन्साने खाकी।
हमदमो मुझसे यह कहते हो न तू यार से मिल-
उसको समझाओ ज़रा यह के न अग़यार से मिल।

---

## १०६--'बख़्शी' लाला सूरज बख़्श

लाला सूरज बख़्श 'बख़्शी' सीतापुर जिले के खैराबाद कस्बे के निवासी थे। 1910 विक्रमी में जन्मे/इनकी कृतियां महाराजा नामा, मस्नवी बख़्शी, तिलिस्म नामा, हयात नामा, पहेली नामा, ईदी नामा हैं। १९१८ ई० में इनका स्वर्गवास हुआ।

कलाम

रंग उनके दिल फ़रेब तो बू नागवारे तबा-
ऐसे भी फूल हैं चमने रोज़गार में

---

हमेशा ऐश ब राहत का रहा तालिब ज़माने में
न वह दौरे फ़लक निकला न हम जोरेशामीं निकले

---

बज़्म में दिल में जान में है तू
हर जगह हर मकान में है तू।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



## ११७-'साक़िब' शिव प्रधान जय गोपाल

शिव प्रधान जय गोपाल साक़िब सण्डीला के रईस थे और नवाब वाजिद अली शाह के विशेष परामर्शदाता थे। फारसी के उद्‌भट विद्वान थे और उसमें कई पुस्तक लिखी हैं। इनके पूर्वज भी अवध दरबार में प्रतिष्ठित पदों पर रहते चले आये थे! जब नवाब वाजिद अली शाह कलकत्ते के मटिया बुर्ज में रहने लगे तो यह भी उनके साथ जीवन के अन्तिम क्षणों तक रहे। १८९० ई० में सत्तर बर्ष की आयु में स्वर्गबास हुआ।

### कलाम

जो रंज उनको देते हैं अल्लाह उनको खुश रखे
हम अपने मुंह से किसी को करें बुराई क्या
नतीजा जिसका अदावत हो वह मुहब्बत क्या
जो आशना करे ग़म से वह आश्नाई क्या।

---

## ११८-'अख़लास' सुखराम दास ब्रम्हचारी

यह लखनऊ के मोहल्ला नवाब गंज में रहते थे फारसी और उर्दू दोनों भाषाओं में इनका दीवान था। 1880 ई० में सत्तर बर्ष की आयु में स्वर्गवासी हुए।

### कलाम

दुनिया ये बेसबात में आसूदगी कहाँ-
खटका यही है हमको किशामो सहर गये
कहते हैं हमसे आह यह सब खुफ़तगाने खाक़-
इक दिन चलोगे तुम भी उधर हम जिधर गये

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



# १०६--'बर्क़' श्याम सुन्दर लाल

बाबू श्याम सुन्दर लाल "बर्क़" सीतापुर में एडवोकेट थे। इनके पिता का नाम मु० किशन प्रसाद था। यह 1870 ई० में मौजा इस्माइलपुर जिला सीतापुर में पैदा हुए थे। फ़ारसी और उर्दू में इनकी योग्यता असाधारण थी। उर्दू में शायरी करते थे। क़ैस महोनवी के शिष्य थे। इनका एक दीवान जलवये बर्क़ और दो मस्नवियां शाह असीर और मस्नवी सिल्के मरवारीद प्रकाशित हो चुकी हैं। इनके पूर्वज अकबर बादशाह के समय से ही इस्माइलपुर में रहते चले आये हैं। बर्क़ ने उर्दू के हिन्दू शायरों पर एक परिचयात्मक पुस्तक भी लिखी है जो १९३२ में ही प्रकाशित हो चुकी है।

## कलाम

लुत्फ़ खिल्वत का शबे वस्ल हो हासिल क्योंकर
जब वह आता है तो साथ उसके हया आती है
प्यार से ज़ुल्फ़ की लेता है बलायें शाना
चूमने आपके क़दमों को हिना आती है
यह आरज़ू थी कि हम तर्के आरज़ू करते
न जाते दैर न काबा में जुस्तजू करते
पिलाये हज़रते वाइज़ा हमें जो कौसर की
तो रुख़ कभी न सूये सागरो सुबू करते
जो ताबे दीद न थी तूर पर गये क्यों वह
कलीम मिलते तो ऐ बर्क़ गुफ़्तगु करते

---

# ११०-- ज़रीफ़' लाला बेनी प्रसाद

लाला बेनीप्रसाद के पिता का नाम लाला रोशन लाल था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



लखनऊ के रहने वाले तथा 'मुसहफ़ी' के शिष्य थे। इनका एक दीवान भी है।

तेरे इश्क़ में ऐ बुते माह लक़ा—
गई मुफ़्त में सारी मशक़्क़ते दिल
रहा मूरिदे दरदो अलम ही सदा—
हुई शाद कभी न तबीयते दिल।

———

है "ज़रीफ़" को तुझ से ही चश्मे वफ़ा—
कोई और भी उसका है तेरे सिवा।
मेरी जान जो तू न सुने तो भला—
कहे जाके वह किससे मुसीबते दिल।

———

## १११--'ज़हूर' मुंशी युगल किशोर

मुन्शी युगुल किशोर के पिता का नाम जय गोविन्द प्रसाद था। यह श्रीबास्तव कायस्थ तथा मोहल्ला अस्तबल चारबाग लखनऊ के निवासी थे। ख़्वाजा हैदर अली "आतिश" के शिष्य थे। फ़ारसी गद्य लिखने में अत्यन्त प्रवीण थे। अत्यन्त खुश मिज़ाज और शिष्ट व्यक्ति थे। राजा जियालाल "गुलशन" के दामाद थे।

इधर देखता हूँ उधर देखता हूँ।
तुझे दिल ही में जलवागर देखता हूँ।

समझता हूँ मैं तेरी यह लनतरानी।
पसे परदा पेशे नज़र देखता हूँ।

ज़रा फ़िक्रे उकबा भी बहरे खुदा कर।
कि दुनिया को मैं पुर ख़तर देखता हूँ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



वही रास्तो चप है, वही पेशो पस है।
वही जलवागर है जिधर देखता हूँ।

रुखे यार से दी जो तश्बीह उसको।
दिमाग़े क़मर अर्श पर देखता हूँ।

## ११२-'आशिक़' पं० कन्हैया लाल

पं० कन्हैया लाल के पिता का नाम पं० ठाकुर दास कश्मीरी था। राजा माधव सिंह तालुकेदार अमेठी जिला सुल्तानपुर के यहां नौकर थे। दीवाने 'आशिक', बागे आशिक, सैरे कश्मीर, मसनवीये गुल, तारीख़ बग़ावते हिन्द इनकी कृतियाँ है। 1885 ई० तक अमेठी ज़िला सुल्तानपुर में थे।

### कलाम

दिल को चाहा था करूँ मैं, मकदमें जाना पे निसार
उसको देखा तो तसव्वुर ही पे कुरबां निकला!

निगह जादू हो अन्दाजे करिश्मा सेहर हो जिसका
दिले नादाँ न क्योंकर खाय धोखा ऐसे पुरफन का।

गिरफ्तारे दो रोजा हूँ नहीं इक बात भी आती।
तरीके नाला आता है न मुझको तर्ज़ शेवन का।

---

कौन कहता है कि है जान का देना मुश्किल।
इश्क में हमने तो मुश्किल को भी आसाँ देखा।

---

## ११३-'आशिक' मास्टर शंकर दयाल

मास्टर शंकर दयाल के पिता का नाम मुन्शी गिरधारी लाल । सांडी के रहने वाले तथा कायस्थ वंशज थे। अंग्रेज़ी व फारसी में एम० ए० किया था। 1916 में 66 वर्ष की आयु में देहान्त हुआ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



फिर तमन्ना का हुआ जोश कि इसरार करें।
फिर तग़ाफ़ुल ने निकाला नया तर्ज़े इनकार।

---

## ११४ 'अर्श' पं० रतन नारायन दर

पंडित रतन नरायन दर पंडित किशन नरायन कश्मीरी के पुत्र थे तथा यू० पी० सरकार के शिक्षा विभाग में सब डिप्टी इन्सपेक्टर के पद पर कार्यरत थे। फ़ारसी में भी अच्छी योग्यता थी। शेर व शायरी में बड़ी रुचि लेते।

### कलाम

बन्दा बना के गर्दशे लैलो नहार का।
इन्सान नाम रख दिया मुश्ते गुबार का।

हस्ती-ए-गुल बताऊँ तुझे क्या मैं अन्दलीब।
है एक हुबाब मौजे नसीमे बहार का।

---

है तिलिस्मे हैरत अफ़ज़ा जिसका दुनिया नाम है।
मर्गो हस्ती का समझना इक ख्याले खाम है।
सारा आलम जब तुम्हारे चाहने वालों में है।
फिर हमारी आरज़ु क्यों मुफ़्त में बदनाम है।

---

## ११५-'फ़रोग़' मुंशी नन्द किशोर

मुन्शी नन्द किशोर श्रीवास्तव, बलरामपुर ज़िला गोंडा के रहने वाले थे। सैय्यद आक़ा हसन उर्फ़ मीरन के शिष्य थे। अंग्रेज़ी स्कूल में मास्टर थे। 1290 हिजरी (१८७३ ई०) में किताब "गुलशने फ़ैज़" प्रकाशित की।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



### कलाम

अगर जलते तवे पर क़तरए आब-
पड़े फिलफ़ौर वह हो जाय नायाब।
गिरायें गर वही क़तरा कँवल पर-
नुमायाँ आब हो वह मिस्ले गौहर।
अगर बत्ने सदफ़ में जाय वुह आब-
बने बेशुब्हा वह लुलूए खुश आब।
वही पानी है अज़रुए हकीक़त-
जुदा है हर जगह तासीरे सोहबत।

---

## ११६-फ़िगार' मुंशी बैजनाथ

मुंशी बैजनाथ पुत्र मुंशी ठाकुर प्रसाद तालिब, श्रीवास्तव कायस्थ प्रतापगढ़ में कस्बा मानकपुर के रहने वाले थे। 1867 ई० में जन्में। उर्दू, फारसी, अंग्रेजी में बड़ा अच्छा ज्ञान प्राप्त किया अरबी भी आवश्यकतानुसार जानते थे। 1897 में इल्में उरुज में एक किताब "मीज़ाने सुखन" लिखी। जगंनामा आली का अनुवाद अंग्रेजी भाषा में किया है। अत्यन्त शिष्ट और सज्जन व्यक्ति थे। इनकी शाएरी में गहराई है। इज़ा वेला थबर्न कालेज में फ़ारसी के प्रोफ़ेसर थे। दीवान तो संकलित हो चुका था परन्तु प्रकाशित न हो सका।

उन्हें यह ज़िद, कि हँसी में मुझे रुला देना।
मुझे यह लुत्फ़, कि रोकर उन्हें हंसा देना।
बला से हर कसो नाकस पे बिजलियाँ गिर जाय।
हंसी है उनकी सरे बज़्म मुस्करा देना।

---

कहते हैं वह मेरी खाक उठा कर।
यूं मिटते हैं इन गली में आकर।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


रस्मो रहे उल्फ़त और बुतों में।
ऐ सादा दिली ख़ुदा ख़ुदा कर।

---

न जाती हश्र तक, आती वह नींद राहत की।
हमारे ख़्वाब को तेरा ख़याल होना था।
मज़ा न दिल को मिला नुक्तए सवैदा से।
उसे तो आरिज़े जानाँ का ख़ाल होना था।

---

कुछ आज़ादी को रहम आया जो आलामें असीरां पर।
उदासी छागई हर सू दरो दीवार ज़िन्दां पर।
नहीं मालूम क्या वेरहमियाँ की दश्ते वहशत ने।
जुनूँ ख़ुद चश्मे तर है हालते चाके गरीबां पर।

---

## ११७--'इशरत' बाबू नानक चन्द

बाबू नानक चन्द के पिता का नाम लाला मुन्शी लाल, था। यह श्रीवास्तव कायस्थ हैं। 1898 में पैदा हुए। इनके पूर्वज रियासत वलरामपुर में नौकरी करते थे। परन्तु इनके पिता को किसी कारण से वहां की नौकरी से अलग हो जाना पड़ा इस लिए पूरे परिवार को आर्थिक संकट में फंस जाना पड़ा। यह संकट यहीं तक सीमित नहीं रहा, नानक चन्द जी के पिता 36 वर्ष की ही आयु में स्वर्गवासी हो गये। उस समय मां के अतिरिक्त चार अन्य नाबालिग़ बच्चे भी थे उस समय नानक जी की आयु 11 वर्ष की थी। और यह सब भाइयों से बड़े थे। पुरानी सेवाओं के कारण रियासत की ओर से आठ रुपया मासिक की सहायता स्वीकृत हुई परन्तु यह रक़म पालन पोषण के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



लिए पर्याप्त न थी। अतः नानक जी रईसों के छोटे छोटे बच्चों को पढ़ाते थे और स्वयं भी शिक्षा ग्रहण करते थे। इस प्रकार अपने स्वावलम्बन के बल पर लायल कालेजियट स्कूल बलरामपुर से स्कूल लीविंग की परीक्षा पास की। कायस्थ पाठशाला इलाहाबाद से बी० ए० की डिग्री 1920 में प्राप्त की। एल० टी० की परीक्षा बनारस हिन्दू यूनीवर्सिटी से पास की। अपने विद्याध्ययन के समय में ट्यूशन की आमदनी से अपने परिवार की भी सहायता करते थे। कुशाग्र बुद्धि के व्यक्ति थे, सदैव वज़ीफा पाते रहे, कभी फेल नहीं हुए पहली अगस्त 1921 को बलरामपुर स्कूल में असिस्टेन्ट मास्टर हो गये। 1924 में प्राइवेट तौर से फारसी में एम० ए० की डिग्री लीं। 1926 में पत्नी का देहान्त हो गया। उसके बाद हिन्दी की परीक्षा की ओर उन्मुख हुए। विशारद, साहित्यरत्न और एम० ए० (हिन्दी) की डिग्रियाँ ली अंग्रेजी में भी एम० ए० किया। हिन्दी में भी अच्छा कलाम कहते हैं। हर्ष है कि वह आज भी हमारे बीच वर्तमान है।

————

## कलाम

आग़ाज है इस इश्क़ का अँजाम नहीं है।
जीने तो हज़ारों हैं मगर बाम नहीं है।

————

हम को क्या दरिया अगर लबरेज़ मय खाने में है।
हमतो इतनी जानते हैं जितनी पैमाने में है।

————

आँख में मस्ती, तबस्सुम लब पे, साग़र हाथ में।
आज साक़ी हासिले मयख़ाना, मयख़ाने में है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



मय खाने में क्यों मेरे लिए जाम नहीं है।
हो नाम, के साक़ी निगहे आम नहीं है।

इन आँखो के कुरबान इधर एक नजर और।
फिर मुझको तो मयखाने से कुछ काम नहीं है।

———

इक तलातुम सा दिल में बरपा है।
ना उम्मीदी यह माजरा क्या है।

दर्द, बदनामी, ग़ब्त, महुब्बियत
क्या बताऊँ कि इश्क़ क्या क्या है।

———

# ११८—'फ़लक' लाला लाल चन्द्र

लाला लाल चन्द्र, खत्री थे और लाहौर के रहने वाले थे। 13 जनवरी 1887 ई० में हाफिज़ाबाद, ज़िला गुजरान वाला लाहौर में पैदा हुए थे। 1904 ई० में लाहौर से इन्ट्रेन्स की परीक्षा पास की थी उसी साल मोहल्ला सोंधी टोला लखनऊ में इनका विवाह हुआ। चीफ इन्जीनियर के दफ्तर में नौकरी की, परन्तु भारतीयों के साथ अंग्रेज़ों का व्यवहार देखकर नौकरी छोड़ दी और एक हिन्दी पत्रिका का संपादन और प्रकाशन करना प्रारम्भ किया। 1907 में सामाजिक और राजनैतिक जीवन में प्रवेश किया। जगह जगह जोशीले भाषण दिये और राष्ट्रीय नज़्में पढ़ी! कई बार राजद्रोह का मुकदमा चला जून 1917 को 20 वर्ष के काले पानी की सज़ा हुई। कुछ समय के बाद सज़ा कम कर दी गई। जेल की यंत्रणाओं को बड़े ही प्रसन्नता पूर्वक सहन किया। 1920 में रिफार्म स्कीम पास होने पर बन्दी जीवन से मुक्त हुए। कई पुस्तकों के लेखक जिसमे जामे फ़लक, प्यामे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



फ़लक, महाभारत जो उपन्यास के रूप में है विशेष उल्लेखनीय है। इनकी शायरी भी जन समूह में चेतना का संचार कर देती थी।

## कलाम

आग में पड़ कर भी सोने की दमक जाती नहीं।
काट देने से भी हीरे की चमक जाती नहीं।
सिल पे घिस देने से भी जाती नहीं चन्दन की बू।
फूल की, मिट्टी में मिलकर भी महक जाती नहीं।
रंज में आता नहीं नेकों की पेशानी पे बल।
धूप की तेज़ी में सब्ज़े की लहक जाती नहीं।
जा नहीं सकती कटहरों में भी शेरों की दहाड़।
दस्ते गुल्चीं में भी गुन्चों की चटक जाती नहीं।
साहिबे हिम्मत नहीं डरता मुखालिफ़ से कभी।
ज़ोर से आंधी के आतिश की भड़क जाती नहीं।

———

## देश भक्ति का गीत

दिल से निकलेगी न मर कर भी वतन की उल्फ़त।
मेरी मिट्टी से भी खुश्बुए बफ़ा आयेगी।
मैं उठा लूंगा बड़े शौक से सर पर उसको।
खिदमते क़ौमो-वतन में जो बला आयेगी।
अब्रे तर अश्क बहायेगा मेरे, लाशे पर।
खाक़ उड़ाने के लिए बादे सबा आयेगी।
जिन्दगानी में तो मिलने से झिझकती है ये फ़लक़।
खल्क़ को याद, मेरी, बादे फ़ना आयेगी।

———

कभी बन कर गुले तो मैं गुलिस्तां में महकता हूँ।
कभी मैं बन के बुलबुल शाखे गुलशन पर चहकता हूँ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



कभी सौसन सिफ़त ख़ामोश रहता हूं मैं गुलशन में
कभी गुन्चों को सूरत खिल खिलाता हूं चहकता हूँ।
सरे मुशफ़िक पे चढ़ता हैं कभी मैं फूल की सूरत।
कभी मैं ख़ार बनकर चश्मे दुश्मन में खटकता हूं।
कभी हंसते हुए होंठों पे आता हूँ हंसी बनकर।
कभी मैं अश्क बनकर चश्में गिरिया से टपकता हूँ।

———

वतन की फाँस जिस दिल में गड़ी हो।
खुशी से वह उठाता हर कड़ी है।
समझता है वह उसको ऐने राहत।
मुसीबत देश हित में जो पड़ी है।
मेहन का अब्र है रहमत का बादल।
घटा आफ़त की सावन की झड़ी है।

———

नाराज़न रहता है आफ़ातो हवादिस में दिलेर।
बादलों में घिर के बिजली की कड़क जाती नहीं।
मुल्क की उल्फ़त का जज़्बा दिल से मिट सकता नहीं।
कौम की ख़िदमत की ख्वाहिश ऐ फ़लक जाती नहीं।

# ११६--'क़मर' मुंशी बाल कृष्ण

मुन्शी बाल कृष्ण के पिता का नाम मु० राधे लाल था। य श्रीवास्तव कायस्थ थे तथा लखनऊ के मोहल्ला गणेशगंज के निवास थे। "अमीर" मीनाई के शिष्य थे। 1922 विक्रमी सम्बत को पै हुए। होयोम्पैथिक डाक्टर थे। इनके चार दीवान संकलित हो चुके हैं पुराने शायर थे और इनके शिष्यों का भी एक बड़ा दायरा था जिन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


मो० इनायत अली "सरवर", अब्दुल्ला खाँ "बशीर", अतहर अली "अतहर", हर प्रसाद "ज़र्री" बाबू गुरुमुख दास "नश्तर" इन्हीं के शिष्य थे। प्रसिद्ध साहित्यकारों में इनकी गणना होती थी।

## कलाम

चमन में फूल खिलें ग़ुन्चे मुस्कराए मगर।
हंसे हुज़ूर न जब तक, कोई बहार नहीं।।

---

आपके ख़िलबत सरा में क्यों सबा हो बारयाब।
आने वाली जाने वाली, कूचबो बाज़ार की।
सर झुकाए हुए बुढ़ापे में सोचता हूँ शबाब की बातें।
कहके पीरी में दिल दुखाव क्यों।
इश्को हुस्नों शबाब की बातें।।

---

रोग़ने गुल के जला देते हैं महफिल में चिराग़
वह अनादिल को लड़ा देते हैं परवाने से।।

---

दिल में रख लूँ तेग़े क़ातिल को यही है आरज़ू।
इस से बढ़ कर ऐसी लैला के लिए महमिल नहीं।

---

## कलामे 'क़मर'

ऐ खुदा इन्सान ही के दिल जिगर को आफरीं
हामिले बारे मुहब्बत अर्श के हामिल नहीं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



मर गया मैं, उसे ख़बर न हुई। वह भी तदबीर कारगर न हुई।।
वर्क़, वह क्या जला न जिससे जहाँ। आह, वह क्या जो पुरअसर न हुई

---

अब कोई पहलू नहीं आराम का। मुनक़लिब गर दर्द हो फिर दर्द है।

---

# १२१--'फ़हमी' मुंशी गंगा प्रसाद

मुन्शी गंगा प्रसाद पिता का नाम मुन्शी शिव प्रसाद 'बहबी' था। सक्सेना कायस्थ तथा लखनऊ के निवासी थे। "बहवी" लखनवी के शिष्य थे। शाएरी इनके परिवार में परम्परागत थी अच्छा कलाम कहते थे। सत्तर साल से अधिक की आयु प्राप्त की।

## कलाम

उस महके हाथ में नहीं जामे शराब है।
दस्ते मसीहा में क़दहे आफ़ताब है।
बादल गरजते हैं वह दौरे शराब है।
बुर्जे हमल में आज मेरा आफ़ताब है।
करते हैं आप जोरो सितम मुझपे बे हिसाब।
इतना रहे ख्याल कि रोज़े हिसाब है।

---

वह आये दमे नज़ा बहरे अयादत।
क़ज़ा देख लेने दे सूरत किसी की।
न जाऊं मैं किस तरह बेताब होकर।
कि दिल खींचती है मुहब्बत किसी की।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



# १२१-श्रीमती किशन प्यारी

श्रीमती कृष्ण प्यारी, मुन्शी राम सहाय 'तमन्ना' की पत्नी थी। सम्बत 1914 बिक्रमी में उत्पन्न हुई। तरानए नव बहार की लेखिका हैं। 'तमन्ना' की मृत्यु 1932 ई० में हुई थी उनकी मृत्यु के कुछ ही दिनों के बाद यह भी स्वर्ग सिधार गईं।

## कलाम

यारब एकताए दो जहां है तू ही। बानीये जमीनों आसमाँ है तू ही॥
दरियाए चश्मे रवां है तू ही। आतिश है, शोला है, धुवां है तू ही॥
दुनिया की बहारे बे गुमां है तू ही। सब्ज़ा है, चमन है, बोस्ताँ है तू ही।

क्यों न दिल से तुझपे 'किशन प्यारी' हो फ़िदा।
हर हाल में सब पे मेहरबां है तू हीं।

———

आप बरहम नहीं ख़ुदा की क़सम। गोया नाराज़ है ख़ुदा मुझ से।
एक दिल था बह दे चुके तुझको। और क्या लेना दिल रुबा मुझ से।

———

निभे कहिए क्योंकर हमारे तुम्हारे। ग़ज़ब से भरे हैं इशारे तुम्हारे।
किसी वक्त थी जिन की सूरत से नफ़रत।
वही बन गए अब तो प्यारे तुम्हारे।
है शाम सो क़मर रूये रोशन पे शैदा।
हैं मद्दाह अब चाँद तारे तुम्हारे।

———

जो दिल फरेफ़्ताए यारे माहरु हो जाय।
शबे बिला से गेसूए मुश्कबू हो जाय।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



आँख दिखलाई तो बस पढ़ लिया किस्मत का लिखा।
क़त्ल का हुक्म तेरे सुरमे की तहरीर में है।

## १२२--'गुहर' बाबू द्वारिका प्रसाद

बाबू द्वारिका प्रसाद पुत्र मुन्शी रौशन लाल, सक्सेना कायस्थ लखनऊ के मोहल्ला नवाब गंज के निवासी थे। 1336 विक्रमी में जन्म लिया था। राजा इनायत सिंह "इनायत" के शिष्य थे।

### रुबाई

गुल्ज़ार से हम बहार में दूर हुए शैदाए चमन, चमन से महजूर हुए।
ऐ हमवतनो जुदा बतन से होकर। कुछ पूछो न ग़म से कैसे हम चूर हुए।

---

नहीं मालूम दिल किसका शहीदे नीके मिज़गां है।
खटकता करवटें लेते जो हर पहलू में पैकां है।

---

## १२३--'माधव' मुंशी माधव राम जोगी

मुन्शी माधव राम जोगी, पिता का नाम गंगा प्रसाद भक्त सक्सेना कायस्थ, लखनऊ के निवासी थे। इनके पिता नवाब मुर्शिदाबाद के दीवान थे और यह शाहे अवध के यहां बख्शीउलमुल्क के पद पर आसीन थे। ज्योतिष्य, चिकित्सा शास्त्र, संगीत की पूरी पूरी जानकारी थी। इनके जीवन का अधिकांश भाग पूजा पाठ में व्यतीत हुआ सन्तों में गणना होती है। सौ साल से अधिक की आयु पायी।

### कलाम

मिला अपना न दिलवर जबकि कूए मा मुक़ीमां में।
तेरा दीवाना अक्सर जा निकलता है बयाबां में।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



## कलामे 'माधव'

जिगर से दिल पे, दिल से चश्म पर आँखो से मिज़गां पर।
यह निकले अश्के ग़म आखिर छुपे थे दिल के दामां में।

———

अदम में क्या अजब पूछे जो यारों ने वतन हम से।
गए थे तुम कहां, किस वास्ते, क्या काम कर आए।
दुआ हर दम यही है नख़ल वन्दे बागे इमकां से।
कि 'माधव' के गुलिस्ताने तमन्ना में समर आए।

———

# १२४–'मुहिब' मुंशी बृज भूषण

मुन्शी बृज भूषण के पिता का नाम मुन्शी भैरों प्रसाद, श्रीवास्तव कायस्थ थे यज्ञधारी वंश परम्परां से आने वाली पदवीं थी। 1873 ई० में बाराबकी ज़िले के दरियावाद कस्बे में पैंदा हुए थे। 'नज़र' लखनवी के शिष्य थे। बचपन में ही पितृबिहीन हो गये थे परन्तु माँ ने शिक्षा की व्यवस्था की। दरियाबाद का इतिहास भी लिखा है। रंगे ज़माना के नाम से इनकी शायरी का एक संकलन भी प्रकाशित हो चुका है।

ख़ुद फ़रामोशिए आलम है तिलिस्मे क़ुदरत।
आये जो लोग यहाँ मुल्के अदम भूल गए।

———

उठे गर चश्मे ज़ाहिर बीं से परदा ख़ुद नुमाई का।
नज़र आने लगे हर चीज़ में जलवा ख़ुदाई का।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



जहां के साज़ो सामां पर न होना चाहिए नाज़ां ।
जब अपनी मौत पर क़ाबू नहीं दुनियां में इंसां का ।

---

जो आली ज़र्फ़ है उनको नहीं फ़िक्रे तन आसानी ।
कि ग़ैरों के मज़े के वास्ते है जाम गरदिश में ।

---

दहर में कम माया की नख़्वत मिटा देती है यूं ।
दफ़अतन जैसे हवा से कोई क़तरा ख़ुश्क हो ।

---

पस्त हिम्मत जो हैं उनको कब है दुनिया में क़रार ।
एक जा साया कभी रहता नहीं दीवार का ।

---

## ७२५-- 'क़ैसर' राय श्री कृष्ण चन्द

राय श्री कृष्ण चन्द लखनऊ के रहने वाले थे । क़ैसरुल मताबे (छापा ख़ाना) के मालिक थे ।

### कलाम

यह अदना मोजिज़ा है मुसहफ़े रुख़सारे जानां का ।
सना ख़्वां की फ़साहत और बलाग़त बढ़ती जाती है ।

वह बुत आया है अक्सर हम शहीदों के मज़ारों पर ।
ख़ुदा का शुक्र है क़द्रे शहादत बढ़ती जाती है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



न क्यों मुश्किल हो उठना बैठना बीमारे हिजरां का।
कि ताक़त घटती जाती है नक़ाहत बढ़ती जाती है।

## १२६–'गुल्ज़ार' लाला जगन्नाथ

लाला जगन्नाथ लखनऊ निवासी और जाति के कायस्थ थे। मुन्शी खैराती लाल "शगुफ़्ता" के शिष्य थे।

### कलाम

आपको गर यही इन्कार रहा तो बे ख़ौफ़।
बोसे ले लूंगा मैं रुख़सार के बनकर गेसू।
दुरफ़िशानी उसे कहते हैं कि ख़ुद ग़ुस्ल के वक़्त।
अपने दामन से लुटाने लगे गौहर गेसू।
कान में हाले दिलेज़ार सुना देते हैं।
हो गये शाने ख़ुदा से ही पयम्बर गेसू।

## १२७--'गुलशन' राजा जिया लाल

राजा जिया लाल गुलशन पुत्र भवानी बख़्श श्रीवास्तव कायस्थ लखनऊ निवासी, हैदर अली "आतिश" के शिष्य थे। मुहम्मद अली शाह नवाबे अवध के समय में मुहकमए ख़ास सुल्तानी के प्रधान थे। इनके पूर्वज दिल्ली और अवध के बादशाहों के दरबार में प्रतिष्ठित पदों पर आसीन थे। राजा जिया लाल "गुलशन", विद्या प्रेमी, अच्छे शायर तथा धनाढ्य व्यक्ति थे। फाटक राजा जिया लाल व बाग़ राजा जिया लाल लखनऊ में इस वक़्त तक आपकी स्मृति चिन्ह के रूप में शेष हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


## कलाम

कूचये जुल्फ़ से दिल पा ब रसन आता है।
या कोई वहशिए सहराए .खुतन आता है।
कुछ तस्व्वर में जो मज़मूने दहन आता है।
फ़िक्र के दाम में उनकाए सुखन आता है।

## कलामे "गुल्शन"

जिसको देखा वह अदम से तने उरियाँ निकला।
शहरे हस्ती में ख़रीदारे कफ़न आता है।
शेर गोई का मुझे कुछ दावा नहीं है "गुल्शन"।
मैं न शायर हूं न अन्दाज़े सुख़न आता है।

———

बहार आई, शगूफा फूला, खिला है तख़्ता हर इक चमन का।
कहीं तमाशा है यासमन का, कही नजारा है नसतरन का।
जो याद आया वह रूये रंगी, बहें इन आँखों से अश्के .खूनँन।
कि हो गया है रंगे गुले तर, हर एक तार अपने पैरहन का।

———

नाम से तेरे जो रोशन मतलऐ दीवाँ हुआ।
हर वर्क़ खुरशीद के मानिन्द नूर अफशां हुआ।
मुन्शीये कुदरत के मद्दाहों में ए "गुलश्न" है तू।
यह समझ ले चाक तेरा नामए इसयाँ हुआ।

———

# १२८--'किशोर' मुंशी नन्द किशोर

मुन्शी नन्द किशोर के पिता का नाम गनेश राय श्रीवास्तव था। यह सीतापुर जिले के बिस्वां कस्बे के रहने वाले थे। 1856 ई० में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



पैदा हुए थे। फारसी ख़ूब पढ़ी थी। "जिला बहराइच में वर्नाक्युलर फाईनल स्कूल के हेड मास्टर थे।" शायरी का शौक़ विद्यार्थी जीवन से ही था। यूसुफ़ ज़ुलेखा जामी को उर्दू में नज़्म किया है यह किताब प्रकाशित हो चुकी है। शायरी में किसी के शागिर्द नहीं थे।

### कलाम "किशोर"

रोक कर हाथों को तुम खंजर लगा सकते नहीं।
हम तड़पने का मज़ा जल्दी में पा सकते नहीं।
हुस्न की शोख़ी ने सिखलाए उन्हें अंदाज़ो नाज़।
अब वह फूले, रंग में अपने समा सकते नहीं।
तर्कें नफ़रत की न, मरने पर भी "किशवर" यार ने।
वे छिपाये मुंह, सूये मदफ़ुन वह जा सकते नहीं।

---------

## १२६—'कैफ़ी' महाबीर प्रसाद

महाबीर प्रसाद बी० ए० एल० एल० बी, श्रीवास्तव कायस्थ जिला हरदोई के शाहाबाद तहसील के रहने वाले थे। "अज़ीज़" लखनवी के शिष्य थे। कालिज के एक मुशायरे में इनकी ग़ज़ल सब से अच्छी मानी गई थी और एक चाँदी का पदक भी इनाम में मिला था। वकालत पेशा था। मुशायरों में भी ख़ूब भाग लेते थे।

### कलाम

पलट जायेगी दुनिया गर यही आलम रहा दिल का
बदल देता है इक बेताबी नक़्शा सारी महफ़िल का।
जुनूँ में दस्तरस इतना हुआ है नीम बिस्मिल का।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



गरेबां की जगह अब हाथ में दामाँ है क़ातिल का।
घटा सौज़ो ग़मे पिन्हा मगर आँसू नहीं रुकते।
कोई उम्मीद टूटी है कि टूटा आबला दिल का।

————

उड़ते हैं, टूटे हुए पर, कुछ फ़ज़ाऐ दह्र में।
यह मआले इन्तिहाऐ हसरते परवाज़ा है।

————

# १३०--'मदहोश' मुंशी कुंवर जी

मुन्शी कुंवर जी के पिता का नाम मु० बृज लाल था यह सक्सेना कायस्थ तथा लखनऊ के निवासी थे। फारसी के प्रसिद्ध विद्वान मुंशी मेंडू लाल "ज़ार" तथा के शिष्य थे "दीवाने बहारिस्ताने फ़साहत" के लेखक हैं।

हमसे वादा करके फिर ग़ैरों के दम में आ गया।
ए सनम फ़र्क़ अब तेरे क़ौलो क़सम में आ गया।
देखीं आंखें मस्त जो उस साक़ी-ए-सरशार की।
रश्क से ख़ते ख़िजालत जामे जम में आ गया।
ग़ैर जिस दम घर गया, पहुंचा मैं कूए यार में।
वह हुवा फ़िन्नार, मैं बाग़ें इरम में आ गया।
मर गया इश्क़, दहाने तंग में दिलदार के।
शौक़ में उनक़ा के मैं, मुल्के अदम में आ गया।

————

# १३१—'मसंरत' लाला गौरी शंकर

लाला गौरी शंकर लखनऊ के अशरफ़ाबाद मोहल्ले के।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



वाले थे। हकीम फ़िदा अहमद "दानिश" लखनवी के शिष्य थे। 40 वर्ष की आयु में 1912 में स्वर्गवास हो गया।

तजल्ली थी वह कैसी, जिससे ग़श मूसा को आया था।
मुझे भी देखना है, सूये कोहे तूर जाता हूँ।

———

# १३२-'फ़िदा' पंडित ब्रज किशन गंजूर

प० ब्रज किशन गंजूर के पिता का नाम हरी किशन गंजूर था। कश्मीरी ब्राह्मण, तथा फ़ैज़ाबाद के निवासी थे, उर्दू, फ़ारसी, अंग्रेजी में पर्याप्त योग्यता रखते थे। इनके पिता अवध के ज़िलों में सब जजी के पद पर कार्यरत थे।

क़तरये ख़ूने जिगर कीं देखिये नैरंगियां।
आँख में आँसू बना, दामन में दरिया हो गया।

———

नज़र आता जो कहीं देखाने वाला कोई।
जलबये-दोस्त भी परदे से नुमायां होता।
अब रखा क्या है वहाँ हज़रते आदम भी नहीं।
लुत्फ आता, जो कोई ख़ुल्द में इन्साँ होता।

———

हमें इस नज़आ के आलम में भी आराम आ जाये।
बवक्ते आखरी गर यार का पैग़ाम आ जाय।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



# १३३–'तालिब' मुंशी ठाकुर प्रसाद

मुन्शी ठाकुर प्रसाद श्रीवास्तव कायस्थ तथा कस्बा मानकपुर ज़िला प्रतापगढ़ के रहने वाले थे। 1848 ई० में पैदा हुए थे। मुन्शी विलायत हुसेन विलायत सफ़ीपुरी के शिष्य थे। फारसी में अच्छी योग्यता रखते थे। फ़ैज़ाबाद में नौकरी करते थे। 1904 में स्वर्गवास हुआ

जमघटा बादा कशों का है यहां ऐ वाइज़
इस अखाड़े में किधर आप भटक कर आये।
सेहने गुलशन में अनादिल ने हवा बांधी है।
किस तरह फूलों की बू बाग़ के बाहर आये।

---

गुल है बुलबुल से ख़फा, गुल से सबा बिगड़ी है।
बाद मुद्दत के गुलिस्तां की हवा बिगड़ी है।
नक़्श बर आब है यह नक्शो निगारे दुनियाँ।
ख़ानये दह्र की अव्वल से हवा बिगड़ी है।

---

हश्र का दिन भी है "तालिब" सामना है यार का।
देखिये दिखलाये क्या क्या, वल्वला दीदार का।
क्यों न मुझ शोरीदा सर को छोड़ दें, होशो हवास
क्या सिपाही साथ दें बिगड़े हुए सरदार का।
दीदए जानां से क्या चश्में अयादत हो मुझे।
हाल पूछेगा कोई बीमार क्या, बीमार का।

# १३४–'अम्बर' मुंशी अम्बर प्रसाद

मुंशी अम्बर प्रसाद पिता का नाम मुन्शी बिहारी लाल श्रीवास्तव कायस्थ, बाराबंकी ज़िले के कस्बा ,जैदपुर के निवासी थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



1931 बिक्रमी सम्वत में पैदा हुए थे। मुन्शी खुन्नू लाल "तायब" लखनवी के शिष्य थे। बाराबंकी में रजिस्टार कानूनगो थे और उन्नति करके खज़ाने में सरिश्तेदार के पद पर पहुँच गये थे और वहीं से पेंशन पाई। पूर्वज दिल्ली के रहने वाले थे। निम्नलिखित पुस्तकों के लेखक थे और यह सभी पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं :--

(१) सुदामा चरित्र (२) मसनवी शगूफ़ा (३) मसनवी समर रास्ती (४) दीबान बाग़े अम्बर, (५) दिवान रियाज़े अम्बर (६) सागर इत्यादि।

## कलाम

हज़ारो मिट गये लाखों के तन में जा आई।
निगाहे नाज़ का उनके अजब हिसाब रहा।
कभी खुशी से उठा गर, तो ग़म से बैठ गया।
ज़हाँ के बह्र में दिल सूरते हुबाव रहा।

---

गुलशन की हवा बदली घन्घोर घटा छाई।
दे जामे मये गुलगूं साक़ी, है बहार आई।
ईसा से कहे कोई मुरदा को किया ज़िन्दा।
यह दर्द मेरा जाये तब जानें मसीहाई।

---

नासिहा दिल से न जायेगा ख़्याले-हुस्ने यार।
कौन खो देता है दौलत हाथ में आई हुई।

---

सराय हस्ती है जाए इबरत, अजब ज़माने का हाल देखा।
बहुत से अहले दिलों का हमने उरुज देखा ज़वाल देखा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



फलक पे पहुँचे जो जाके बादल, ज़मीं पे बरसे वह आब होकर ।
उठाया जिसने ग़रूर से सर, उसी को बस पायमाल देखा ।
किसी की किस्मत में है तबाही किसी के सर पर है ताजे शाही ।
किसी को हासिल हुई गदाई, किसी को खुरसन्द हाल देखा ।

---

# १३५–गरीब मुंशी ताज बहादुर

मुन्शी ताज बहादुर उर्फ खुदा बख्श पिता का नाम मुन्शी आलम चन्द उर्फ हुसेन बख्श, लखनऊ के चौपटियाँ महोल्ले के रहने वाले थे। मतबऐ समरे हिन्द (छापा खाना) में नौकर थे। मुहर्रम में ताजियादारी बड़ी धूमधाम से करते थे इस्लाम धर्म से बड़ा लगाव था। 70 बर्ष की आयु पा कर 1891 मे स्वर्गबासी हुए।

मुझसे उनके दरो दीवार को यह उल्फत है।
मैं अगर बां से चलूँ साथ ही दीवार चले
रक़ीब अब तो आँखें दिखाता है मुझको
समझते हैं हम यह इशारा तुम्हारा।
हो तुम महवे आईना, हम महवे आरिज़।
यह प्यारा हमारा, वह प्यारा तुम्हारा।
शबे माह है और वह महवश भी आया।
"ग़रीब" आज चमका सितारा तुम्हारा।

---

# १३६- 'आमिल' मुंशी राम प्रसाद

मुन्शी राम प्रसाद के पिता का नाम लाला शिव प्रसाद था। यह ज़ाति के खत्री तथा लखनऊ के निवासी थे। इनके पूर्वज लाहौर के रहने वाले थे। महाराजा सुख रामदास 'अखलास" के शिष्य थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



ऐकादशी महातम, बहरे तिलिस्म, दरियाये तिलिस्म, इनकी कृतियाँ हैं। एक मस्नवी में अपना वृताँत इस प्रकार दिया है।

मैं हूँ इक बन्दऐ नाचीज़ो नाशाद।
मुझे कहती है खिलक़त राम प्रसाद॥
पिदर थे मेरे शिवप्रसाद नामी।
बक़ौमे खत्री उस्ताद नामी॥
बुज़ुर्गों का वतन है शहरे लाहौर।
अजब रंगीं चमन है शहरे लाहौर॥
छुड़ाया बख्त बाज़ों ने वतन से।
उड़ाया सूरते बुलबुल चमन से॥
ग़रज़ मुद्दत से याँ दिलशाद हूँ मैं।
मियाने लखनऊ आबाद हूँ मैं॥

---

## १३७-'उबूर' कुंवर अम्बे सहाय

कुँवर अम्बे सहाय, राजा जिया लाल "गुलशन" के पुत्र थे। 1825 ई० मे लखनऊ में पैदा हुए थे। उर्दू और फारसी दोनों में शेर कहते थे। 1909 ई० में 84 वर्ष की आयु में इनका स्वर्गवास हुआ।

ए बर्क़ किसके खिरमने हस्ती पे है नज़र।
कुछ भेद तो बता मुझे इस इज़्तराब का।

---

मरीज़े राम की सूरत देखकर बोले मुकर्रर वह।
यह अच्छा हो नहीं सकता यह अच्छा हो नहीं सकता।

---

जो दिल देके हुआ बोसे का मैं तालिब तो वह बोला।
गरां क़ीमत है यह, माल सस्ता हो नहीं सकता॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



नहीं उनको खबर हम खेलते हैं जान पर अपनी।
तमाशा है कि वह महवे तमाशा हो नहीं सकता।।

---

## १३८--'इनायत' कुवंर इनायत सिंह

कुंबर इनायत सिंह के पिता का नाम राजा लाल जी सिंह था। यह सक्सेना कायस्थ तथा लखनऊ के निवासी थे। जवाहर सिंह जौहर के शिष्य थे। इनकी कविताओं का संकलन प्रकाशित हो चुका है। 1959 बिक्रमी में मृत्यु हुई।

जुदा कर दो तकल्लुफ को न बैठो मेहमाँ होकर।
रहो पहलू में दिल होकर, मेरे सीने में जां होकर।
दिले पुरदाग में होते हुए आँखों में आ बैठो।
तमाशा देखने दरिया का आओ गुलसितां होकर।
अजब शाने ख़ुदा है बाद मुर्दन भी रहे ग़मगीं।
रक़ीब आते हैं तुरबत पर हमारी नौहा ख्वां होकर।

---

हो गया है उस परी पैकर का घायल आफ़ताब
ग़र्क़ है ख़ूने शफ़क़ में मिस्ले बिस्मिले आफ़ताब।
मांग, चोटी, रुख, जबीं से उनकी है ख़ूबी में कम।
कहकशां, उक़्दे सुरैया माह कामिल आफ़ताब।

---

जबसे सुना कि मेंहदी लगी है न आयेंगे।
बदला हुआ है रंग दिले बेक़रार का।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



## १३९-आसी मुंशी तोता राम

मुन्शी तोता राम 'आसी' बिलग्रामी ज़िला हरदोई के रहने वाले थे। यह देहली के मीर मुन्शियों के बंशज थे। इनके परिवार के लोग दिल्ली से लखनऊ आए और अवध के शासन से सम्बन्धित हुए तथा वहाँ के स्थायी निवासी हो गये। फ़ारसी और उर्दू दोनों में उच्च कोटि की शायरी करते थे। मुन्शी मेंडू लाल 'ज़ार' के शिष्य थे। 1260 हिजरी (१८३४ ई०) में स्वर्गवासी हुए।

तर हो गई मिस्सी तेरे लब की शराब से।
हैरां हूँ रात भीग गई आफ़ताब से।

---

## १४०–'आसी' महादेव प्रसाद

मुन्शी महादेव प्रसाद के पिता का नाम मुन्शी गंगा प्रसाद था जो श्रीवास्तव कायस्थ तथा लखनऊ के निवासी थे। इनके वंशज शाहाने अवध के दरबार में प्रतिष्ठित पदों पर रहे। मुन्शी बाल कृष्ण 'क़मर' के शिष्य थे। उर्दू, हिन्दी, फ़ारसी तीनों भाषा में शाएरी करते थे साधू प्रकृति के व्यक्ति थे और उन्हीं का सत्संग करते थे। इनका अधिकतर कलाम सूफ़ी विचार धारा से प्रभावित है। लखनऊ म्युनिसिपैल्टिी में असिस्टेन्ट सुपरिन्टेंडेन्ट वाटर वर्क्स के पद पर काम कर रहे थे।

### कलाम

इश्क़ ने झगड़ा मिटाया काफ़िरो दीनदार का,
दानए तस्बीह से रिश्ता मिला ज़ुन्नार का,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



सेहर है आलम पे किसके परतवे अनवार का।
ज़र्रे, ज़र्रे में है पैदा हौसला दीदार का।

किश्तिये आसी को है मौजे हुबादिस का खतर।
ना .ख़ुदाई कीजिए फ़रमा रवाए द्वारका।

———

ज़नो फ़रज़न्दो खेशी अक़रबा का ज़ोम बातिल था।
अनीसे बावफ़ा वक्ते मुसीबत इक मेरा दिल था।
उठाया तुमने क्या मुझको मिटादी गरमिए महफ़िल।
दिले सोज़ां मेरा रौनक़ फ़ज़ाए हुस्ने महफ़िल था।

———

क्या हुआ दिल मेरा पहलू में जो पाया न गया।
इन निगाहों के सिवा और, तू आया न गया।

———

वह नक़ाबे रुखे जानां हो कि चिलमन दर की।
हुस्ने पुर नूर किसी से भी छिपाया न गया।

———

## १४१--'तालिब' मुंशी विनायक प्रसाद

मुन्शी विनायक प्रसाद के पिता का नाम मुन्शी रोशन लाल था। यह श्रीवास्तव कायस्थ तथा गोंडा ज़िला के उतरौला कस्बे के रहने वाले थे। 1855 ई० में मुन्शी विनायक प्रसाद बनारस में पैदा हुए। "रासिख" देहलवी और "दाग़" देहलवी के शिष्य थे। हाईकोर्ट इलाहाबाद से मुख़्तारी की परीक्षा पास की परन्तु इस पेशे में मन न

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



लगा। इस लिए कलकत्ते चले गये, कई ड्रामे लिखे। नाटक कला की दशा उस समय बड़ी शोचनीय थी। आग़ा हश्र और सैय्यद मेंहदी हसन ने इनके बाद इस क्षेत्र में पदार्पण किया। इनके नाटकों में सांस्कृतिक पहलुओं के साथ बिनोद का भी समावेश अत्यन्त शिष्टता के साथ होता था। इस लिए अनेक देशी रजवाड़ों ने अच्छे नाटक लिखने के कारण बहुत से पुरस्कार प्रदान किए। भारत की प्रसिद्ध पत्रिकाओं में इनकी नज़में तथा लेख प्रकाशित होते रहे। अधिकतर बम्बई में रहे और यहीं 1922 ई० में स्वर्गवास हुआ।

इक रोज़, मैं इक ख़्वाब में, हंगामे सेहर था।
नागाह मेरा तुरबते क़ैसर पे गुज़र था।
याद आई एकाएक जो मुझे शौकते मरहूम।
इबरत से यह दरयाफ्त किया बादिले मग़मूम।
क्यों मिट गए वह नक्शे नगीं क्या हुई सौलत।
क्या थी इसी दो हाथ ज़मीं के लिए दौलत।
तुरबत से निदा आई कि ऐ वाए मुकद्दर।
वो हाथ में भी पांव न फैला सके बिस्तर।
दो हाथ ज़मी भीं नहीं आराम की जा है।
हर अज़ावुए तेरा उसमें भी कीड़ों की गिज़ा है।

———

आँखें मेरी निसार है अबरुए यार पर।
पुतली का नाच देखिए खन्जर की धार पर।
बदला नहीं है रंग यह मूये सियाह ने।
फ़रमान इन्तक़ाल का आया है तार पर।

———

## १४२--'तालिब' इक़बाल बहादुर

बाबू इक़बाल बहादुर सिन्हा 'तालिब' के पिता का नाम द्वारिका प्रसाद "निशात" था। यह श्रीवास्तव कायस्थ तथा मौजा-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



सरैयां ज़िला सीतापुर के ज़मींदार थे। 1888 ई० में पैदा हुए थे। 1905 में हाई स्कूल की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की। डिस्ट्रिक्ट बोर्ड सीतापुर में कलर्क थे। गज़ल आदि अच्छी कहते थे मुशायरों में इनका कलाम खूब पसन्द किया जाता था।

तबस्सुम ज़ेरे लब, शर्म आंख में, चुटकी नमकदां पर
वह किस अन्दाज़ से रखते हैं मरहम, ज़ख्मे पिन्हां पर।
जिगर पर हाथ, किस्मत पर नज़र, सर पाये दरबां पर।
किसी को आही जाएगा तरस, हाले गरीबां पर।

———

हासिले हर दो जहाँ है, क़ैदे तन्हाई मुझे।
अपने मुँह से कोई कहदे अपना सौदाई मुझे।
हाय वह मायूसिए शौक़े निगाहे वापसी।
दम ब.खुद थीं देखकर चश्मे तमन्नाई मुझे।

———

रहेगा रुख उसी कूचे की जानिब मेरी मैय्यत का।
कोई करने को यों सौबार क़िबला रु मुझे कर दें।
तमन्ना है अगर राहे तलब में कामयाबी की।
हुसुले मुद्दआ की तर्क, "तालिब", आरज़ू कर दे।

# १४३--'साहब' मुंशी साहब राय

मुन्शी साहब राय श्रीवास्तव कायस्थ तथा लखनऊ के निवासी थे नवाब आसिफ़ुद्दौला के समय के शाएर थे। तारीख़ गोई में इनकी बराबरी करने वाला उस समय कोई न था। एक बार नवाब

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



आसिफुद्दौला ऐश बाग़ के फाटक से जा रहे थे देखा कि फाटक पर जो मिट्टी का शेर है उसके मुंह में तोते ने अपना घर बनाया है। नवाब साहब ने मुस्करा कर साहब राय की तरफ देखा। उन्होंने हाथ बाँध कर अर्ज़ किया।

क़ुर्बान शाह के सदके क्या अद्ल का निशाँ है।
जो शेर के दहन म तोते का आशियाँ है।

## १४४--'तालिब' प्यारे लाल उन्नावी

प्यारे लाल तालिब पिछड़ी जाति से सम्बन्धित एक प्रतिष्ठित फौजी परिवार के सदस्य हैं। इनके पिता का नाम मेवाराम था जो सूबेदार मेजर थे और सीमान्त प्रदेश के ज़िला बन्नू मे नियुक्त थे। तालिब सहाब का जन्म 27 दिसम्बर, 1916 को ज़िला बन्नू के क़िले में हुआ था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा भी यहीं हुई परन्तु हाई स्कूल की परीक्षा कोहाट से प्रथम श्रेणी में पास की और लाहौर एफ०सी० कालेज से बी०ए० किया एम०ए०एल०एल०बी की डिग्रियाँ लखनऊ विश्वविद्यालय से प्राप्त की और अल्प संख्यक की समस्याओं पर पी० एच० डी० के लिए एक शोध प्रबन्ध तैयार किया।

इन्होंने 1934 ई० से शायरी प्रारम्भ की इनकी पहली गजल "बन्दे मातरम" में छपी जो उस समय रावलपिंडी से प्रकाशित होता था इसके बाद बराबर उनकी नज़्में विभिन्न प्रतिष्ठित पत्र तथा पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहीं। डी०ए०वी० कालेज रावलपिण्डी जो उस समय एक प्रसिद्ध शिक्षण संस्था थी वहाँ से प्रकाशित होने वाली मैग़ज़ीन के उर्दू सेक्शन के सम्पादक भी रहे। इनसे पहले उर्दू के प्रसिद्ध साहित्यकार स्व. श्री जगन्नाथ 'आज़ाद' उसके सम्पादक थे। अपने विद्यार्थी जीवन से ही यह लाहौर के उर्दू मुशायरों और कान्फ्रेंसों आदि में बराबर भाग लेते रहे।

इनकी पहली नज़्म "मेरे महबूब में उस वक़्त तुझको याद आऊँगा" सुप्रसिद्ध पत्रिका "ज़माना" में छपी जो अत्यन्त लोकप्रिय हुई

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



और अन्य पत्रिकाओं में भी प्रकाशित हुई। इनके कलाम का पहला संकलन "नवाये सरोश" (प्रथम भाग) के नाम से मकतबा उर्दू लाहौर से प्रकाशित हुआ।

अंग्रेजी शासनकाल में इन्होंने एक नज़्म "शायर की होली" लिखी जिसके फलस्वरूप भारत सुरक्षा एक्ट के अन्तर्गत गिरफ़्तार कर कर लिये गये और तीन महीने से अधिक समय तक हिरासत में रखा गया। इस नज़्म की कुछ पंक्तियां इस प्रकार है:—

आइये बच्चों के हाथों गुल फ़िसानी देखिये
आइये रम्ज़े बहारे रंग पाशी देखिये।
आइये लुटते यह याक़ूती खज़ीने देखिये
आइये जोबन पे यह लाले की जवानी देखिये
और हवा के दोश पर खूनी सफ़ीने देखिये

× × ×

महवे गुल्शने चमन महशर बदामाँ टोलियाँ
यह सरकती साड़ियां और यह मसकती चोलियाँ
यह सितमगर नव जवानी की अदा बहकी हुई
यह नशोली आँख शर्माती हुई महकी हुई
यह शकर खन्दा यह ग़म्ज़ा और यह बेबाकियाँ
सादगी के भेस में चलती हुई चालाकियाँ
लेकिन ए शायर यह दिन हो और तू मग़मूम हो
खानये दिल नूरे कैफ़ियात से महरूम हो
इन मनाज़िर से तेरे दिल की कली खिलती नहीं
तेरी फ़ितरत फ़ितरते आलम से क्यों मिलती नहीं
ऐ करमफ़रमा न समझा है तुफ़ शायर की बात
तू है खुशनूदे गुलामी ढूंढता हूं मैं नजासे
जिल्लते तौक़े गुलामी को मैं सह सकता नहीं
तायरे आज़ाद हूँ पिंजरे में रह सकता नहीं

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



फिर भी यह हमसे तक़ाज़ा है कि खामोश रहें
नश्शये ख़्वाबे, जिहालत में ही मदहोश रहें

× × ×

बस कि जब ताक़ते इज़हार नहीं है बाक़ी
ताबे दिल सोज़ीए गुफ़्तार नहीं है बाक़ी
जुरअते दीदये ख़ूंबार नहीं है बाक़ी
फ़ुर्सते सोरिशे बेकार नहीं है बाक़ी
हो चुकी बहस, गुज़ारिश यह मगर है तुझसे
अर्ज़ एक मालिके तक़दीरे बशर है तुझसे

× × ×

तालिब साहब सम्प्रति राज्य सभा के सदस्य हैं और स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले से संसद के सदस्य होते चले आ रहे हैं। यह डाक्टर भीमराव अम्बेदकर के प्रमुख सहयोगी रहे हैं। इन्होंने हरिजनोत्थान के लिए अनेक कानून बनवाय हैं।

खेद है कि प्रतिभा का यह धनी व्यक्ति राजनीति में पड़कर साहित्य सेवा से बिमुख हो गया नहीं तो साहित्य के क्षेत्र में प्रथम श्रेणी के साहित्यकारों में स्थान पाता।

## १४५-'त्रिभुवन बावड़ी' त्रिभवननाथ श्री०

इनका जन्म सीतापुर जिले के कस्बा बावड़ी 1906 ई० को आ था। इनके पिता बिशेश्वर बख्श ज़मींदार और सम्पन्न व्यक्ति । क्रिश्चयन कालेज से इन्टर की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात ार बिभाग की सेवा में आ गये।

वह न तो मुशायरों में भाग लेते थे न स्टेज पर आकर वाहवाही के लिए लालायित होते थे। वह जन्मजात शायर न थे, परन्तु लन और अनुभव के आधार से उनकी शायरी परिमार्जित थी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



ऊँची कल्पना, सरलता, सादगी और रंगीनी उनकी शायरी की बिशेषतायें हैं।

उनको मस्ते शबाब होना था
मुझको खाना खरब होना था
रोज़ सुनते थे हश्र के क़िस्से
उसके कूचे में जाके देख लिया
कह गयीं उनकी सुरमगीं आँखें
जो बयाँ मुझसे माजरा न हुआ

21 जुलाई, 1962 को अपने कर्तव्य का पालन करते समय एक रेल दुर्घटना में इनकी मृत्यु हो गयी।

———

# १४६—'नूर' कृष्ण बिहारी

कृष्ण बिहारी 'नूर" लखनबी 8 नवम्बर, 1926 ई० को लखनऊ में पैदा हुए। इनके पिता का नाम बाबू कुंज बिहारी लाल श्रीवास्तव था। अमीनाबाद इन्टरमीडिएट कालेज में इन्टर तक शिक्षा प्राप्त की। श्री जफर अब्बास फ़ज़ल नक़वी को अपना उस्ताद बनाया और 1942 ई० से शायरी प्रारम्भ की ओर 1955 तक उनसे शायरी में सलाह मशबिरा लेते रहे। हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बड़े-बड़े मुशायरों में बराबर शरीक होते रहते हैं।

1977 में "दुख-सुख" के नाम से इनके कलाम का एक संकलन प्रकाशित हो चुका है जिस पर उर्दू अकादमी तथा मीर अकादमी ने पुरस्कार भी दिया है। इनके कलाम का एक दूसरा संकलन "तपस्या" शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा है। 1945 से पोस्टल विभाग की सेवा में कार्यरत हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



कलाम

किसने अबतार हुए कितने पैग़म्बर आये
तु न आया तेरे पैग़ाम बराबर आये

———

गुज़रे जिधर-जिधर से वह पलटे हुए नक़ाब
इक नूर की लकीर सीं खिचती चली गयी

× × ×

मैं जिसके हाथ में इक फूल दे के आया था
उसी के हाथ का पत्थर मेरी तलाश में है

———

होके बेचैन मैं भागा गया हू आहू की तरह
बस गया था मेरे अन्दर कोई खुशबू की तरह

× × ×

मैं तो गज़ल सुना के अकेला खड़ा रहा
सब अपने-अपने चाहने वालों में खो गये

## १४७--'बेनवा' गेंदन लाल

गेंदन लाल बेनवा के पिता का नाम मुन्शी हीरा लाल सक्सेना है। यह जहानाबाद ज़िला पीलीभीत के रहने वाले हैं। इनका जन्म सम्वत............है। जब यह १२ साल के थे तभी इनको माता का स्वर्गवास हो गया और आघात को हुए चार वर्ष भी नहीं व्यतीत हुए थे कि पिता का भी देहान्त हो गया है। अतः इनका पालन पोषण

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



इनके ननिहाल (बोसलपुर) में हुआ। १९२६ में हाई स्कूल की परीक्षा पास करके डिस्ट्रिक बोर्ड पीलीभीत के दफ्तर में नौकर हुए और सन् १९६४ में आफ़िस-सुपरिन्टेन्डेन्ट के पद से रिटायर हुए। आपके पुत्र सर्वश्री सतीश चन्द्र जौहरी, दिनेश चन्द्र जौहरी, और दो पुत्रियां हैं इनके सभी बेटे अच्छे २ पदों पर हैं।

श्रीयुत बेनवा इस समय अपने बड़े बेटे सतीश चन्द्र जौहरी के साथ चन्द्र लोक लखनऊ में रह रहे हैं।

मुझे इनसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ अभीतक जितने उर्दू लेखकों से मिला उनमें यह सबसे वायोवृद्ध परन्तु अत्यन्त जीवन्त व्यक्तिय लगे। मुझे यह देखकर भो आश्चर्य होता है कि ज़िला बोर्ड की क्लेर्की से जीवन प्रांरम्भ करने वाले इस व्यक्ति ने इतना अधिक और इतना अच्छा कैसे लिखा। यहीं नहीं गृहस्थ जीवन की सारी ज़िम्मेदारियों का भी निर्वाह किया और अपने परिवार को बहुत ही ऊँचे उठाया।

उन्होंने पूर्ण राम चरित मानस, महाभारत, गीता, कवितावली और मेघदूत जैसे ग्रन्थों का उर्दू में अनुवाद किया। इसके अतिरिक्त सुदामा चरित्र, और विनय पत्रिका, राम विनय, कृष्ण स्तुति, दुर्गा बिनय का भी पदों में अनुवाद किया। रानी सारंधा पर भी एक काव्य पुस्तक लिखो है। "जामे राम" नाम एक पुस्तक उन्होंने हिन्दी में भी लिखो है। इस पुस्तक के उत्तर कांड में राम जी का अयोध्या आगमन और भरत मिलाप का वर्णन इन शब्दों में किया है।

श्री रघुवर ने देखा जो लोगों का घठा साया,
तो पुष्पक को उतरने के लिए धरती पे फ़रमाया।
उतर कर राम ने पुष्पक को फिर खुश हो के समझाया,
कि जाओ खिदमते मुनअम अब हम दर्दं हम साया।

इजाज़त पा के रघुवर की चला पुष्पक सुए जन्नत,
मगर दिल में फिराक़े राम की आतिशे उल्फ़त।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



बेनवा साहब की दूसरी कृति संस्कृत के अमर ग्रन्थ "मेघदूत" का उर्दू में अनुवाद है। यह कृति मुसद्दस के रूप में प्रस्तुत किया है। देखिये अनुवाद के बावजूद भी भाषा में कितना प्रवाह, उपयुक्त मुहावरों का प्रयोग तथा कल्पना की समानता है।

ख्याल आया कि उसके पास पैग़ामे वफा भेजू
बदस्ते अब्र भेजूं या यह अहसाने सबा भेजूं
वसीले से सबा के शौक़ के अरमान किया भेजूं
यह बेहतर है कि बादल ही के हाथों मुद्दआ भेजूं
कुछ ऐसा सोचकर उसने चुना सेहरा के फूलों को
बराय जज़्बा साई चुन लिया ज़ारी बसूलों को

जब कोई सन्देश वाहक न मिला तो मुकेश ने बादल ही को सन्देश वाहक चुना और अपनी जीवन संगिनी को सन्देश ले जाने को बादल की खुशामद करके कहता है

मेरी हमराज़ को अबरे करम पहुँचा दो
मेरे आंखों के यह दोनों छलकते जाम पहुँचा दो
जिगर ले जाओ मेरा यह दिले नाकाम पहुंचा दो
ब अल्फ़ाज़ें दिगर काबे में दो असनाम पहुँचा दो
गुले आज़ुरदा को जाने वफ़ा जाकर खिला देना
मेरी जानिब से दो आंसू मेरे प्यारे गिरा देना

× × ×

अलका पुरी का वर्णन देखिये।
चमक उठे हैं अलका के महल महताब की सूरत
तड़प उठेंगे जुगनू देखकर सीमाव की सूरत
कभीं खींचोगे इस ज़ू को अगर तुम ख़्वाब की सूरत
तभी लहरा उठोगे खुद ब खुद ही आप की सूरत
हवा के फ़ैज़ से परदेसियों की मस्त महिलायें
गुज़रती हैं तो खुश्बू से महक उठती हैं सब राहें

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



उनकी दूसरी कृति सुदामा चरित्र है। सुदामा की दरिद्रता एवं शरीर की जीर्णता का वर्णन करते हुए कहते हैं।

करम करते थे जुगनू रोश्नो करते थे छप्पर में
यही चिन्गारियां लिखी थी तिनकों के मुक़द्दर में
लबे अन्जुम से जब वर्क़ तब्वसुम कूद कर घर में
उतर आती थी गरदूं से तो पड़ जाते थे चक्कर में
यही शक था मिज़ाजे अख्तियारे बर्क़ रोशन पर
कहीं आतिश बरस जाय न तिनकों के नशेमन पर

× × ×

जमीं तक बार सहने से उनका हिचकिचाती थी
कि जब वह पांव धरते थे तो धरती कांप जातीं थी

यानी वह धरती पर बोझ थे जिसे धरती भी वरदाश्त नहीं करती थी। यहां तक की जब वह उस पर क़दम रखते थे तो वह भी उनके बोझ से कांप उठी! इस तरह साबित किया है कि ग़रीब का अस्तित्व जमीन भी-गवारा नहीं करती थी।

## सुदामा के गृह दशा का चित्ररण

न बर्तन थे न बर्तन बन्द करने के लिये ताला
तका करने थे हसरत से चमन में फूल का प्याला
कटोरे की तरह दिल में समाया था गुले लाला
बजाय थाल रहता था नज़र में चांद का हाला
ग़रीबी का तमरख़र था तो खनदा पायमाली थी
कि थी टूटी हुई क़िस्मत न लोटा था न थाली थी

गरीबी झेलते झेलते जब सुदामा कीं पत्नी तंग आ गईं तो सुदामा को कृष्ण जी के पास जाने के लिए कहने लगी कि जाओ कृष्ण जी ही के पास जाओ वह तुम्हारे मित्र हैं कुछ सहायता ही करेंगे।

तो क़ैदे मुफलिसी से ज़िन्दगी आज़ाद हो जाय
मुक़द्दर झूम उठे रोता हुआ दिल शाद हो जाय

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



परन्तु सुदामा की अपनी पत्नी की यह नसीहत अच्छी नहीं लगी।

बड़ी उस्ताद हो मुझ को सबक उलटा पढ़ाती हो
जो औरों को सिखाता है उसी को तुम सिखाती हो

× × ×

बेनवा साहब ने महाभारत का भी अनुवाद उर्दू नज़्म में किया हैं। महाभारत के कुछ विशेष अंशों का एक संकलन "इक़्तिबासात महाभारत" भी उर्दू अकादमी की आर्थिक सहायता से प्रकाशित हो चुकी है। जयदरथ बध का बर्णन इन शब्दों में किया है।

समझ कर शाम की आमद निकल कर जयदरथ आया
तो फिर अर्जुन से यों गोया हुआ माया का बरमाया
वह देखो ढल गया सूरज ज़मीं पर छा गया साया
बक़ौले अपने जला दो आग में अब यह तपत काया

बड़ा आया मुझे मारने खुद मरने वाला है
कि तेरा दोस्त श्याम लेकिन दिल भी काला है

उसी को तू बताता था जगत का पालने वाला
कहां के बेवफ़ा से आह तेरा पड़ गया पाला
अभी तक ज़ख्म था अगर अब रसने लगा छाला
कि जिसको माह तू कहता था निकला माह का हाला

गवांई जान उल्फ़त में बुते बे पैर की तूने
रहा तक़दीर पर क़ायम नहीं तदबीर की तूने

बेनवा साहब की लेखनी केवल अपने ही धर्म तक सीमित नहीं रही बाबा फ़रीद शंकरगंज जो सिखों के ग्रन्थ में शामिल है उसमें १३० श्लोकों का अनुवाद किया है कुरान शरीफ़ का भी अनुवाद आले उमरान तक किया है हज़रत इमाम हुसेन की शहादत पर भी मार्मिक मर्सिया लिखा है। इसके अतिरिक्त बहुत से नआत और मनक़बत भी लिखे हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



# १४८--'ख़याल' प्रेमनारायण

श्री प्रेम नरायण ख्याल बरेलवी के पिता का नाम स्व० चेतराम था जो अध्यापक थे। इनका जन्म सन १९१२ ई० श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को ग्राम घंघोरा तहसील बीसलपुर ज़िला पीलीभीत मे हुआ था। इनका पैतृक गांव बिथरी चैतपुर जिला बरेली है, उसी गांव में प्रायमरी की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात बरेली शहर में आ गये और यही से १९३३ में हाई स्कूल की परीक्षा पास की। १९४१ में क्वेटा ब्रिटिश बिलोचिस्तान में सहायक अकाउन्टेन्ट के पद पर रहें परन्तु उसे छोड़कर कुबर दया शंकर इन्टर कालेज बरेली में सहायक अध्यापक के पद पर नियुक्त हुए। यहीं से उर्दू और में एम० ए० अ र एल० एल० बी० की परीक्षायें पास की और वकालत के पेशे में आ गये।

शेरो शायरी तथा पढ़ने लिखने का शौक प्रारम्भ से ही था। आज कल लखनऊ मे अपने पुत्र श्री बिमल कुमार सुभाष (स०सम्पादक पायनियर) के साथ नैपियर रोड कालोनी में रह रहे हैं।

## गज़ल

ऐब हर इक अदा न हो जाये।
सारी दुनियाँ फिदा न हो जाये।
गर निकाली भंवर से हर किश्ती।
नाख़ुदा ही ख़ुदा न हो जाये।
नेको बद में रही न गर तफ़रीक़।
ना रवा ही रवा न हो जाये।
गर तरक्क़ी में कुछ कमी न हुई।
दर्द बढ़ कर दवा न हो जाये।
देख कर रस्मे दोस्ती उनका।
जान तन से जुदा न हो जाये।
लब तक आया है दम्ने नाज़ुक से।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



जोहर आबे बक़ा न हो जाये।
संग रेज़ा हो काश दिल उनका।
तीर आहे रसा न हो जाये।
पड़ गया खत मेरा रक़ीब के हाथ।
देखिये क्या से क्या न हो जाये।
बढ़ रहा है असर दुआ में ख्याल।
बेवफ़ा बावफ़ा न हो जाये।

# १४६-'मुल्ला' पं० आनन्द नारायण

श्री मुल्ला के पिता का नाम (स्व०) जगत नरायण मुल्ला है। यह कश्मीरी पंडित है। इनके पिता लखनऊ के अत्यन्त प्रतिष्ठित वकील थे और लखनऊ विश्व विद्यालय के वाइस चांसलर भी वे रह चुके थे मुल्ला जी का जन्म १९०१ ई० में हुआ था। वह भी लखनऊ हाई कोर्ट के चीफ़ जस्टिस के पद तक पहुँच कर रिटायर हुए। शेरो शायरी का शौक़ प्रारम्भ से ही था। मोलवी बरकत उल्ला रज़ा लखनवी के से सलाह व मशविरा लेते थे। इनकी शायरी के तीन संकलन प्रकाशित हो चुके है। मेरी हदीसे उम्र गुज़ारां तीसरा सकलन है। पहला संकलन जूये शीर के नाम से १९४९ में तथा दूसरा कुछ ज़र्रे कुछ तारे के नाम १९५९ में प्रकाशित हो चुका है।

एक गद्य की पुस्तक "कुछ नस्र में भी" के नाम से प्रकाशित हो चुकी है। ये बिभिन्न प्रकार के निबन्धों का संग्रह है। उ० प्र० उर्दू अकादमी के उपाध्यक्ष भी रह चुके हैं।

## मुहिब्बाने वतन का नारा

शहीदे जोर गुलचीं हैं असीरो खस्ता तन हम हैं।
हमारा जुर्म इतना है हवा खवाहें चमन हम हैं।
सताने को सता ले आज ज़ालिम जितना जी चाहे।
मगर इतना कहे देते हैं फ़िदाये वतन हम हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



हमारे ही लहू की बू सबा ले जायेगी कनां ।
मिलेगा जिस से युसुफ़ का पता वह पैरहन हम हैं ।
हमें यह फ़ख़्र हासिल है प्यामे नूर लाये हैं ।
ज़मीं पहले पहल चूमी है जिसने वह किरन हम हैं ।।
सुला लेगी हमें ख़ाके वतन आग़ोश में अपनी ।
न फ़िक्रे गोर हैं हम को न मुहताजे क़फ़न हम हैं ।
बना लेंगे तेरे ज़िन्दां को भी हम ग़ैरते महफ़िल ।
लिये अपनी निगाहों में ज़माले अन्जुमन हम हैं
ज़माना कर रहा है कोशिशें हम को मिटाने की
हिला पाता नहीं जिसको वह बुनियादे कुहन हम हैं

तेरे खंजर से अपने दिल की ताक़त आज़माना है ।
मुहब्बत एक अपनी है तेरा सारा ज़माना है

× × ×

फ़िदायें मुल्क होना हासिले क़िस्मत समझते हैं ।
वतन पर जान देने को ही हम जन्नत समझते हैं ।
हमारे शौक़ की वारफ़्तगी है दीद के क़ाबिल ।
पहुंचती है अगर एज़ा उसे राहत समझते हैं ।
कुछ ऐसे आ गये हैं तंग हम कुंजे असीरी से ।
कि अब इससे तो बेहतर गोशयें तुरबत समझते हैं ।
निगाहे क़हर की मुश्ताक़ हैं दिल की तमन्नायें ।
तेरी चेंने जबीं अपना खते किस्मत समझते हैं ।
हयाते आरज़ो सिदक़े हयाते जादवानी पर ।
फ़ना होना ही अब इक ज़स्ति की सूरत समझते हैं ।
हमें मालूम है अच्छी तरह ताबे जफ़ा तेरी ।
मगर इससे सिवा अपनी हदे उल्फ़त समझते हैं ।

दिखाना है कि लड़ते हैं जहां में बावफा क्योंकर
निकलती है ज़ुबां से ज़ख़्म खा कर मरहबा होकर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



# १५०--'मुनकसिर' राम बली चौधरी

मुनकसिर जी बाराबङ्की नगर में वकालत करते हैं। अपने छात्र जीवन से ही वह राष्ट्रीय और साहित्यिक कार्यक्रमों में भाग लेते रहे हैं। इनकी शायरी राष्ट्रीय भावनाओं से ओत प्रोत है।

## कलाम

उम्र भर की राहे उल्फ़त है न घबरा दिल अभी।
कैसे मिल जायेगी तुझ को ज़ीस्त की मंज़िल अभी।
वह तो कहिये चलते चलते रास्ते में मिल गई।
वर्ना कोसों दूर थी मुझ से मेरी मँज़िल अभी।
सई पैहम से हटेगी यह ग़रीबी देश की।
कितने रोड़े राहे बहबूदी में, हैं हायल अभी।

× × ×

## राष्ट्रीय नज़्म

दरम्याने बर्क़ व बारां आशियाँ बनता गया।
दौरे पुर आशोब मे दौरे अमां बनता गया।
फूल बू देने लगे और बोस्तां बनता गया।
इस तरह हिन्दुस्तान हिन्दुस्तां बनता गया।
सर फ़रोशाने वतन राहे वफ़ा पर चल पड़े।
ऐसे दिवानों का भी इक कारवाँ बनता गया।
खाकसारी में मिटा दी जिसने सारी कायनात।
उसका मरक़द सिजदा गाहे खुसरवां बनता गया।
दौरे आज़ादी ने बदली अहले न.ख्वत की बू।
मुनकसिर बापू का हर इक क़दरदां बनता गया।

× × ×

दामे हवा व हिर्स में महसूर कर दिया।
हर तरह मुर्ग़ रूह को मजबूर कर दिया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



इसरारे वहदत उसपे सब आईना हो गये।
जिसने कि दिल से दागे दूई दूर कर दिया।

## क़तात

परवानों को बाहम न झगड़ते देखा-
एसार से महफ़िल न उजड़ते देखा।
कुछ अहले हवस जब से बने दीवाने।
माहोल ज़माना का बिगड़ते देखा।

× × ×

वह जोशे वतन लुत्फ़ मुलाक़ात कहां।
बापू के हक़ायक़ पे तजुर्बात कहाँ
लस्सानी के परदा में है रूपोश फ़रेब
बातें हैं बहुत दिल की मगर बात कहां।

× × ×

## स्फुटिक

तुख़्म नफ़रत से जिसकी हो तख़लीक़
रंग व बूये वफ़ा वह किया जाने।

× × ×

बजाय जाम सर टकरा रहे हैं।
यह महफिल रिन्द की महफिल नहीं है।

## नवाये कश्मीर

कश्मीर तो भारत का सदा अंग रहेगा।
हर अमर में भारत का हम आहंग रहेगा।
यह ताज है रौनकं औरंग रहेगा।
दुश्मन की निगाहों में जहां तंग रहेगा।
घोखे की यह टट्टी है न है दाम व दाना।
ओ मुर्गे चमन जाद कहीं चूक न जाना।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राजकीय संग्रहालय, ल...
क्रमसंख्या......
प्राप्ति तिथि........
विभाग............
श्रेणी..........
STATE MUSEUM, LUCKNOW.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ्य पुस्तकों की भाषा के रूप में लगभग एक शताब्दी पहले हिन्दी—उर्दू की बहस आरम्भ हुई थी। आज़ाद भारत में ख़ास तौर से बिहार और उत्तर प्रदेश में उर्दू को दूसरी राजभाषा का स्थान दिलाने के प्रयत्नों से यह समस्या अब राजनीतिक समस्या भी बन गई है। राजभाषा की हैसियत से हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि का अधिकार मान कर भी मैं उर्दू के साहित्यिक वैभव को नज़र अंदाज नहीं कर पाता। उर्दू साहित्य की भी वृद्धि में हिन्दुओं का योगदान भी बड़ा महत्वपूर्ण रहा है। अवध के नवाबी-शाही दरबार की सरपरस्ती में उर्दू—अदब ने बड़ी उन्नति की और लखनऊ शहर उर्दू का एक प्रमुख केन्द्र माना जाने लगा। प्रस्तुत पुस्तक में डा० नरेन्द्र बहादुर श्रीवास्तव ने अवध के हिन्दू शायरों का संक्षिप्त परिचय और उनकी शायरी के कुछ नमूने पेश करके उपयोगी और स्तुत्य कार्य किया है। डा० श्रीवास्तव इसके लिये विशेष बधाई के पात्र हैं।

26-11-1984 अमृत लाल नागर
53, नारायण नगर
लखनऊ-226016